संपादकः
आर.पी.गांधी – 093154-46140
संपादन सहयोगः–
बलवन्त सिंह – 094163-24802
गुरमीत अम्बाला–094160-36203
अनुपम राजपुराः 094683-89373
बलबीर चन्द लोंगोवालः 098153-17028
हेम राज स्टेनोः 098769-53561
पत्रिका शुल्कः–
वार्षिकः 200/- रू.
विदेशः वार्षिकः 25 यू.एस.डॉलर
पत्रिका वितरणः
गुरमीत अम्बाला
e-mail:tarksheeleditor@gmail.com
रचनाएं, पत्र व्यवहार व शुल्क भेजने के लिए पताः
बलवन्त सिंह (प्रा.)
म.नं.1062, आदर्श नगर, नज़दीक पूजा सीनियर सैकण्डरी स्कूल, पिपली।
जिला कुरूक्षेत्र-136131 (हरियाणा)
e-mail:tarksheeleditor@gmail.com
तर्कशील सोसायटी की गतिविधियों से जुड़ने के लिए
www.facebook.com/tarksheelindia
पेज को लाईक करें
पत्रिका के प्रमुख लेखों को निम्न ब्लॉग पर भी पढ़ा जा सकता है
http://tarksheelblog.wordpress.com
पत्रिका को पढ़ने के लिए लॉग आन करें
www.tarksheel.org

टाईप सैटिंग और डिजाइनिंग :
कृष्णा ग्रफिक्स
मोबाईल : 9813076376
E-mail: scomputer@rediffmail.com

संकेतिका

विशेष लेख :

सूचना

तर्कशील सोसायटी हरियाणा की आगामी द्विमासिक बैठक पुण्डरी में दिनांक 14-9-2014 दिन रविवार को प्रातः 10 बजे से 2 बजे तक होगी। !

नोटः तिथि, स्थान व समय के बारे में सभी साथी फोन संपर्क करके सुनिश्चित कर लें, क्योंकि परिस्थिति वश इसमें बदलाव हो सकता है।

संपर्क सूत्र :
मानसिंह – 9812118222
कृष्ण – 9812144435

तर्कशील पथ पत्रिका हेतु शुल्क स्टेट बैंक ऑफ इडिया, शाखा मॉडल टाऊन, अम्बाला शहर (हरियाणा) में रैशनलिस्ट सोसायटी हरियाणा के नाम से खाता सं. 3191855465 में जमा करा सकते है। शुल्क जमा कराते समय 1000 रूपये तक 50 रूपये अतिरिक्त जमा करवायें। और अपना पता मोबाईल 9416336203 पर एस.एम.एस करें।

नोटः किसी भी तरह की कानूनी कारवाई सिर्फ जगाधरी, यमुनानगर (हरियाणा) की अदालत में ही हो सकेगी।

सम्पादकीय

नरेन्द्र दाभोलकर को याद करते हुए...

20 अगस्त, 2013 को प्रातःकालीन भ्रमण पर निकले तर्कशील नरेन्द्र दाभोलकर की अनपहचाने लोगों ने गोली मार कर हत्या कर दी थी। एक वर्ष बीतने को है, परन्तु अपराधी अभी भी कानून की पकड़ से बाहर हैं। इस एक वर्ष में अनेक घटनाक्रमों के बीच अंधविश्वास विरोधी कानून महाराष्ट्र सरकार द्वारा पारित कर दिया गया, नरेन्द्र दाभोलकर को भारत सरकार द्वारा पदम श्री सम्मान मृत्योपरान्त प्रदान किया गया। अपराधियों को पकड़ने के लिए जांच को तेज करते हुए सी.बी.आई को भी लगाया गया परन्तु देश के एक प्रतिष्ठित सुपुत्र नरेन्द्र दाभोलकर के हत्यारे आज भी गायब हैं। देश के विभिन्न तर्कशील (Rationalist) संगठनों के विरोध के चलते यह हाई प्रोफाईल केस अभी भी अनसुलझा है।

भारत में अंधविश्वास विरोधी बात करने को कहीं न कहीं धर्म विरोधी के रूप में भी कट्टरवादी संगठन प्रस्तुत करते रहते है। जिस कारण आई.पी.सी. की धारा 295ए का दुरूपयोग करते हुए देश के विभिन्न भागों में तर्कशीलता को प्रचारित करने वालों के विरूद्ध इस्तेमाल किया जाता है। जबकि तर्कशीलता का प्रचार केवल विज्ञान का प्रचार प्रसार है। भारतीय संविधान के आर्टीकल 51-ए (एच) नागरिकों के मौलिक अधिकार के तहत प्रत्येक भारतीय नागरिक का कर्तव्य है कि वह विज्ञान के प्रचार-प्रसार में योगदान दें, परन्तु देश में कट्टटवादियों के प्रभाव के कारण तर्कशीलता के प्रचारक विभिन्न हमलों, मुकदमे बाजी का शिकार हो रहे हैं। इसे प्रसिध्द तर्कशील सनल एडमाराकू के निर्वासन के रूप में भी देखा जा सकता है। मुम्बई में कथित चमत्कार का पर्दाफाश करते हुए विज्ञान की रोशनी में उन्होंने स्पष्टीकरण किया जिसके फलस्वरूप ईसाई संगठनों ने उनके विरूद्ध मोर्चा खोल दिया, जिस कारण वे फिनलैंड में 2012 से निर्वासित जीवन बिताने को विवश हैं, क्योंकि भारत में लौटने पर उन्हें जान का खतरा है। सरकार उनके विरूद्ध आई.पी.सी. की धारा 295ए के तहत कार्यवाही करते हुए जेल में डाल सकती है।

अकेले सनल एकडमारकू ऐसी प्रताड़ना से नहीं गुजर रहे हैं। देश में अन्य तर्कशील कार्यकर्ता भी धर्मान्ध लोगों द्वारा प्रताड़ित किए जाते रहे हैं, जैसे फैडरेशन ऑफ इंडियन रैशनलिस्ट एसोसिएशन के महासचिव यू. कलानाथन के घर पर हमला किया गया, आन्ध्रप्रदेश में तर्कशील क्रान्तिकार को भी निशाना बनाया गया इसी प्रकार जो लोग वैज्ञानिक चेतना के प्रचार-प्रसार को अपने हितों के विरूद्ध देखते हैं। वे तर्कशीलों का विरोध करने के साथ-2 हमले भी करते है। हरियाणा-पंजाब में कार्यरत तर्कशील सोसायटी के विभिन्न कार्यकर्ताओं को निशाना बनाया गया है। आज अनेक कार्यकर्ता मुकदमें बाजी में फंसे हुए है।

विज्ञान के प्रचार-प्रसार और अन्धविश्वास विरोध में सक्रिय विभिन्न तर्कशील कार्यकर्ता अपनी जान जोखिम में डालकर उन परिस्थितियों को भारत में लाने को प्रयासरत है। जहां अंधविश्वास मुक्त एक स्वर्णिम युग का भारत में सूत्रपात हो। देश के कई राज्यों जैसे ओडिसा, झारखण्ड, छत्तिसगढ़, बिहार, महाराष्ट्र आदि में अंधविश्वास विरोधी कानून बने हैं, जिनका अनुशरण अन्य राज्यों को भी करना चाहिए और ये कानून बेहद सशक्त होने चाहिए।

★★

11 जुलाई अन्तराष्ट्रीय जनसंख्या दिवस पर विशेष

क्या जनसंख्या की वृद्धि समस्याओं की जड़ है ?

- हमेराज स्टेनो - 9876953561

प्रत्येक वर्ष की तरह 11 जुलाई को विश्व जनसंख्या दिवस के रूप में मनाया जाता है। यह संयुक्त राष्ट्र के विकास कार्यक्रम को चलाने वाली संस्था द्वारा 1989 से मनाया जाता है, यह दिवस 11 जुलाई, 1987 में विश्व की आबादी के 5 अरब के होने पर मनाया जाने लगा है। इस वर्ष 1 जुलाई, 2014 को संसार की कुल जनसंख्या 7 अरब से भी ज्यादा होने का अनुमान है। हमारे देश में भी यह दिवस मनाया जाएगा।

हम भारत को विचार-चर्चा के रूप में केन्द्रित रखते हुए, विचार करते हैं। इस समय हमारे देश की जनसंख्या सवा अरब के लगभग है। जो देखने में बहुत बड़ी लग सकती है, परन्तु चीन की जनसंख्या भारत से भी ज्यादा है, अब घनत्व के आधार पर देखिए। मोनाको में 43000 हजार, बंगला देश में 22000 और मालदा में 1282 मनुष्य एक किलोमीटर में रहते हैं परन्तु हमारे देश में एक किलोमीटर में 382 मनुष्य रह रहे हैं। इस तरह घनत्व के दृष्टिकोण से भी भारत बड़ी जनसंख्या वाला देश नहीं है। यह कहा जाता है कि 2100 तक हमारे देश की आबादी दो अरब हो जाएगी परन्तु फिर भी एक किलोमीटर में रहने वाले मनुष्यों की गिनती 764 ही रहेगी, यानि फिर भी भारत ज्यादा जनसंख्या वाला देश नहीं होगा।

अब प्रश्न पैदा होता है कि बड़ी जनसंख्या देश में भुखमरी बेरोजगारी, कुपोषण, स्वास्थ्य, मंहगाई, वातावरण या अन्य समस्याओं की जड़ है, आईए इस पर विचार करेंः-

भूखमरी :- हमारे देश में प्रतिदिन 7000 लोग भुख से मर जाते हैं, जबकि देश में 1997-2007 यानि 10 वर्षों में 13 लाख टन अनाज सड़ गया यानि प्रत्येक वर्ष 13000 टन अनाज। जिसे अगर अन्य वस्तुओं के साथ ना भी जोड़ा जाए तो प्रतिदिन मरने वालों को केवल 5 किलो अनाज देकर मौत से बचाया जा सकता था। देश के सर्वोच्च न्यायालय ने सरकार को वितरण करने के लिए कहा, परन्तु उन्होंने साफ इंकार कर दिया। इसलिए अनाज की कमी देश की भुखमरी का कारण नहीं, बल्कि सरकारों की गलत नियत का परिणाम है।

यह सच है कि देश में अनाज की पैदावार, जितनी होनी चाहिए उतनी नहीं है। 1950 के दशक में चीन की भोज्य वस्तुओं की पैदावार भारत से कम थी, परन्तु आज 4 करोड़ 60 लाख टन भोज्य पदार्थ चीन पैदा कर रहा है। जबकि भारत में 2 करोड़ 50 लाख टन पैदावार होती है इस प्रकार भारत पैदावार बढ़ाने की प्रक्रिया मे पिछड़ गया है, जबकि आज 60 कृषि विश्वविद्यालय भारत में हैं। 600 कृषि अनुसंधान केन्द्र हैं। दुनिया के किसी भी देश में कृषि विज्ञान से संबधित ऐसी व्यवस्था नहीं है यहां तक कि चीन और अमेरिका तक में भी नहीं। कृषि क्षेत्र में योगदान के लिए पदम विभूषण से सम्मानित

श्री महादेवया कहते हैं-''जो हम पिछले 60-65 वर्षों में कृषि क्षेत्र में प्राप्त नहीं कर सके, उसे 5-6 वर्षों में प्राप्त किया जा सकता है, अगर सरकार नई कृषि नीति को अपनाएं।'' उन्होंने कहा हैं कि भारत, चीन से भोज्य पदार्थो से दुगना पैदावार करने में समर्थ है। यहां तक कि भारत की जरूरतों के बाद निर्यात भी संभव है।

इस प्रकार देश में बढ़ती आबादी के हिसाब से भोज्य पदार्थो की पैदावार संभव है, इस के लिए जनसंख्या को दोष देना गलत है, नीति निर्धारकों की सोच ही भुखमरी के लिए जिम्मेवार है न कि बढ़ती जनसंख्या।

गरीबी :- क्या बढ़ी आबादी के कारण देश में गरीबी है, हमारी सरकारें प्रचार करती है कि देश में प्रति व्यक्ति आय 74920 रूपए है जबकि 80 करोड़ आबादी 20 रूपए के साथ जीने के लिए विवश है अगर प्रति व्यक्ति आय 74920 है तो 20 रूपए के हिसाब से तो कुल आय बनती है 7200 रूपए। फिर उपरोक्त 74290 रू० का दावा पूर्णत गलत है। जबकि प्रति व्यक्ति आप का मुद्दा सरकारें केवल जनता को गुमराह करने के लिए करती है ताकि आक्रोश को दबाया जा सके।

भारत में इस समय 62 खरब पति हैं जिनका लगभग 14000 करोड़ रूपये स्विस बैंक में होने की खबरें बनी रहती हैं। देश के धन दोलत में पिछले एक दशक में तीन गुणा बढ़ौतरी हुई है। परन्तु गरीबी फिर भी कायम है। उदाहरणतः अगर एक परिवार के पांच सदस्यों की आमदन में बढ़ोतरी होती है तो उनकी पहले वाली आमदनी 20000 रूपए से एक लाख हो जाती है। इस तरह प्रत्येक के पास 20000 रूपए होने चाहिए, परन्तु अगर एक के पास 80000 रूपए है और बाकि चार के पास पांच-2 हजार ही होंगे इसका अर्थ है कि परिवार की आमदन का एक हिस्सा केवल सदस्य ही हड़प गया है, ठीक इसी तरह हमारे देश में हो रहा है, देश की दौलत का बड़ा हिस्सा धन कुबेरों के पास है अगर बाकि आबादी गरीब की गरीब ही बनी हुई है। इस प्रकार बढ़ती गरीबी का कारण नहीं, बल्कि संसाधनों धन दौलत का असमान्य वितरण है।

बेरोजगारी :- क्या बढ़ती आबादी के कारण बेरोजगारी है? मान लो जितनी आबादी आज है, यह स्थिर बनी रहे क्या बेरोजगारी नहीं बढ़ेगी। पूंजीपति अपना मुनाफा बढ़ाने के लिए बड़ी नयी मशीनें ले आता है, जहां पहले 100 मजदूर काम करते थे अब 20 से ही काम होने लग गया। इस तरह 80 मजदूर बेरोजगार हो गए। आगे फिर वह ऐसा ही करता रहेगा व बेरोजगारी बढ़ती रहेगी। पूंजीपतियों को इससे दो लाभ होते हैं पहले मशीनों से उसकी पैदावार बढ़ जाती है, दूसरा मशीनों के आने से मजदूर बेकार हो जाते हैं। मजदूरों की आबादी बढ़ती रहती है और मजदूरों से कम से कम तनख्वाह पर काम लिया जाता रहता है।

मनरेगा जैसा स्कीमों के पीछे सरकार की क्या नीति है? यही कि लोग तड़पते-तड़पते जीवित रहे। इन्हें 265 दिन विहल रखकर पूंजीपतियों के लिए मजदूरों की फौज तैयार की जा सके। (यही सब कृषि में भी घटता है।)

असल में बेरोजगारी पूंजीपतियों की पैदाईश है, बेरोजगारी बढ़ने का कारण है। बढ़ती आबादी नहीं, बल्कि बेरोजगारी का बढ़ना मजदूरों के लिए एक फुटती जहरीली गंदगी जरूर हैं

कुपोषण :- अगर पुरूषों को अलग रख के

बात करें तो भारत में हर दूसरा बच्चा कुपोषण का शिकार है, यही स्थिति महिलाओं की भी है कुपोषण का अर्थ है महिलाओं-बच्चों को संतुलित आहार उपलब्ध न होना, संतुलित भोजन का पैमाना क्या है कि एक औसत शारीरिक मेहनत करने वाले के लिए पुरूष हेतु 500 ग्राम, औसत शारीरिक मेहनत करने वाली महिला के लिए 440 ग्राम, 10-18 वर्ष के लड़के के लिए 420 ग्राम और लड़की को 380 ग्राम प्रति भोज्य पदार्थो (अनाज) की आवश्यकता पड़ती है। अगर 2008-09 में आंकड़ों को देखा जाए तो भारत के प्रत्येक व्यक्ति को 548 ग्राम अनाज की प्रति व्यक्ति दिया जा सकता था। इसलिए अनाज की कमी नहीं है, बल्कि सरकारों की अनाज की वितरण नीति जिम्मेवार है। बढ़ती जनसंख्या कोई कारण नहीं है।

स्वास्थ्य सेवाएं :- स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए अगर बात करें तो कहा जाता है कि बढ़ती आबादी के कारण जरूरी दवाईयां सभी को नहीं दी जा सकती हैं। इसके सत्य को भी देखें-

भारत में अगर सभी नागरिकों को आवश्यक दवाईयां मुफ्त में देनी हों तो कुल खर्चा 30000 करोड़ रूपए होने का अनुमान है। भारत में पिछले वर्ष पूंजीपतियों को 5 लाख करोड़ रूपए की छुट दी है, अगर छुट ना दी जाती तो केवल 15-16 सालों के लिए जरूरी दवाई जरूर उपलब्ध कराई जा सकती थी, इसलिए बढ़ती आबादी को दवाईयां न देने के पीछे बढ़ती आबादी कारण नहीं बल्कि जनता से वसूले टेक्स को पूंजीपतियों के लिए प्रयोग करना है।

मंहगाई :- सब से पहले यह कहा जाता है कि लोग ज्यादा खरीदते हैं जिससे मंहगाई बढ़ रही है, जबकि दूसरी तरफ भारत में 80 करोड़ आबादी 20 रूपए से जीवन यापन करने को विवश है। फिर 20 रूपए से प्रतिदिन आय वाला व्यक्ति क्या ज्यादा खरीदेगी? इस प्रकार तर्क फेल हो जाता है।

दूसरा यह प्रचरित किया जाता है कि बढ़ती आबादी करके चीजों के खरीदार ज्यादा हो रहे हैं, जिससे वस्तुओं की मांग बढ़ रही है। जहां तक मंहगाई बढ़ने का कारण मांग बढ़ जाना है। यह गलत है मांग बढ़ जाने का कारण चीजों की कीमत बढ़ जाती है, फिर चीजें ज्यादा पैसे देने पर कैसे उपलब्ध हो जाती हैं। इस प्रकार मांग बढ़ने से भी मूल्य बढ़ना एक हद तक तो ठीक है, परन्तु यह बुनियादी कारण नहीं है।

तीसरा यह प्रचारित किया जाता है कि मजदूरों को ज्यादा तनख्वाह देने के कारण मंहगाई बढ़ जाती है। यानि किसी चीज की कीमत तनख्वाह से तय होती है। वैसे यह विस्तृत विषय है, परन्तु हम संक्षेप में इस पर चर्चा करेंगे, कुर्सी-मेज का उदाहरण लो इसके लिए कच्चे माल के रूप में लकड़ी चाहिए, जो पहले मजदूर द्वारा ही तैयार होती है, इसके बनाने के लिए औजारों की जरूरत पड़ती है जो पहले मजदूर द्वारा ही तैयार किए जाते हैं। फिर इसके निर्माण के लिए श्रम की जरूरत पड़ती है। इसलिए एक कुर्सी मेज मे कितनी मेहनत लगेगी। उससे ही इसकी कीमत तय होती है। इसमें से मानवीय श्रम को घटा दे फिर क्या बचेगा, केवल कुदरती रूप से तैयार वृक्ष, फिर तनख्वाहों का कम ज्यादा होना कहां गया?

अब अगर हम कुर्सी-मेज की कीमत एक ही मान लो 100 रू0 है इसका अर्थ हैं कि इन्हें बनाने के लिए लगे श्रम का मूल्य है। इस प्रकार किसी भी चीज की कीमत उसमें लगे श्रम से तय होती है। इस प्रकार मंहगाई बढ़ने का कारण तनख्वाहों का बढ़ जाना पूर्णतः झूठ है।

असल में मंहगाई बढ़ने के पीछे क्या कारण है, एक खबर से पता चल जायेगा-आज कल तम्बाकू का सेवन रोकने के लिए किए जा रहे उपक्रमों की चर्चा है। 22 जून, 2014 को अंग्रेजी के अखबार दी हिन्दु में हमारे केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्री डा. हर्षवर्धन का एक ब्यान छपा है उसने कहा कि 2014 के बजट में सिग्रेट और बीड़ी का मूल्य दो-तीन गुण बढ़ाया जाएगा। उन्होंने कहा कि इस तरह तम्बाकू-नशा करके होने वाली मौतों से छुटकारा मिल जायेगा। पर जब वह आगे कहते हैं कि बीड़ीयां-सिग्रेट की कीमत बढ़ाने के साथ तम्बाकू उत्पादों में 38000 करोड़ की आय होगी, तब इससे होने वाली मौतों से बचाने वाले तर्क की हवा निकल जाती है।

अब देखो मजदूरों की मजदूरी ना बढ़ाए जाने के बावजूद बीड़ीयों-सिग्रेटों की कीमत बढ़ जाएगी हम तम्बाकू सेवन के विरूद्ध हैं पर अगर हषवर्धन को जनता की मौत का भी फिक्र होता तब इन वस्तुओं की बनाने वाले कारखानें बंद क्यों नहीं कर देते? परन्तु इनका उद्देश्य मौत को रोकना नहीं, बल्कि पूंजीपतियों की तिजोरियां भरना है।

वातावरण का प्रदूषित होनाः-यह प्रचार किया जाता है कि बढ़ती जनसंख्या के कारण उर्जा की खप्त बढ़ जाती है, जिससे वातावरण प्रदूषित होता है इसलिए बढ़ती आबादी घटनी चाहिए।

'ललकार' (पंजाबी पत्रिका) के मई-जून 2011 अंक में मीनाली चक्रवती का बड़ा अच्छा लेख छपा है। उन्होंने एक टेबल प्रस्तुत करके बतलाया है कि दुनिया की नीचले स्तर की 20 प्रतिशत जनसंख्या (गरीब आबादी) द्वारा उर्जा की कुल खप्त का 4 प्रतिशत खप्त की जाती है। जबकि दुनिया की उपर की आबादी द्वारा 58 प्रतिशत उर्जा की खप्त की जाती है। इसी प्रकार 20 प्रतिशत गरीब आबादी के द्वारा वाहनों के उपयोग का हिस्सा 1 प्रतिशत है। और 20 प्रतिशत उपर की अमीर आबादी का 87 प्रतिशत। परन्तु हम देखते हैं कि जब बढ़ती आबादी को घटाने की बात होती है, इसका अर्थ है कि आबादी सबसे कम उर्जा प्रयोग होती है, वह तो नीचले स्तर पर है। अगर मान लिया जाये कि निचली आबादी है ही नहीं तो कितनी उर्जा बचेगी केवल 4 प्रतिशत अब मान लिए जाए कि सब से अमीर 20 प्रतिशत आबादी नहीं है तो 58 प्रतिशत उर्जा बचती है। यह तथ्य वाहनों द्वारा प्रदूषण पर लागू होती है। इसलिए वातावरण प्रेमियों को समझना चाहिए कि नीचली आबादी जोकि गरीब है वह उर्जा का बहुत कम प्रयोग कर रही है। वातावरण-प्रेमी द्वारा इसको प्रदूषित होने से बचाने के लिए आबादी घटाने का दोषारोपण क्यों?

इस प्रकार विचार चर्चा का यह निष्कर्ष निकलता है कि हमारे देश के अंदर भुखमरी, गरीबी, बेरोजगारी, कुपोषण, मंहगाई, वातावरण यानि सभी समस्याओं का कारण बढ़ती आबादी नहीं है। इस समस्याओं की जड़ इस लूट पर आधारित अन्यायपूर्ण व्यवस्था में है। आज आवश्यकता बढ़ती आबादी के प्रकोप से डरना नहीं बल्कि न्यायपूर्ण समाज सृजन की तरफ बढ़ना है। हमें आबादी घटाने के पूंजीवादी गुमराहकून प्रचार की बजाए समाजवादी पहलूओं पर विचार करना चाहिए।

-पंजाबी से अनुवाद - गुरमीत अम्बाला

किश्त-4

ब्रह्माण्ड यात्रा

डा. अवतार सिंह ढिंढसा

दोस्तो, हम ने शुक्र ग्रह को निकट से देख लिया, थोड़ा पीछे मुड़ कर देखो.... हमारी पृथ्वी तो तारों में ही लुप्त हो गई है तथा चन्दा मामा भी कहीं नज़र नहीं आ रहा,परन्तु थोड़ा ध्यान से देखो ..... वो सामने ....दरांती के आकार का एक अन्य चन्द्रमा का भ्रम डालता हुआ आकार हमें दृष्टिगोचर हो रहा है।

यह बुध ग्रह है.....इस का नामकरण रोमन सभ्यता द्वारा कल्पित किया गया वाणिज्य-व्यापार एवं देवताओं को तीव्र गति से संदेश पहुँचाने वाले मर्करी के नाम के कारण किया गया है। परन्तु यूनानियों ने इसे दो नाम दिये-'अपोलो' जब यह प्रातःकाल के तारे के तौर पर उदय होता.....एवं 'हरमेस' जब यह सायं काल के तारे के रूप में दिखाई देता ।

साथियो, बुध एक पथरीला ग्रह है,जिसके ऊपर पृथ्वी की भांति ही चला फिरा जा सकता है। सूर्य से लगभग 79 लाख दूरी के हिसाब से यह पहला ग्रह है । पृथ्वी से दूरी पूछते हो.......

सूर्य के गिर्द चक्कर लगाता यह पृथ्वी से लगभग 8 करोड़ 23 लाख किलोमीटर नजदीक आ जाता है तथा जब यह सूर्य के दूसरी ओर अर्थात पृथ्वी से सर्वाधिक दूरी पर होता है जब यह दूरी लगभग 22 करोड़ 10 लाख कि.म. हो जाती है । परन्तु ज्योतिष को इन दूरियों से कोई मतलब नहीं. .... उनके लिए तो बुध का प्रभाव सारा साल एक जैसा ही पड़ता रहता है !!!

इसी से ही सिद्ध होता है कि ज्योतिष का विज्ञान से दूर का भी नाता नहीं है।

अब आप में से कुछ साथी जल्दबाजी कर रहे होंगे कि हमें अब बुध ग्रह पर उतारोंगें, कि नहीं। हम उतरेंगे परन्तु बहुत थोडे समय के लिए. ...कारण जानना चाहते हो.....सुनो.... हमारी पृथ्वी सूर्य से लगभग 15 करोड़ कि.मी. दूर है तथा हमारी पृथ्वी पर दिन का तापमान अधिक से अधिक (अरब देशों में) 57 डिग्री सेंटीग्रेड तक हो जाता है। क्योंकि बुध पृथ्वी की अपेक्षा सूर्य के अत्यन्त निकट है तथा यहां वायुमण्डल भी नाममात्र है । परिणाम स्वरूप यहां का तापमान दिन के समय लगभग 427 डिग्री सैंटीग्रेड तक हो जाता है तथा रात्रि का तापमान मनफी (-) 173 डिग्री सैंटीग्रेड तक नीचे पहुँच जाता है क्योंकि सूर्य की गर्मी को संभालने के लिए इस के पास वायुमण्डल ही नहीं है ।तापमान के इन दोनों दर्जों पर कोई भी पशू, पक्षी अथवा वृक्ष इत्यादि जीवित नहीं रह सकता। अतः बुध,जिसकी ओर हम जा रहे है,उस के ऊपर जीवन की संभावनाएं बिल्कुल भी नहीं हैं। सौर परिवार में अन्य ग्रहों पर 'एलियन्ज' की थ्योरी स्वयं ही फेल हो जाती है।

हम अब बुध के निकट पहुँच रहे है। बुध भी हमारे चन्द्रमा की भांति कलाएं लगाता है अर्थात इसके चमकदार हिस्से का आकार पहले ता बढ़ता रहता है तथा फिर घटता रहता है। दोस्तो,ग्रहों की इन कलाओं के कारण ही इस नियम का भण्डाफोड 'गैलीलियो' ने किया था कि सूर्य पृथ्वी के गिर्द घूमता है। जब चमकदार हिस्से का आकार सर्वाधिक पतला अर्थात् दरांती जैसा होता है तथा उस समय यह पृथ्वी के निकट होता है तथा जब चमकदार हिस्से का आकार सर्वाधिक छोटा परन्तु गोलाकार हो उस समय यह पृथ्वी से दूर सूर्य से ओझल होने वाला होता है। जब यह पूर्ण रूप में सूर्य से दूसरी

ओर चला जाता है तो ज्योतिष की भाषा में इसे 'तारा लगना' भी कहते हैं।

बुध के एक अन्य आकाशीय खेल के बारे में बताना न भूल जाएं, वह है बुध पारगमन । इस का जिक्र ज्योतिष की पुस्तकों में भी नही है।समझने के लिए हम ग्रहण का सहारा लेंगे। ग्रहण तब लगता है जब दो एक जैसे आकाश की वस्तुएं एक दूसरे के सामने आ जाएं तथा एक वस्तु दूसरी को लगभग पूरी तरह से ढक ले जैसे सूर्य ग्रहण लगता है ग्रहण के समय चन्द्रमा की छाया पृथ्वी पर पहुँच जाती है। परन्तु जब एक बड़े आकार की वस्तु के सामने से एक छोटे आकार की वस्तु गुजरे तो इसे पारगमन कहा जाता है जैसे सूर्य के गोले के सामने से एक पक्षी उड़ता हुआ निकल जाए । इसी प्रकार जब सूर्य के बड़े गोले के सामने से जब बुध गुजरता है तो इसे बुध-पारगमन कहते हैं। अर्थात बुध ग्रह की छाया पृथ्वी पर नहीं पहुँचती । क्योंकि बुध का आकार सूर्य के आकार का 158 वां भाग है । इसी कारण इस घटनाक्रम का ज्योतिषियों को भी पता नहीं चलता, परन्तु जब इस का जिक्र वैज्ञानिकों द्वारा अखबारों एवं टी.वी. आदि में किया जाता है, बस ज्योतिषयों के द्वारा दुनिया को डराने की कहानी शुरू हो जाती है। पिछला बुध पारगमन मई 2003 एवं नवम्बर 2006 में लगा था तथा अगला पारगमन मई 2049 में एवं नवम्बर 2052 में लगेगा। दिसंबर 03,2133 को बुध सूर्य के पीछे चला जाएगा ।

परन्तु पृथ्वी पर से यह नज़ारा केवल सुबह अथवा सायंकाल को केवल दूरबीन के द्वारा ही देख सकते है,परन्तु अब तो यह भी संभव नहीं क्योंकि पृथ्वी पर वायू प्रदूषण के कारण, सुबह शाम पृथ्वी के नजदीक का क्षितिज देखना मुश्किल हो गया है अर्थात् बुध से वापिस लौटी हुई रोश्नी अब हम तक नहीं पहुँचती। फिर बुध ग्रह का प्रभाव पृथ्वी एवं मनुष्यों के ऊपर कैसे पहुँच सकता है ? समझ से परे की बात है परन्तु हमारा ज्योतिषी वर्ग आज भी बुध ग्रह की स्थिति से भय उत्पन्न करके लोगों का शोषण कर रहा है। इसके अतिरिक्त बुध एवं पृथ्वी के मध्य में तो शुक्र ग्रह धूमता है जो बुध से कई गुना बड़ा है, फिर बुध ग्रह का प्रभाव गति की ओर थोड़ा सा ध्यान देना.. देखो शुक्र से बच कर हमारे तक कैसे पहुँच सकता है ???? चलो छोड़ो, ज्योतिषी तो हमेशा ही अपना उल्लू सीधा करता आया है एवं करता रहेगा...... हम अपनी यात्रा क्यों खराब करें.... आओ जरा बुध को और नजदीक होकर देखे.. परन्तु पृथ्वी से बुध ग्रह को वर्षा होने पर एक-दो दिनों में शाम को अथवा प्रातः काल के समय देखा जा सकता है अथवा बुध ग्रह को पूर्ण सूर्य ग्रहण के समय पृथ्वी से स्पष्ट देखा जा सकता है।

बुध के आकार के बारे में पूछते हो.... इस का आकार पृथ्वी के आकार से तीन गुना छोटा है। अर्थात् सूर्य के आठ ग्रहों में से सब से छोटा ग्रह है। (नोट : प्लूटो कभी नौंवा ग्रह होता था परन्तु अब इसका नया नाम 'बौना ग्रह' रखा गया है। बुध ग्रह प्लूटो से बड़ा है, चर्चा बाद में करेंगे) इस का व्यास केवल 4,879 कि.मी. के लगभग है जबकि पृथ्वी का व्यास लगभग 12,742 कि.मी. है। छोटा होने के कारण इसका गुरूत्वाकर्षण भी पृथ्वी से कम है, उदाहरण के तौर पर यदि एक व्यक्ति का भार पृथ्वी के उपर 45 कि.ग्रा. है तो बुध पर उसका वजन 17 कि.ग्रा. ही होगा। जरा इसकी गति की ओर थोड़ा सा ध्यान देना .... देखो यह चन्द्रमा एवं सूर्य की पृथ्वी के ऊपर से प्रतीत होती गति से कितनी तीव्र गति से गति कर रहा है। साथियो, बुध ग्रह एक सैकिंड में 47.3 कि.मी. तय कर लेता है। जब कि हमारी पृथ्वी एक सैकिंड में 29.8 कि.

मी. दूरी ही तय करती है। जरा सा ज्योतिष का हिसाब किताब जांच ले.... जब तक ज्योतिषी महाराज अपनी पत्री खोलते है, व्यक्ति पर इस का प्रभाव देखते है.. इस पर कम से कम 2 मिनट का समय तो लग ही जाता है और इतने समय में बुध 2 लाख 47 हजार कि.मी. आगे निकल जाता है। बेचारे ज्योतिषी .....

आईये, बुध के दिन रात एवं वर्ष के बारे में कुछ और जानकारी साझा करें – बुध सूर्य के गिर्द अपना एक चक्कर केवल 88 दिनों में पूरा कर लेता है। अर्थात् इस का एक वर्ष हमारी पृथ्वी के तीन महीनों (९० दिनो) से भी छोटा है। अनुमान लगाओ कि हमारी पृथ्वी का एक वर्ष, बुध के लगभग 4 वर्षों के समान है, अर्थात् एक व्यक्ति जिसकी आयु पृथ्वी पर 50 वर्ष है। यदि वह व्यक्ति बुध ग्रह का निवासी होता तो बुध ग्रह के वर्ष के अनुसार उसकी आयु लगभग 200 वर्षो से भी अधिक होनी थी। बस यही एक सत्य है कि समय कभी भी निश्चित नहीं है। बल्कि यह तो अंतरिक्ष में अपनी स्थिति पर निर्भर करता है। अतः बुध ग्रह के एवं शेष सभी ग्रहों के वर्ष महीने, दिन हमारी पृथ्वी से अलग हैं–फिर कैसे हमारी पृथ्वी पर बनी जन्म कुंडलियां शेष ग्रहों के समय के साथ मेल खाएंगी?? यह असंभव है। जन्म कुण्डलियों का चक्कर हमें ऐसी मूर्खतापूर्ण कुण्डलियों/चक्करों में फंसा देता है, जिसके कारण कई नौजवान लड़के, लड़कियों की शादियां होने से रूक जाती है तथा ज्योतिषी कीपत्री के अनुसार किसी अन्य जगह यदि उनकी शादी हो भी जाए... तो तलाक की संभावनाएं बरकरार रहती है तथा कईयों के तो तलाक फिर भी हो जाते है। खैर ! बुध के समय के चक्कर ने हमें फिर से ज्योतिष को झूठा सिद्ध करने केलिए मजबूर कर दिया है।

चलो बुध के और करीब चलें। बुधग्रह का वर्ष यदि हमारी पृथ्वी के वर्ष से छोटा है परन्तु दिन. .. बुध ग्रह का दिन हमारी पृथ्वी के 58 दिन 15 घंटे 30 मिनट एवं 34 सैकिण्ड के समान है। अर्थात् पृथ्वी पर हम 58 बार नींद का आनन्द उठाएंगे परन्तु बुध ग्रह का एक दिन लगभग 1407 घण्टों का होता है!!! अर्थात् बुध के दो वर्षों में केवल तीन दिन होते हैं !!!

साथियो, चलो उतरते है कुछ पलों के लिए बुध ग्रह के ऊपर... सूर्य की तपिश के कारण बुध एक बंजर एवं निर्जन पथरीली सतह वाला गोल ग्रह है।

ये देखों किस प्रकार इस की सतह इस के ऊपर अन्तरिक्षीय पत्थरों (मीटियोर) के गिरने से अत्यन्त गहरे गड्ढे बने हुए हैं? वर्षा के बारे में पूछते हो... नहीं, नहीं। बुध ग्रह पर वायुमण्डल केवल नाममात्र है। केवल कुछेक गैसें जैसे आर्गान अथवा नियोन अत्यन्त अल्प मात्रा में हैं.... जल वाष्प भी नाम मात्र हैं। फिर बादल कैसे बनेंगे तथा कैसे होगी बरसात ?? अतः बुध ग्रह पर कभी भी वर्षा नहीं होती। हां, सूर्य की शक्तिशाली आयनी किरणें अथवा कणों की आंधियों के कारण कभी बिजली अवश्य कड़कती है। परन्तु सन् 1974-75 दौरान अमेरिका के अंतरिक्षीय राकेट 'मैरिनर' ने इसकी 45 प्रतिशत सतह के बारे में जानकारी दी थी तथा पृथ्वी से राडार प्रणाली ने 1991 में बुध के उत्तरी ध्रुव के निकट गहरे गड्ढों में 'बर्फ' के अस्तित्व के बारे में जानकारी उपलब्ध करवाई थी। क्योंकि इन गहरे गड्ढो में सूर्य की प्रकाश सीधा नहीं पहुंच सकता तथा तापमान ऋणात्मक (–) 212 दर्जे सैंटीग्रेड रहता है तथा यह बर्फ कभी भीनहीं पिघलती। इस सच्चाई का पक्का ऐलान 'नासा' द्वारा नम्बर 29, 2012 को कर दिया गया था।

बुध की धुरी, सूर्य की धुरी के मुकाबले

केवल 0.027 दर्जे उपर झुकी हुई है, इसलिए इस के ध्रुवों पर कभी भी सूर्य का प्रकाश नहीं पहुंचता। परन्तु पृथ्वी की धुरी सूर्य की धुरी के मुकाबले 23.5 दर्जे झुकी हुई है, इस कारण पृथ्वी के ध्रुवों पर 6 महीने दिन एवं 6 महीने रात रहती है। बुध ग्रह के पास चुम्बकीय शक्ति भी है परन्तु यह पृथ्वी की चुम्बकीय शक्ति का 1.1 ही है। यह चुम्बकीय क्षेत्र सूर्य के आने वाली प्लाज़्मा की सौर आंधियों को नियन्त्रण में रखता है।

साथियों हम तो अपने कल्पना रूपी अंतरिक्ष यान पर सवार हैं तथा लगभग दो महीने (पत्रिका के प्रकाशित होने का समय) के पश्चात् ही दूसरे ग्रह पर पहुंच जाते हैं। परन्तु वास्तव में अन्तरिक्षीययान जिसकी गति यदि 12 कि.मी. प्रति सैकिण्ड अर्थात् 43200 कि.मी. प्रति घण्टा हो , उसे बुध ग्रह तक पहुंचने में 80 दिन लग जाएंगे। आप अवश्य जानना चाहेंगे कि अन्तरिक्षीय यान की गति हमने 12 कि. मी. प्रति सैकिण्ड की क्यों ली... नोट करो कि पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण से बाहर निकलने के लिए यह गति इतनी ही होनी चाहिए।

साथियों, पृथ्वी की तरह से बुध ग्रह पर भी पहाड़ियां हैं- परन्तु ये पहाड़ियां, अन्तरिक्षिय पत्थरों (मिटिओर) के लगातार बुध ग्रह पर गिरने के कारण, ये दिन-ब-दिन टूट-फूट अथवा ढल रही हैं। सब से ऊंची पहाड़ीनुमा बनावट लगभग 1.6 कि.मी. ऊंची है। इस पर समतल मैदान भी हैं - कैलोरिस बेसिन 1300 कि.मी. क्षेत्रफल में फैला हुआ है। परन्तु बुध ग्रह है एक उजाड़, बंजर एवं गर्मी से तपता हुआ ग्रह जो कि 450 करोड़ वर्षो से सूर्य के गिर्द चक्कर लगा रहा है तथा लगाता रहेगा। इस का पृथ्वी के उपर वाले जीवन के साथ कोई सरोकार नहीं है। मन से भय निकालो तथा अन्तरिक्ष का आनन्द उठाते रहो। (यात्रा जारी है, आगे हम पहुंचेगें सौरमण्डल के केन्द्र में ....)

क्रमशः हिन्दी अनुवाद - बलवन्त सिंह लैक्चरार

★★

व्यवस्था की आड़ में

दिये हो जख्म जो व्यवस्था की आड़ में
भरने उन्हें हमने दिया ही नहीं।
हमने अनाज जो पैदा किये, खाने तुमने दिया ही नहीं।
हमने दूध भी जो पैदा किये, पीने तुमने दिया ही नहीं।
दिये हो जख्म जो व्यवस्था की आड़ में,
भरने उन्हें हमने दिया ही नहीं।

हमने बड़े-2 महल हैं बनाये,
संगमरमर भी उनमें हमने जड़ायें
खदानों में अयस्कों की मिट्टी निकाली, तपती भठ्ियों में गयी वो ढ़ाली
मशीनरी पार्ट, पुर्जे भी बनाये, हमने ही कार, बस और जहाज बनाये
पर सफर तुमने करने दिया ही नहीं।
दिये हो जख्म जो व्यवस्था की आड़ में,
भरने उन्हें हमने दिया ही नहीं।

तुमने ही जाति धर्म बनाये, तुमने ही मन्दिर मस्जिद रचाये।
भाई को भाई से तुमने लड़ाकर, इन्सानियत को ही खून कराये।
तुमने एकता अखण्डता को तोड़ा, भेदभाव को मिटाने दिया ही नहीं
दिये हो जख्म जो व्यवस्था की आड़ में,
भरने उन्हें हमने दिया ही नहीं।
बैकों के कर्जजाल में फंसाकर, तुमने फर्जी मुठभेड़ दिखाकर
किसानों, मजदूरों को रोज है नारा, कोर्ट, कचहरी, थाने बनाकर
निर्दोषों को तुमने जेलों में डाला, झूठे मुकदमों के चक्रव्यूह से
निकलने हमें कभी दिया ही नहीं
दिये हो जख्म को व्यवस्था की आड़ में,
भरने उन्हें हमने दिया ही नहीं।

'धर्मेन्द्र कुमार'
खगड़िया (बिहार)

जादूटोणा के नाम पर हो सकती थी हत्या

हमारे देश में जादूटोणा के नाम पर हमेशा कही न कही गरीब तथा दलित महिलाओं पर अत्याचार होते है। अज्ञान, आलस्य और अंधश्रद्धा यह तीन इंसान के शत्रु है। ग्रामीण महिलाओं में शिक्षा का अभाव होने के कारण वे ओझा, तथाकथित गुरू, महाराज, बापू-बाबे के चक्कर में आसानी से आ जाती हैं। आर्थिक स्थिति कमजोर होना, पति द्वारा शराब पीकर परेशान करना, बेटे को नौकरी न मिलना, बेटी की समय पर शादी न होना आदि अनेक कारणों से महिलाओं के व्यक्तित्व में अंतर आ जाता है। मानसिक रोग या ढोंग/पाखण्ड के कारण उनके शरीर में भूत (ओपरी कसर) या देवी-देवता आने लगते हैं।

गांव में किसी का अचानक मृत्यु या गंभीर बिमारी से मृत्यु होना। तब गांव के लोग शरीर में आने वाली महिला कों सभी के सामने पूछते है। तब वह महिला किसी निरपराध व्यक्ति का नाम लेकर कहती है, कि वह व्यक्ति जादूटोणा करता है। उसी की वजह से यह घटना घटी है। अंधविश्वास में जकड़े लोग उस व्यक्ति को परेशान करते हैं।

ऐसी ही एक घटना महाराष्ट्र के गोंदिया जिले के भुरसीटोला गांव में हुई। देवनाथ विठोबा नंदागवली नाम का व्यक्ति उस गांव में 12-14 साल से निवास करता है। उसका गांव के कुछ लोगों से झगड़ा होने के कारण उस पर जादूटोणा करने का झूठा इल्जाम लगाया गया। एक महिला के शरीर में भूत आने के बाद उसने ऐसा कहा कि, ''देवनाथ नंदागवली के घर पर तीन सोने से भरे हंडे (बर्तन) है, और एक मृत व्यक्ति की खोपड़ी है। उसी ने जादू से मेरे पीछे सांप तथा बिच्छूंओं को छोडा हे। आज तक गांव में जितने भी लोग मरे है उसके पीछे इसी का हाथ है।'' इस भविष्यवाणी को सुनकर सभी ग्रामवासी देवनाथ के जानी दुश्मन बन गए।

देवनाथ नंदागवली को समाज में दहशत फैलाने वाला ओझा समझकर उसके खिलाफ पुलिस थाना नवेगावबांध में एफआईआर दर्ज करा दी गई। देवनाथ ने भी अपनी जान को खतरा है यह समझ कर उसी थाने में रिपोर्ट लिखवा दी। इस घटना के बारे में जानकारी अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति गोंदिया को दी गई। देवनाथ और संबंधित लोगों को पुलिस थाने में बुलाकर समझाया गया लेकिन उसका कोई फायदा नहीं हुआ। बुरशीटोला यह गांव सोमलपुर ग्राम पंचायत में आता है। वहां के ग्राम पंचायत और विवाद मुक्त समिति ने इस विवाद का निपटारा अंनिस की सहायता से करने का फैसला किया।

विवाद मुक्त समिति और ग्राम पंचायत द्वारा अंधश्रद्धा समिति के लोगों को सभा में आमंत्रित किया गया। नंदागवली और सभी ग्रामवासियों को भी बुलाया गया। अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति के एस.एस. चव्हाण, भीमराव मोटघरे, भाऊदास में श्राम ने ''दुनियां में भूतों का तथा जादूटोणे का अस्तित्व नहीं है। जादू टोणा के द्वारा अंनिस के किसी भी सदस्य को मारो और 11 लाख का ईनाम

जीतो!'' ऐसा आव्हान सभा में सभी के सामने किया। वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास करने वाले कुछ प्रयोग भी प्रस्तुत किएं। अंधविश्वास के दुष्परिणामों से गांव के लोगों को अवगत कराया गया। अंत में देवनाथ नंदागवली और उन तीनों महिलाओं के बीच में एक समझौता किया गया। उसमें यह बताया गया कि, आज के बाद गांव का कोई भी व्यक्ति देवनाथ को जादूटोणा करने वाला तांत्रिक नहीं समझेगा। यदि उसे किसी भी प्रकार से परेशान किया गया तो संबंधित लोगों पर उचित कारवाई कर जाएगी। तब से उस गांव में शान्ति है।

सभा में पुलिस थाना नवेगावबांध के हेड कॉन्स्टेबल मारवाड़े, पु.कॉ.भेलावे, विवाद मुक्त समिति के अध्यख नंदू कापगते, पुलिस पटेल तुलशीराम बोरकर, सरपंच अशोक डोंगरवार, पत्रकार अमर ठवरे तथा विनायक रोकड़े, तोताराम ठाकरे, जीवन बोरकर, रेवनाथ हातझाडे, राजेंद्र में श्राम आदि समाज प्रतिनिधि और ग्रामवासी उपस्थित थे।

एस.एस. चव्हाण, मो. : 9422131605

★★

विचार

''अक्लमंद से बहस नहीं, बेवकूफ पर प्रभाव नहीं, बड़ों के आगे शान नहीं, बच्चों पर घौंस नहीं,

बीवी से लड़ाई नही, जो आदमी ऐसा है, यकीनन वह बादशाह से भी ज्यादा सुखी और अच्छा है।''

–बादशाह नसीरूद्दीन

एंग्जाइटी डिस्ऑर्डर से घबराएं नहीं

डर और चिंता का भाव हर किसी के अंदर होता है, लेकिन जब यह दोनों भावनाएं सामान्य से अधिक हो जाएं, तो इसे एंग्जाइटी डिस्ऑर्डर कहा जाता है। छोटी-छोटी बातों पर चिंता करना, डरना इस बीमारी के लक्षण होते हैं। खासतौर पर शहरी लोगों में इस तरह की समस्या का ज्यादा होती है। इससे हर समय चिंता, बेचैनी बनी रहती है, जो वास्तविक या काल्पनिक घटनाओं पर आधारित हो सकती है। इससे रोजमर्रा के जीवन पर प्रभाव पड़ता है। कई बार बिना कारण भी अधिक तनाव और उत्तेजना बढ़ जाती है। एम्स की न्यूरो-साइकेट्रिस्ट डॉ. मंजरी त्रिपाठी के अनुसार एंग्जाइटी डिस्ऑर्डर बड़ी बीमारी नहीं है। नियमित जीवन शैली में बदलाव करने से और सामाजिक दायरा बढ़ाने से यह परेशानी काफी हद तक दूर हो जाती है। साइकोथेरेपी से भी इस रोग का इलाज आसानी से हो जाता है। ★★

हिस्टीरिया-मष्तिष्क से संबंधित रोग

हिस्टीरिया एक प्रकार का मस्तिष्क संबंधी रोग है। प्रायः युवावस्था में अधिक सुख की कामना अथवा अधिक दुख पर नियंत्रण न कर पाने की स्थिति में व्यक्ति बेहोश हो जाता है। लक्षण :-

- ऐसे रोगी बेहोश होने पर प्रायः शांत नहीं रहता, वह रोने या हंसने लगता है परन्तु आंखे बंद रहती है और मिचमिचाती रहती है।
- श्वास व नाड़ी की गति तीव्र हो जाती है।
- दांत व मुट्ठियां भिच जाती हैं। शरीर ऐंठने लगता है।

कैसे करें उपचार -

- रोगी को सुरक्षित व हवादार स्थान पर लिटाइए।
- मुंह पर पानी की छींटे देकर नांक बंद करके होश में लाने का प्रयत्न कीजिए।
- होश में आने पर गर्म चाय व दूध पीने को दीजिए।
- अधिक बातें मत कीजिए ।

★★

पुनर्जन्म एवं अद्‌भुत प्रतिभा

प्रो.अब्राहम टी.कोवूर

''यद्यपि मृत्यु के पश्चात जीवन के अस्तित्व को नकारने वाले श्री कोवूर के तर्क अत्यन्त वजनदार होने के कारण बेशक दूसरों को प्रभावित करने वाले हैं, फिर भी मैं श्री कोवूर से पूछना चाहता हूँ कि जाने-माने ऊँचे स्तर की ईमानदारी एवं विद्वता वाले अण्वेषकों जैसे डा. ईयान स्टीवन्सन, प्रो. एच. एन. बैनर्जी, प्रो.के.एन. जयातिल्के, श्री.वी. एफ. गुणारत्ने एवं बहुत से अन्यों की ओर से वैज्ञानिक ढंगों से खोज करके प्रमाणित किये गये पुनर्जन्म के केसों के बारे में वे क्या कहना चाहते हैं?'' (ए. विक्रम सिंह, टाईम्ज़ आफ सिलोन 29-5'1967)

श्री कोवूर अद्‌भूत प्रतिभा वाले बच्चों एवं एक ही दत्पतियों के घर में विभिन्न योग्यताओं वाले बच्चों के जन्म की क्या व्याख्या करते हैं?

जन्म के साथ संबन्धित विभिन्नताओं की व्याख्या कर्म अथवा पुनर्जन्म में से ढूंढने की बजाए बेहतर यही है कि इस से संबंधित जानकारी प्राप्त करने के लिए उत्पत्ति विज्ञान एवं मेंडल के विरासत से संबन्धित नियमों का ज्ञान प्राप्त कियाजाए।

चुनी हुई संतान उत्पत्ति विधि के द्वारा मनुष्य उत्पत्ति विज्ञान के नाम ही सहायता के द्वारा पालतू जानवरों की विचित्र गुणों वाली नस्लें तैयार करने में सफल हुआ है। अधिक मात्रा में अण्डे देने वाली 'हाई लाईन' मुर्गियां एवं अधिक मात्रा में दूध देने वाली 'जर्सी' एवं 'केप' गाएं चुनी हुई सन्तान उत्पत्ति विधि की उपज है। अधिक अण्डे देने वाली मुर्गियां, अधिक दूध देने वाली गांए एवं अधिक उपज देने वाली फसलों के अद्‌भुत गुण उनके जीन एवं डी.एन.ए. अणू नियंत्रित करते हैं न कि उनकी किस्मत एवं पिछले जन्म ।

बहुत जन्दी ऐसा समय आने वाला है जब मानव उत्पत्ति विज्ञान के विकसित ज्ञान का प्रयोग करके अपनी नस्ल-मानव जाति के जन्म के साथ संबन्धित गुणों में सुधार कर सका करेगा। भविष्य वाला मनुष्य धार्मिक बन्दिशों का त्याग करके अपनी नस्ल सुधारने के लिए प्राप्त किए ज्ञान का प्रयोग करने की आवश्यकता महसूस करेगा। मैं ऐसे भविष्य की कल्पना कर रहा हूँ जब सरकार सन्तान उत्पन्न करने के क्षेत्र में व्यक्ति की स्वतन्त्रता पर अंकुश लगाएगी। परन्तु इसका मतलब यह नहीं कि सरकारी कानूनों के द्वारा लोगों को उचित ढंगों के द्वारा अपनी काम-पिपासा तृप्त करने पर भी रोक लगा दी जाएगी।

मानव के बच्चे उत्पन्न करना सरकार की सब से महत्वपूर्ण राष्ट्रीकृत जिम्मेदारी हुआ करेगी। इस प्रोजेक्ट का कंट्रोल एवं नेतृत्व अनुभवी उत्पत्ति वैज्ञानिकों एवं दूर-अंदेशी राजनीतिज्ञों को सौंपी जाएगी।

इस उद्देश्य के लिए शारीरिक एवं मानसिक तौर पर विशेष गुणों वाली महिलाओं को चुना जाया करेगा। उन्हें कृत्रिम ढंग से गर्भ धारण करवाने के लिए खासतौर पर चुने गए विशेष गुणों वाले पुरुषों का वीर्य एकत्र करने के लिए सरकारी खर्च पर ब्लड-बैंकों की तरह से वीर्य बैंक स्थापित किए जाएंगे। इसलिए यदि कोई व्यक्ति अपनी नस्ल सुधारने के लिए चुनी हुई सन्तानोत्पत्ति विधि अपनाना चाहता हो तो अब की अपेक्षा अधिक से अधिक अद्‌भुत प्रतिभा वाले बच्चे उत्पन्न करने की योजना बना सकना संभव होगा। आजकल विचित्र प्रतिभा वाले बच्चे बहुत कम एवं कभी-कभी जन्म लेते हैं

क्योंकि वे केवल 'संयोग' की पैदावार होते हैं।

बहुत जल्दी वह समय आने वाला है जब विज्ञान ऐसे ढंग खोज लेगा जिनके द्वारा रसायनों की सहायता से बच्चे के गुण ही नहीं सैक्स भी निर्धारित किया जा सकेगा। यह कहना कि विचित्र प्रतिभा वाले बच्चे पुनर्जन्म के समय पिछले जन्मों में प्राप्त किया गया ज्ञान अपने साथ लेकर जन्म लेते हैं, यह विश्वास उतना ही बेहूदा एवं बेतुका है जितना श्रीलंका में पुनर्जन्म की खोज करने वाले उन खोजियों का विश्वास कि पिछले जन्म के समय वाले शरीर पर दाग एवं अन्य शारीरिक चिन्ह पुनर्जन्म के समय उसी प्रकार शरीर पर कायम रहते हैं। यदि यह बात सत्य हो तो श्रीलंका की नेत्रदान करवाले वाली संस्था की इस के साथ मृत्यु हो जाएगी। अगले जन्म में अन्धे जन्म लेने का भय लोगों को नेत्रदान करने से रोकेगा।

इस देश में पुनर्जन्म के समर्थक 'बालन गोडा' के कथित पुनर्जन्म के केस का प्रचार कर के यह प्रमाणित करने का प्रयत्न कर रहे हैं कि घावों के निशान एवं प्राप्त की गई अन्य शारीरिक विशेषताएं पुनर्जन्म के समय शरीर के साथ पुनः प्रकट हो जाती है।

पुनर्जन्म का एक अन्य समर्थक जोकि विश्वविद्यालय का शिक्षक एवं मेरा मित्र है कहता है, ''मानव जन्म इस दुनिया में तथा विशाल ब्रह्माण्ड में अन्य ग्रहों पर हुई मनुष्यों, जानवरों एवं अन्य जीवों की मृत्यु के लिए उत्तरदायी होता है..... इससे संबन्धित प्रायोगिक प्रमाण प्राप्त करने के लिए हिप्नोटिक रीग्रेशन की विधि के द्वारा व्यक्ति को गहरी निद्रा में ले जाकर उसे जन्म से पूर्व वाली अवस्था में ले जाया जा सकता है। अतीत में ले जाकर उसे पूर्व जन्मों की बातें बताने के लिए कहा जा सकता है तथा अनुभव पुनः जीने के लिए कहा जा सकता है।

वास्तव में प्रथम बार यह दावा किया गया है कि पुनर्जन्म के समय पूर्व जन्म वाला शरीर एवं मन साबुत रहते हैं। यदि यह दावा सत्य है तो विश्वविद्यालयों के उस शिक्षक के इस सिद्धान्त का कोई आधार नहीं रह जाता कि एक योनि में से मरकर जीव अन्य जीवों की योनि में जन्म ले सकता है। यदि पुनर्जन्म के समय जीवों के प्राकृतिक एवं प्राप्त गुण कायम रहते है तो लड़की बनकर जन्म लेने वाले लड़के के पुरूष अंग कैसे परिवर्तित हो गए? लड़का लड़की कैसे बन गया? यदि पुनर्जन्म के समर्थकों की थ्योरियां सत्य है फिर तो मनुष्य की योनि में जन्म लेने वाले शेर एवं चीते को अपनी धारियों एवं चिन्हों को साथ लेकर जन्म लेना चाहिए। गणित में विचित्र प्रतिभा वाले व्यक्ति यदि गधे की योनि में पड़ जाए तो उनकी गणित प्रतिभा कायम रहनी चाहिए । हम उस दिन का बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं जब विश्वविद्यालय में गणित विभाग के अध्यक्षों की कुर्सियों पर विचित्र प्रतिभा समेत उत्पन्न हुए गधे बैठे हुए मिला करेंगे।

मस्तिष्क का वजन तीन पौंड है। यह दस खरब तन्तु कोशिकाओं का बना हुआ है जिन्हें न्यूटोन कहा जाता है। अपने सहायक पदार्थों के समेत यह शरीर का एक ऐसा अंग है जिसमें हर समय फिजिको-कैमिकल क्रिया चलती रहती है। अधिकतर भौतिक एवं रासायनिक क्रियाएं इसके टिशुओं में होती है। वास्तव में दिमाग एक ऐसी भौतिक रासायनिक प्रयोगशाला है जिस में जीवन भर रात दिन कार्य होता रहता है। दिमाग का कार्य भी बिजली की शक्ति से चलता है। बालिंग दिमाग को कार्य करने के लिए 20 वॉट विद्युत शक्ति की आवश्यकता होती है। वास्तव में इस का प्रत्येक न्यूटोन एक छोटा डायनमों (एक बिजली उत्पन्न करने वाला यन्त्र) है। सभी मानसिक क्रियाएं जैसे कि विचार, इच्छा, ज्ञान, संकल्प, स्मृति, तर्क, भावनाएं

इत्यादि सभी दिमाग में होने वाली भौतिक रासायनिक क्रियाओं के द्वारा उत्पन्न होती रहती हैं। यह क्रियाएं दिमाग के टिशुओं में होती रहती हैं। दिमाग के बिना मन रह नहीं सकता। जब कभी दिमाग का कोई हिस्सा नष्ट हो जाता है तो दिमागी क्रियाएं प्रभावित हो जाती है। दिमाग की मृत्यु से चेतनता एवं व्यक्तित्व समाप्त हो जाते हैं।

जिस प्रकार ईंधन के बगैर अग्नि नहीं हो सकती, इसी प्रकार सांस लेने वाले शरीर के बगैर जीवन एवं मन नहीं हो सकते। मृत्यु के कारण दिमाग के गलने-सड़ने के पश्चात् मन जीवित नहीं रह सकता।

यह कहना है कि व्यक्ति की मृत्यु के पश्चात् मानसिक शक्तियां साबुत एवं सम्पूर्ण रहती है। यह बात उतनी ही बेहूदा है जिस प्रकार यह कहना कि शरीर-रहित दिमाग-रहित आत्मा भौतिक रूप में प्रकट होकर (जो हमेशा सफेद वस्त्रों में होती है) प्रेतात्मा बन कर अपनी इच्छानुसार कार्य कर सकती है।

पूर्व जन्मों की बातें, याद करने वाले बच्चों की कहानियों को रविवार के अखबारों में प्रकाशित होने वाली भूत-प्रेतों की कहानियों की भांति मनघड़त समझ कर रद्द कर देना चाहिए ।

हिन्दी अनुवाद - बलवन्त सिंह लैक्चरार

★★

विचार

''यदि ईश्वर सर्वशक्तिमान है तो वह सब कुछ कर सकता है। वह एक पत्थर को इतना भारी बना सकता है, जो स्वयं उससे उठ न सके। इसका तात्पर्य यह है कि कोई ऐसी चीज है जो ईश्वर नहीं कर सकता; वह पत्थर नहीं उठा सकता। इसलिए सर्वशक्तिमान परमात्मा का कोई अस्तित्व नहीं है।''

टाईट्स लुक्रीटियस कारूस (94-49 ई.पू.)

थोड़ा आराम, गंभीर रोगों से बचाव

अच्छी सेहत, ऊर्जा और स्फूर्ति के लिए अच्छी नींद बहुत जरूरी है। नींद यानी शरीर और मन दोनों को आराम, ताकि थकान दूर हो और हम नई ऊर्जा के साथ फिर से काम शुरू कर सकें।

नींद के बहुत फायदे हैं इसलिए माना जाता है कि दोपहर में एक झपकी आपको फिर से तरोंताजा कर देती है। सिर्फ ताजगी की नहीं, इसके कई बड़े लाभ हैं। रोजाना दोपहर में झपकी लेने वाले लोगों में ब्लड प्रेशर व दिल और धमनियों से जुड़े रोगों का खतरा काफी कम होता है। यह असर शरीर और मन दोनों के लिए सुकून भरा होता है। यू तो घर में झपकी लेना आसान है, लेकिन दफ्तर में भी इसमें कोई ज्यादा मुश्किल नहीं होती।

- क्या चाहिए :- इसके लिए आपको चाहिए थोड़ी सी जगह और योग के दौरान इस्तेमाल होनी वाली चटाई। आप अपनी डेस्क के समीप लेट सकते हैं या फिर सुविधानुसार किसी भी खाली जगह पर। वैसे लंबी बैंच या सोफे पर भी लेट सकते है।
- हर हिस्से पर ध्यान :- लेटे हुए सोना नहीं है, बल्कि एक-एक करके हर उस अंग को रिलैक्स करना है, जो पोंश्चर से संबंधित है और जहां थकान व टूटन का अहसास अधिक होता है, इसके लिए आप हर हिस्से पर 4-5 मिनट ध्यान दें।
- अब गर्दन को ढीला छोड़ दें। ऐसे, जैसे मानो उस पर आपका नियंत्रण ही न हो। और वह रीढ़ की हड्डी तथा सिर से जुड़ी न हो।
- अब पैरों पर ध्यान दें आपके दोनों पैर एक-दूसरे से एक-सवा फुट की दूरी पर होने चाहिए। ऐसा महसूस करें कि जांघ और पिंडलियों की मांसपेशिया ढीली पड़ गई है।
- इस दौरान मन ही मन गिनती करते रहें। - यह सब करते हुए सांस नहीं रोकनी चाहिए। - सारे चरण पूरे हो जाने के बाद धीरे-धीरे उठें, कुछ गहरी सांसे लें और ताजादम होकर फिर से काम में जुट जाएं।

★★

विश्व में नास्तिकता की स्थिति और संभावनाएँ

डॉ० रणजीत, मो. 9019303518

विभिन्न देशों में धर्महीनों या नास्तिकों की जनसंख्या कितनी है इसके अनुमान विभिन्न सर्वेक्षणों द्वारा जुटाये गये हैं- पर यह कार्य बड़ा जटिल है जैसा कि अमेरिका के पिटजर कॉलेज में समाज विज्ञान के प्रोफेसर और 'सोसायटी विदाउट गोड' के लेखक फिल जुकरमेन ने 'कैम्ब्रिज कम्पेनियन टू एथिज्म में संकलित अपने लेख में बताया है। अनेक देशों के अनेक नागरिक अधार्मिक होते हुए भी अपने आपको 'अधार्मिक' कहने में संकोच करते हैं क्योंकि यह कहना ठीक नहीं लगता। नास्तिक शब्द भी कई संस्कृतियों में एक गंदा शब्द माना जाता है और ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास नहीं करने वाले लोग भी 'नास्तिक कहलाना पसन्द नहीं करते। इसका एक दिलचस्प उदाहरण यह है कि ग्रीलेर्ड ने 2003 के अपने एक सर्वेक्षण में पाया कि 41 प्रतिशत नार्वेवार्सियों 48 प्रतिशत फ्रांसीसियों और 54 प्रतिशत चेक लोगों ने बताया कि ईश्वर में उनका विश्वास नहीं है पर उनमें से केवल 10 प्रतिशत नार्वेजिनों 19 प्रतिशत फ्रांसीसियों ।और 20 प्रतिशत चेकों ने अपने आप को नास्तिक कहा जाना स्वीकार किया। फिर 'धर्म' और 'ईश्वर' शब्द विभिन्न भाषाओं में एकदम जैसे अर्थ भी नहीं रखते। इसलिए विभिन्न देशों में नास्तिकों या धर्मरहित मानववादियों कें प्रतिशत विभिन्न सर्वेक्षणाों में काफी भिन्न-भिन्न है।

अधार्मिकता की सबसे व्यापक परिभाषा गेलपवर्ड सर्वेक्षण ने की है। 14 सितम्बर, 1911 को प्रकाशित उसकी रपट में अधार्मिकों का प्रतिशत मुक्तविश्रवकोश 'विकिपीडिया' द्वारा प्रस्तुत आंकड़ों से काफी भिन्न और अधिक है। क्योंकि गेलप के सर्वेक्षण में प्रश्न यह पूछा गया कि क्या धर्म आपके जीवन का महत्वपूर्ण अंग है? और इसका उत्तर 'नहीं' में देने वालों को 'अधार्मिक' की श्रेणी में रख दिया गया। जबकि विकिपीडिया द्वारा प्रस्तुत आंकड़ों में अधार्मिकों की परिभाषा में स्पष्ट रूप से नास्तिकों, धर्मनिरपेक्ष मानववादियों, धर्म-विरोधियों, ईश्वर-विरोधियों, पंडे-पुरोहित-पादरी-विरोधियों, अज्ञेयतावादियों और धार्मिक संदेहवादियों को सम्मिलित किया गया था।

इस तरह मुक्त विश्वकोश विकिपीडिया के अनुसार इन दिनों विश्व की लगभग छह अरब तीस करोड आबादी का लगभग 16 प्रतिशत यानी कुल मिलाकर 1 अरब 1 करोड लोग अधार्मिक है। फिल जुकरमेन के अनुसार विश्व में 2007 में नास्तिकों की कुल संख्या 50 करोड़ से 75 करोड़ के बीच थी। यह संख्या संसार में सिखों की कुल आबादी से 35 गुनी यहूदियों की कुल आबादी से 41 गुनी और बौद्धों की कुल आबादी से दुगुनी थी। कुल मिलाकर नास्तिकों का समूह ईसाइयों 2 अरब) मुसलमानों (1.2) अरब और हिन्दुओं (90 करोड़) के बाद विश्व में अपनी जनसंख्या के आधार पर चौथे स्थान पर आता है।

धर्मनिरपेक्ष बुद्धिवादियों और मानववादियों के लिए ये आंकड़े सांत्वनादायक है। पर यदि कट्टर धार्मिक देशों में मुक्त विचारकों, अधार्मिकों और नास्तिकों की सामाजिक स्थिति की सच्चाई पर दृष्टिपात किया जाय तो यह सारी सांत्वना हवा हो जाती है। उदाहरण के लिए हमारे मित्र और पड़ोसी द्वीप देश मालदीप की दो घटनाओं पर विचार किया

जाय। पहले यह तथ्य बता देना आवश्यक है कि यह एक गणराज्य है और इसके संविधान के अनुसार इसके प्रत्येक नागरिक का सुन्नी मुसलमान होना जरूरी है। अब यह आप सोचिए कि उसे संविधान कहा जाय या असंविधान? मध्यकालीन मानसिकता वाले इस देश की पहली घटना 20 मई 2010 को भारत के इस्लामी विद्वान जाकिर नायक के एक कार्यक्रम के प्रश्नोत्तर सत्र में घटी। मुहम्मद नाजिम नामक एक नागरिक द्वारा यह बताने पर कि वह इस्लाम में विश्वास नहीं करता है न केवल श्रोताओं के एक वर्ग ने उसकी पिटाई की बल्कि मालदीप की पुलिस भी उसे पकड़ ले गयी। पुलिस हिरासत में धर्मशास्त्रियों की दो दिन की काउंसिलिंग के बाद टीवी कैमरे के सामने उसने इस्लाम में विश्वास की घोषणा की फिर भी उसे आरोप तय किये जाने की प्रतीक्षा में हिरासत में ही रखा गया।

इसी तरह इस्माइल मुहम्मद दीदी के बाद में मालदीप के अखबारों में यह समाचार छपा कि माले अन्तराष्ट्रीय हवाई अड्डे के इस 25 वर्षीय एयर ट्रैफिक कंट्रोलर ने अन्तर्राष्ट्रीय मानवाधिकार संगठन को ई-मेल भेजा कि वह एक मुस्लिम परिवार से आने वाला नास्तिक है और वह इंग्लैंड में शरण लेना चाहता है। कृपया उसकी मदद करें क्योंकि उसके परिजन और सहकर्मी उससे खफा हैं और उसे टेलीफोन से मौत की धमकियां दी जा रही हैं। पर इससे पहले कि उसे कहीं से कोई मदद मिलती वह अपने ट्रैफिक कंट्रोल टावर पर लटका पाया गया। लगता है कि वह निराशा होकर आत्महत्या करने पर मजबूर हुआ। बीबीसी ने अपने 15 जुलाई 2010 के समाचारों में बताया था कि ई-मेल में उसने लिखा था कि मालद्वीप के समाज में उस जैसे अमुस्लिम के लिए कोई जगह नहीं है। वह कितनी बड़ी बिडम्बना है कि इस देश को अपने इस बर्बर कानून के बावजूद हाल ही में संयुक्त राष्ट्र की मानवधिकार समिति का सदस्य चुना गया है।

जुकरमेन ने विभिन्न देशों में नास्तिकों की जनसंख्या और उनकी समाजार्थिक स्थितियों के बीच के संबंध का अच्छा विश्लेषण किया है। विश्व नास्तिकता को उन्होंने दो प्रकारों में विभाजित किया है। ओरगेनिक या सहज-स्वाभविक नास्तिकता और कोअर्सिव या लादी हुई नास्तिकता। पश्चिम योरोप और अन्य विकसित देशों जैसे जापान, आस्ट्रेलिया आदि की नास्तिकता को उन्होंने सहज स्वाभाविक नास्तिकता कहा है और पूर्व साम्यवादी देशों की नास्तिकता कोलादी हुई। पर लादी हुई नास्तिकता की यह अवधारणा सोवियत शिविर के ढहने के दिनों तक तो यानी बीसवीं शताब्दि के अन्तिम वर्षो तक तो संगत है पर आज की तारीख में जब उसे लादने वाली कोई सत्ता मौजूद नहीं है उन देशों में नास्तिकों की जो बड़ी संख्या मौजूद है उसे यह नाम देना संगत नहीं प्रतीत होता।

अब प्रश्न उठता है कि विभिन्न देशों की आबादी में नास्तिकों के अच्छे-खासे और बहुत कम प्रतिशत की व्याख्या कैसे की जा सकती है? क्या कारण है कि यूरोप के तथा अन्य विकसित देशों में नास्तिकों की बहुतायत है जबकि एशिया अफ्रीका और दक्षिण अमेरिका के विकासशील देशों में उनकी न्यूनता है? एक सिद्धान्त नौरिस और इंगलहार्ट ने वर्ष 2004 में प्रस्तुत किया जिसे अन्य विशेषकों ने भी मान्यता दी है। वह सिद्धान्त यह है कि जिन समाजों में भोजन स्वास्थ्य शिक्षा और आवास की भरपूर सुविधाएं प्राप्त है उनमें धार्मिकता क्षीणतर और नास्तिकता प्रबलतर है। इसके विपरीत जिनदेशों में ये सुविधाएं न्यून है। जहां जीवन कम सुरक्षित है

वहां धार्मिकता प्रबल है। स्पष्ट ही सामाजिक सुरक्षा और वैयक्तिक सुख-सुविधा तथा नास्तिकता के बीच अपवादों को छोड़कर समानुपाती संबंध है। और गरीबी आर्थिक विषमता तथा कष्टपूर्ण जीवन धार्मिकता को प्रश्रय देते हैं।

उदाहरण के लिए वर्ष 2004 की संयुक्त राष्ट्र संघ की मानव विकास स्पष्ट देखिए। जो जन्म के समय जीवनावधि की संभाव्यता वयस्क साक्षरता प्रति व्यक्ति आय और शैक्षणिक उपलब्धता आदि के आधार पर किसी देश के सामाजिक स्वास्थ्य का परिमापन करती है। इस स्पष्ट के अनुसार जो पांच देश सबसे स्वस्थ और सुखी पाये गये - नार्वे, स्वीडन, आस्ट्रेलिया, कनाडा और नीदरलैंड्स वे सभी नास्तिकता के प्रतिशत की दृष्टि से भी अग्रमण्य हैं। इसी तरह गरीबी आर्थिक सामाजिक विषमता शिशु मरणशीलता लैंगिक विषमता नरसंहार आदि के सूचकांकों का धार्मिकता की प्रबलता से सीधा संबंध पाया गया है।

इस सारे विमर्श का निष्कर्ष क्या निकलता है? क्या संसार में नास्तिकता बढ़ रही है? या घट रही हैं? इसका सही उत्तर यह है कि यद्यपि सुशिक्षित देशों में आज से पांच या दस साल पहले की अपेक्षा नास्तिक अधिक संख्या और प्रतिशत में है। तथापि धार्मिक अंधविश्वासों में जकड़े हुए पिछड़े देशों में क्योंकि जनसंख्या वृद्धि की दर अधिक है। कुल संसार की जनसंख्या में उनका अनुपात घट रहा है। उदाहरण के लिए वैज्ञानिक शिक्षा संपन्न देश ब्रिटेन के संबंध में ब्रूस और ग्रिल के सर्वेक्षणों ने पाया था कि 1960 में उसके 74 प्रतिशत लोग ईश्वर में विश्वास करते थे पर 1990 में यह प्रतिशत 68 ही रह गया। नोरिस और इंगलहार्ट के अनुसार पिछले 50 बरस के दौरान अस्तिकों का प्रतिशत स्वीडन की जनसख्या में 33 प्रतिशत नीदरलैंड्स में 22 प्रतिशत आस्ट्रेलिया में 20 प्रतिशत नार्वे में 19 प्रतिशत और डेनमार्क में 18 प्रतिशत घटा है। यह संसार के जाग्रत-विवेक नास्तिकों के लिए एक प्रेरक सूचना है। लेकिन यहां इस विडम्बना पर भी ध्यान देना चाहिए कि संगठित धर्मो की जनसंख्या सीधे किसी देश की जनसंख्या वृद्धि के साथ ही बढ़ जाती है। जब कि नास्तिकों की जनसंख्या उस देश में ज्ञान-विज्ञान और शिक्षा के प्रसार और उस देश के जाग्रत-विवेक नास्तिकों के प्रयत्नों पर उनके द्वारा धार्मिक अंधविश्वासों के विरूद्ध प्रचार-प्रसार पर सीधी निर्भर है। एक हिन्दू या मुस्लिम परिवार का बच्चा पैदा होते ही उस धर्म की संख्या बढ़ा देता है जबकि नास्तिक पैदा नहीं होते पढ़ लिखकर बनते या पढ़ा लिखा कर बनाये जाते हैं। इसलिए नास्तिकों को भी ईसाई मिशनरियों की तरह एक मिशन बना कर अपनी 'सम्बोधि' के प्रसार के प्रयत्न निरन्तर करने चाहिए ताकि इस संसार से अज्ञान और अंधविश्वास का अंधेरा दूर हो और ज्ञान का प्रकाश फैले। केवल अपनी मुक्ति से सन्तुष्ट नहीं होना चाहिए अन्य लोगों की मुक्ति की भी चिन्ता करनी चाहिए - यही मनुष्यता है। यही मानव धर्म है।

★★

विचार

''लोगों के हुजूम प्रायः बे-उसूले होते हैं, बेकाबू इच्छाओं वाले जज़्बाती एवं नतीजों से बेपरवाह, उनको अनुशासन में रखने के लिए आवश्यक है कि भय से भर दिया जाए। पुरातन लोगों ने अत्यन्त चतुराई की। इसके लिए ईश्वर का अविष्कार किया तथा मृत्योपरांत मिलने वाले दण्ड का भय उत्पन्न किया।''

पोलिवियस (203-120 ई.पू.)

मानव जीवन का लक्ष्य

दुनिया भर के धर्म, मजहब और पंथ में एक बात सब में सांझी है कि ईश्वर दर्शन अल्लाह का दीदार या ईश्वर की प्राप्ति हो सभी का यह सोचना है कि अगर हमें परमात्मा की प्राप्ति हो जाती है तो हमें मोक्ष प्राप्त हो जाएगा और आवागमन से छुटकारा मिल जाएगा। अच्छे कर्म करेंगे तो स्वर्ग की प्राप्ति होगी। दुःख सहना, गम सहना, ईश्वर की मर्जी के अनुसार है। इन सब से छुटकारा पाने के लिए जो साधन बनाए गए हैं वे है : पूजा-पाठ, दान-पुण्य तीर्थ-भ्रमण, गुरू सेवा। उनका मानना है कि गुरू ही हमें सही पथ पर ले जा सकता है और हमें दुःखों से छुटकारा दिलवा सकता है। जहां तक इस्लाम धर्म का सम्बन्ध है, उनका मानना है कि शरिथ के पाबन्द रहो। पांच वक्त की नमाज, रोजे, जकात आदीश के अनुसार चलना, सुन्नत और फ़रीजे पर अमल करना। इससे कयामत के रोज़ मोमिनो को कब्रों से उठा लिया जाएगा और जन्नत भेजा जाएगा और काफिर को दोजख नवीब होगा।

अब हमें इस बात पर विचार करना है कि वैज्ञानिक सत्य क्या है? हिन्दू धर्म में जो आवागमन की बात कहीं गई है? क्या आत्मा अमर है? जो मरती, गलती या जलती नहीं है? मरने के बाद क्या आत्मा नया शरीर ध् ाारण कर लेती है? पिछले जन्म के संचय कर्मों के अनुसार हम भी इस जीवन को प्राप्त करते हैं। सभी धर्मों या मजहबों में जो साझी बात अक्सर कही जाती है वह है स्वर्ग में अप्सराओं का लालच इस्लाम में जन्नत के अन्दर हूरों के ख्वाब दिखाए जाते हैं जैसे कि नारी केवल भोग-वस्तु हो, उसका अपना कोई अस्तित्व न हो। नारी, मां, बहन, बेटी और पत्नी भी है। बिना नारी के संसार चल ही नहीं सकता। अगर दुनिया की आधी आबादी को हम नकार देंगे तो यह संसार वीरान के सिवा कुछ न होगा। नारी से ही परिवार है, घर है, समाज है, और संसार है। नारी जीवन के हर संघर्ष में पुरूष के साथ मिल कर कदम बढ़ा रही है। वह डाक्टर है, इंजीनियर है वकील है, अधिकारी है, कर्मचारी है, मजदूर है शिक्षक भी है। यहां तक कि वह अन्तरिक्ष में पुरूषों के समान धूम चुकी है। जिस देश में नारी को बराबर का स्थान नहीं मिलता वह कभी भी विकास नहीं कर पाता। इसलिए धर्मों या मजहबों को नारी को केवल भोग वस्तु मान लेना समाज के साथ बहुत बड़ा अन्याय है। प्रश्न यह भी उठता है कि हरो को मोमिनो की इन्तिजार में किस सेवा के अनुसार हजारों साल प्रतीक्षा करनी पड़ती है। जिनकी आयु भी नहीं बढ़ती ओर उनकी आयु 16 वर्ष ही बनी रहती है। ऐसे ही हिन्दुओं के स्वर्ग में अप्सराएं पुरूषों का मनोरंजन करने के लिए दीर्घकाल तक प्रतीक्षा करती हैं। ये सारी बातें कोरी कल्पनाओं के सिवा कुछ भी नहीं। इन सब का सार है कि जीवन मिथ्या है और असली जीवन मरने के उपरान्त शुरू होता है। इसके पीछे जो मनोविज्ञान काम करता है कि जो इच्छाऐं इस जन्म में अधूरी रह जाती है वे कल्पनाओं के सहारे स्वर्ग और जन्नत में पूरी होने महसूस करता है।

आज के युग में हमारे अन्तरिक्ष यान खगोल की छानबीन कर रहे हैं। उनको अब तक कोई स्वर्ग या नरक दिखाई नही दिया। वास्तव में उसका अस्तित्व है हीं नहीं। अब विज्ञान यह भी सिद्ध कर चुका है कि आत्मा नाम का कोई पदार्थ नहीं है। जीवन केवल कोशिकाओं का जमा जोड़ है। इसलिए आज के मनुष्य ने इस धरती पर ही हर सुख-सुविधा को जन्म दिया है। नित कई खोजें की जा रही है जिससे मनुष्य का जीवन अधिक सुखमय बन रहा है। उदाहरण के लिए दूरदर्शन (टी.वी.) जिस द्वारा हम कर बैठे ही संसार में हो रही घटनाओं की जानकारी प्राप्त कर सकते है। साथ में यह मनोरंजन का भी एक उत्तम साधन है। यह मनुष्य पर निर्भर करता है कि वह इसका उपयोग किस तरह से करता है। इसमें अश्लीलता का प्रदर्शन न हो और न ही हिंसा से परिपूर्ण घटनाएं दिखाई जाए बल्कि जीवन निर्माण से सम्बन्धित जीवन मूल्यों को प्रेषित करने वाली बातें दिखाई जाएं। ऐसे ही एक छोटा सा यन्त्र मोबाइल फोन है जिसने आज के मानव जीवन में क्रान्ति ला दी हैं इसकी सहायता से मानव के सम्बन्ध शहरे हुए है। दूरिया सिमट गई हैं। कुछ मोबाईल में कैमरा तथा इंटरनैट की भी सुविधा रहती है। कम्प्यूटर भी आज के युग की एक महान खोज है। जिससे मानव जीवन भी बड़ा परिवर्तन आया है। जीवन के अनेक क्षेत्रों में इससे बहुत बड़े परिवर्तन आए हैं। विश्व के भर की हर सूचना की जानकारी हम घर बैठे प्राप्त कर सकते हैं। ये सब मानव के सकारात्मक प्रयत्नों की उपलब्धियां हैं। अगर हम ईश्वर या भाग्य के सहारे बैठे रहते तो हम हजारों वर्ष पूर्व के आदि मानव सा जीवन ही ही रहे होते। आज हमारे पास ऐसे कैमरे है जिससे सागर के जीवन की गतिविधियों को बड़ी सुविधा से हासिल कर सकते हैं। घर के हर कोने में आपको वैज्ञानिक उपलब्धियों दिखाई देंगी। कभी हम रसोई में मसाला पसीने के लिए सिल-बट्टे का इस्तेमाल करते थे। लेकिन आज यह कार्य रसोई में रखी मिक्सी कर रही है। कभी घर की गृहणियां चूल्हें में फूंके मारती हुई अपनी आंखों का भी खराब कर लेती थी आज हमारी रसोई में गैस चूल्हा है और माचिस की जगह लाइटर है।

दुःख की बात यह है कि आज भी हमारे देश की बहुत बड़ी आबादी जीवन की न्यूनतम आवश्यकताओं से वंचित है और सड़क किनारे अथवा किसी गन्दे स्थान पर बनी झुग्गी-झोपड़ियों में नरक सा जीवन व्यतीत कर रही है। सर्दियों में उसने पास अनेक जिन्दगियों ठिठुरते हुए दम तोड़ सिर छिपाते के देती है क्योंकि उनके .... अथाह गर्मी के कारण कई जिन्दगियों को जीवन से हाथ धोना पड़ता है। देश में चारों ओर अन्धकार फैला है। अनपढ़ता, अज्ञानता, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, दरिद्रता आदि अनेक समस्याएं है जिन्होंने पूरे समाज को बीमार बना रखा है। अमीर और गरीब के बीच भारी असमानता है। अन्धविश्वास के कारण अपनी बुरी अवस्था को अपना भाग्य मान बैठते हैं। सूफी कवि फरीद का यह कहना रूखी मिस्सी खा फरीदा ते ठण्डा पानी पी। ना देख पराई चुपड़ी, न तरसाएं जी।। ऐसे ही सन्त कबीर कहते हैं कबीरा तेरी झोपड़ी गल कटियन के पास। करनगे सो भरनगे, तू क्यों भयो उदास।

इस तरह के विचार मनुष्य के विकास में रूकावट का कारण बनते है। आज के इस

वैज्ञानिक युग में मनुष्य के जीवन का लक्ष्य इस सड़े-गले बीमार समाज को स्वस्थ बनाना है। हमें संगठित होकर संघर्ष द्वारा राष्ट्र की अर्थ व्यवस्था को बदलना है और एक स्वस्थ समाज को जन्म देना है। अमीरी-गरीबी की खाई को कम करके समानता पैदा करनी है जो कभी शहीदे-आजम भगत सिंह का भी सपना था। उसका ये मानना था कि इस आजादी की लड़ाई के पश्चात हमारी फिर एक लड़ाई है। लुटेरे समाज का खात्मा देश के हर नागरिक को जीने के पूरे अधिकार सरकार द्वारा स्वास्थ्य, शिक्षा और रोजगार की गारन्टी देना। ऐसे समाज का निर्माण कर देश के हर नागरिक को सुखी और सम्पन्न बनाना, आदमी द्वारा आदमी का शोषण बन्द करना। हजारों वर्षों से दबी-कुचली जातियों के लिए काम करना। आज भी मेरे देश में लाखों-करोड़ो आदिवासी नरक का सा जीवन जी रहे हैं। महिलाओं को दो वक्त की रोटी जुटाने के लिए अपनी देह तक का सौदा करना पड़ता है। आज भी हमारे देश में अनेक नारियां वेश्यावृत्ति करने को मजबूर है। इस बुराई से अनेक प्रकार के गुप्त रोगों का जन्म होता है। अगर हमें स्वस्थ ओर साफ-सुथरा समाज चाहिए तो हमें नव निर्माण के लिए अर्थ-व्यवस्था में आमूल-चूल परिवर्तन लाने की अति आवश्यकता है ताकि हमें हर प्रकार के मतभेद मिटाकर एक नए समाज की स्थापना कर सके। मानव समाज में प्रेम और सद्भावना पैदा हो। मानव एक दूसरे का सहयोगी बने । यही है मानव जीवन का लक्ष्य है।

-आर.पी.गांधी
यमुनानगर

★★

क्या है निमोनिया

निमोनिया फेफड़ों का संक्रमण है। यह एक या दोनों फेफडों में बैक्टीरिया, वायरस, फंगी, कुछ परजीवी या फेफड़ों पर लगी चोट के कारण होता है। इसके लक्षणों में खांसी, सीने में दर्द, खून का थूक आना, बुखार, सांस लेने में दिक्कत और इसके अलावा त्वचा का नीला पड़ना, मतली, उल्टी, थकान, भूख न लगना, जोडों और मांसपेशियों में दर्द शामिल है।

कैसे होता है

निमोनिया, सांस में कीटाणुओं के शामिल होने से होता है। यह कीटाणु खांसी या छींक से शरीर में पहुंचते हैं। आमतौर पर मुंह, गले या नाक में यह बैक्टीरिया या वायरस मौजूद होते हैं, जो अनजाने में फेफड़ों में प्रवेश कर निमोनिया का कारण बनते हैं। स्वस्थ लोगों के बजाय फेफड़ों के रोगी, हृदय रोगी, नशा करने वाले, निगलने की समस्या और स्ट्रोक की समस्या से ग्रसित लोगों को निमोनिया का जोखिम ज्यादा होता है। बच्चों और बुजुर्गो में भी निमोनिया होने की आशंका अधिक होती है। कुछ दवाओं के साइड-इफेक्ट्स की वजह से भी निमोनिया हो सकता है। एक बार बैक्टीरिया के फेफड़ों में प्रवेश के बाद यह बहुत तेजी से शरीर को रोगी बनाते हैं।

ये है इलाज

बैक्टीरियल और फंगल निमोनिया का (वायरल नहीं) एंटीबायोटिक और एंटीफंगस दवाओं के साथ इलाज किया जा सकता है। अस्पताल में भर्ती हुए बगैर भी दवाइयों के माध्यम से इसका इलाज आसानी से किया जा सकता है।

बचाव सबसे बेहतर

इस न्यूमोकोकल रोग को रोकने के लिए दो न्यूमोकोकल कान्जिगट वैक्सीन (पीसीवी 13) और न्यूमोकोकल पॉलिसेकेराइड वैक्सीन (पीसीवी 23, निमोवैक्स) टीके उपलब्ध हैं। न्यूमोकोकल कान्जिगट वैक्सीन (पीसीवी 13) 2 से 4 साल के बच्चों को दी जाती है। जबकि न्यूमोकोकल पॉलिसेकेराइड वैक्सीन (पीसीवी 23, निमोवैक्स) वयस्कों और मधुमेह, हृदय संबंधी, फेफड़े, या गुर्दे की बीमारी से ग्रसित लोगों को दी जाती है। निमोनिया का यह टीकाकरण हर पांच से सात साल में दोहराया जाना चाहिए।

अमर उजाला

खोज खबर

अठारह करोड़ वर्ष पुरानी कोशिकाएं भी सुरक्षित

दक्षिणी स्वीडन के स्कान क्षेत्र में मिले फर्म के पौधे के जीवाशम ने दुनिया के वैज्ञानिक समुदाय को बेहद रोमांचित कर दिया है। रोमांचित करने वाली बात यह है कि स्वीडिश वैज्ञानिक ने 18 करोड़ वर्ष पुराने इस जीवाश्म में कोशिकाओं के नाभिकों और क्रोमोसोम को संरक्षित अवस्था में पाया है। इस पौधे क्षय की प्रक्रिया शुरू होने से पहले ही तत्काल संरक्षित हो गया था। वैज्ञानिकों का कहना है कि ज्वालामुखी से निकले लावा ने इस पौधक को दफन कर दिया था। स्वीडिश भगर्भशास्त्री विवि वाजदा के मुताबिक संरक्षण इतनी तेजी से हुआ कि कोशिकाएं कोशिका विभाजन के विभिन्न चरणों में ही संरक्षित हो गई। पौधे की अचानक मौत की वजह से कोशिकाओं के संवेदनशील हिस्से भी संरक्षित हो गए। रिसर्चरों को इस पौधे में कोशिका के नाभिक, कोशिका की झिल्लियां और क्रोमोसोम सही सलामत मिले हैं। जीवाश्मों के भीतर इस तरह की संरचनाओं का मिलना बहुत दुर्लभ होता है। मुमकिन है कि लावा के प्रवाह में और भी कई चीजें दफन हो गई हों।

प्रो. वाज्दा ने जीवाश्म के आसपास की चट्टानों पर जमा पराग कणों का भी अध ययन किया है। पता चला कि इस इलाके में 18 करोड़ वर्ष पहले ज्वालामुखी का लावा फैला था। वाज्दा के अध्ययन से यह भी पता चलता है कि इस इलाके की जलवायु गर्म थी और यहां उगने वाले पेड़ पौधों में अच्छी खासी विविधता थी। फर्न का यह दुर्लभ जीवाश्म साठ के दशक में एक किसान को मिला था। उसने यह जीवाश्म स्वीडन के प्राकृतिक इतिहास संग्रहलाय को सौंप दिया जहां उसे लगभग भुला दिया गया। करीब चालीस साल बाद शोधकर्ताओं का ध्यान इस दुर्लभ जीवाश्म की तरफ गया। यह फर्न आधुनिक रॉयल फर्न के परिवार से संबंध रखता है। रॉयल फर्न स्वीडन के जंगलों में उगता है। इस परिवार के जीवित सदस्य और जुरासिक काल के जीवाश्म में काफी समानताएं हैं। इससे पता चलता है कि करोड़ों वर्ष बीत जाने के बाद भी इसमें कोई बड़ा परिवर्तन नहीं हुआ। रिसर्चरों ने फर्न के जीवाश्म के कोशिका नाभिक का मिलान उसके जीवित रिश्तेदारों से करने के बाद पाया कि इस पौधे में विकास क्रम की दृष्टि से गजब की स्थिरता है।

इस बीच, ब्रिटिश आर्कटिक सर्वे और रीडिंग युनिवर्सिटी के रिसर्चरों ने अंटार्टिक बर्फ में करीब 1530 वर्षों से जमा काई (मॉस) को फिर से जीवित कर दिया है। दोनों ध्रुवीय क्षेत्रों के जीव विज्ञान के लिए काई का विशेष महत्व है। दरसअल इन इलाकोंमें इसी पौधे का बोलबाला है। यह पहला अध्ययन है जिसमें किसी पौधे को इतनी लंबी अवधि तक जीवित पाया गया है। काई पर्यावरण की विषमताओं को झेल सकती है लेकिन पिछले अध्ययनों में

इस पौधे में 20 साल तक ही जीवित रहने की क्षमता देखी गई है। प्राकृतिक पर्यावरण प्रणाली में काई एक खास भूमिका निभाती है।

यह जानना बहुत महत्वपूर्ण है कि अटार्टिक जैसे दुनिया के तेजी से बदलने वाले इलाकों में इस पौधे के विकास और वितरण को कौन सी चीजें नियंत्रित करती है। प्रयोगों से सिद्ध होता है कि बहु-कोशिकाएं वाले जीव लंबे समय तक विषम परिस्थितियों को झेल सकते हैं। रिसर्चरों ने अंटाटिक से काई के जो नमूने एकत्र किए वे कई दशक पुराने थे। उन्होंने इन्हें प्रदूषण से मुक्त रखने के बाद सामान्य तापमान पर एक इंक्यूबेटर में रखा जहां कुछ सप्ताह के भीतर उन्होंने विकसित होना शुरू कर दिया। कार्बन डेटिंग की मदद से रिसर्चरों ने पता लगाया कि यह काई कम से कम 1530 वर्ष पुरानी है। संभव है कि जटिल संरचना वाले दूसरे जीव रूप इससे भी ज्यादा समय तक बफीली सतह में अपना अस्तित्व बनाए रखने में समर्थ होंगे। ★★

सूक्तियां

''क्या ईश्वर पाप को रोकना चाहता है परन्तु ऐसा करने के वह योग्य नहीं? तो फिर वो सर्व-शक्तिमान नहीं।

क्या वो कर सकता है परन्तु करना नहीं चाहता? तो वह द्रोही है।

क्या वह कर भी सकता एवं चाहता भी है? तो फिर उसे ईश्वर किस लिए कहा जाए?''

एपिक्यूरियस

फोमो

संचार क्रांति ने यहां हमारे जीवन को सुविधा-सम्पन्न बनाया है, वहीं कई तरह की परेशानिया भी खड़ी कर दी हैं। ऐसी ही एक परेशानी है- फोमो यानी फीयर ऑफ मिसिंग आउट, जो सोशल मीड़िया एवं स्मार्ट फोन के कारण कुछ ज्यादा ही गम्भीर रूप ले रही है। यह एक तरह का मनोवैज्ञानिक भय है, जिसमें लोगों को हमेशा लगता रहता है कि उससे कहीं कुछ छुट न जाए। ऐसा व्यक्ति हमेशा यह सोचता रहता है कि बाकी लोग कहीं उससे ज्यादा मजा तो नहीं कर रहे या उससे कहीं ज्यादा लाभान्वित तो नहीं हो रहे। यदि एक ही समय में कई जगहों से उसे आमंत्रण मिलता है, तो वह तय नहीं कर पाता कि कहां जाए। वह सभी जगहों पर पहुंचना चाहता है या जहां नहीं पहुंच पाता है वहां मौजूद मित्रों से लगातार सम्पर्क कर वहां के बारे में जानना चाहता है। ऐसा व्यक्ति अक्सर सोने के दौरान भी बीच-बीच में उठकर अपने फेसबुक या ट्वीटर पेज देखता है और वहां का हाल जानना चाहता है। फोमो न केवल हमारे सामाजिक जीवन को प्रभावित करता है, बल्कि कामकाज पर भी बुरा असर डालता है। इस शब्दावली (फोमो) के प्रचलन की कहानी दिलचस्प है। केली वाटसन एवं डायने वेल्स जब बच्चे थे, तो साथ-साथ रहते थे। जब वे साथ-साथ नहीं होते, तो एक-दूसरे के बारे में सोचते थे और इसी प्रयास में रहते की कैसे साथ हों। जब वे बड़े हुए, तो अलग-अलग दोस्तों के साथ रहने लगे। लेकिन उन्हें यह तय करने में मुश्किल होती कि वे क्या करें और अंततः उनकी उदासी बढ़ जाती। एक दिन केली ने कहा, मुझे लगता है कि कहीं जीवन में आनन्द खो न जाए। इस पर डायने ने कहा, तुम्हे फोमो यानी फीयर ऑफ मिसिंग आउट हो गया है। बस तभी से यह शब्दावली प्रचलित हो गई।

अमर उजाला (30-05-2013)

श्राद्ध का पाखण्ड एक चुनौती

भंते बुद्ध प्रकाश, पटना

डा. कामेश्वर शर्मा सेवानिवृत जी.डी. कॉलेज बेगूसराय द्वारा लिखित पुस्तक ''श्राद्ध का पाखण्ड'' का संक्षिप्त विवरण पढ़कर नयी पीढ़ी के नौजवानों के लिए जो संदेश मिलता है उससे वैज्ञानिक सोच में बदलाव हो सकता है। आज विज्ञान का युग है फिर भी हमारे समाज में असत्य धर्म और अंधविश्वास व्याप्त है। आखिर क्यों? इसलिए कि विज्ञान की शिक्षा का अभाव है जिस वजह से हमारे देश के लोगों में वैज्ञानिक सोच का अभाव है। फलस्वरूप श्राद्ध जैसा पाखण्ड का बोलबाला है। अन्तरिक्ष के अध्ययन से नये नये ग्रहों, नक्षत्रों, तारों का तो पता चलता है किन्तु स्वर्ग लोक, नरक लोक, जैसे पिण्डों का आज तक वैज्ञानिक को पता नहीं चला है। अंधविश्वास, पाखण्ड का लगातार बने रहने का कारण परम्परा से चिपके रहना तथा तर्क शक्ति, विवेक का इस्तेमाल नहीं करना। स्वर्ग के नाम पर जो-जो वस्तुएं दान की जाती है वे सभी मृतक को स्वर्ग में नहीं मिलती। बल्कि ब्राह्मण, पुरोहित महामात्र उन सामानों को ढोकर अपने-अपने घर ले जाते हैं यही सच है। पुरोहितों का दावा असत्य है क्योंकि प्रत्यक्ष ज्ञान से जिसे हम जानते हैं उसको अस्वीकार कैसे कर सकते हैं। किन्तु अफसोस यह है कि सत्य को जानकर भी उसको नहीं मानते की हमारी आदत हो गयी है, यह पाखण्ड नहीं तो क्या है। इस छोटी सी पुस्तक ''श्राद्ध का पाखण्ड'' का संदेश के माध्यम से सोये हुए लोगों को जगाना है, अंधविश्वास को मिटाना है। श्राद्ध का पाखण्ड केवल हिन्दुओं में नहीं बल्कि अन्य धर्मों में भी है। आखिर इसका आधार क्या हैं? सभी धर्मो के कर्मकाण्ड करने वाले लोगों का ऐसा विश्वास है कि मरने के बाद मृतक का अस्तित्व किसी न किसी रूप में मौजूद रहता है। उन्हीं मृतात्माओं की शन्ति और मुक्ति के लिए वे श्राद्ध कर्म करते हैं। हिन्दू जिसको स्वर्ग नरक कहते हैं, इसाई उसको हेवेन और हेल (Heaven and Hell) कहते हैं। मुसलमान उसको जन्नत और जहन्नुम (दोजख) कहते हैं। शब्द अलग-2 हैं। तात्पर्य एक ही है। किन्तु सवाल यह पैदा होता है कि क्या मृत्यु के बाद कर्मकाण्ड सत्य पर आधारित है या असत्य पर और अंधविश्वास पर आधारित है या विज्ञान पर? यही मूल प्रश्न है, जिसका उत्तर ढूंढना आज के विज्ञान के युग के लिए चुनौती है। मैं किसी धर्म का विरोधी नहीं, बल्कि धर्म में अंधविश्वास पाखण्ड के खिलाफ एक आन्दोलन है। विरोध का स्वर, ब्राह्मणवाद के विरोध में है न कि ब्राह्माण जाति के खिलाफ।

श्राद्ध का जो प्रचलित रूप है। उसमें मृतक के भोजन के लिए पिंड दिया जाता है। एकादशाह, द्वादशाह और सपिंडिकरण किया जाता है, ब्राह्मण भोजन और ब्राह्माणों को दान दक्षिणा दी जाती है, पुरोहितों का महिमा मंडन किया जाता है और मृत्यु भोज किया जाता है। स्वामी दयानन्द सरस्वती परम्परागत श्राद्ध का प्रचण्ड विरोध करते हैं। स्वामी जी की पुस्तक ''सत्यार्थ प्रकाश'' और ''संस्कार विधि'' के मतानुसार श्राद्ध का जो प्रचलित रूप है वह

सर्वथा त्याज्य है। स्वामी जी का स्पष्ट मत है कि दाह संस्कार होने के बाद श्राद्ध की कोई आवश्यकता नहीं है। श्राद्ध जैसे दस दिनों तक मृतक को पिंड देना, एकादशाह, द्वादशाह का विस्तृत श्राद्ध, सपिंडीकरण, मासिक श्राद्ध, वार्षिक श्राद्ध, गया श्राद्ध, ब्राह्मण भोजन और गोतिया भाई को मृत्यु भोज, तर्पण इत्यादि कुछ करने की जरूरत नहीं है। स्वामी जी के मतानुसार श्राद्ध और तर्पण को जीवितों के लिए आवश्यक बताते हैं। मृतक के लिए कुछ नहीं करना है। सिर्फ मृतक का दाह संस्कार होना जरूरी है।

चार्वाक का कथन है ''भस्मी भूतस्य देहस्य पुनरागमनं कृत'' चार्वाक भी मनुष्य के मरने के बाद उसके दाह संस्कार को तो अनिवार्य मानता है किन्तु दाह संस्कार के बाद श्राद्ध को निरर्थक मानता है। स्वामी दयानन्द सरस्वती यजुर्वेद के अध्याय 40 के मंत्र 15 को उद्धृत करते हुए दुहारते हैं। ''भस्मात् शरीरम् शरीर का संस्कार भस्म करने तक ही है।

स्वामी जी के मतानुसार श्राद्धकर्म, वेद विरूद्ध है इस लिए श्राद्ध त्याज्य है। अगर आप वेद समर्थक है तो भी आपको श्राद्ध का विरोध करना चाहिए। माता-पिता जीवित रहते ही उनको श्राद्धपूर्वक जो कर्म किया जाता है, जो सेवा, भोजन आदि करते हैं, वही उनका श्राद्ध है। माता-पिता की मृत्यु के बाद उनका दाह संस्कार करना पुत्र का धर्म है। बस उतना ही परम्परागत श्राद्ध में जो गोदान, वस्त्रदान, अनुदान, पात्रदान और दक्षिणाा की प्रथा है। वह तो पुरोहितों को ठगने का तरीका है।

यजमानों को बेवकूफ बनाकर उनका धन ठग कर अपने घर ले जाना तो पुरोहितों की पुरानी चाल है। इससे सावधान और बचने की जरूरत है, श्राद्ध के विरूद्ध जन, आन्दोलन करने की जरूरत है और इस सड़ी गली झूठी खास करके गरीब जाति के लोगों का शोषण होता है क्योंकि उनके बच्चे शिक्षा से दूर रह जाते हैं।

सामाजिक के स्तर भी श्राद्ध अव्यवाहारिक है। श्राद्ध में बड़े पैमाने पर ब्राह्मणों को भोज खिलाने और भोजन दक्षिणा देना तथा गोतिया भाई को भोज खिलाना या चौरासी भोज या भरगामा भोज करना अटपटा जैसा लगता है। मृत्यु के बाद तो गम होना चाहिए, शोक मनाना चाहिए। मृत्यु के उपलक्ष्य में भोज, वह तो जले पर नमक छिड़कने जैसा है। आर्थिक दृष्टि से भी श्राद्ध नहीं करना चाहिए, क्योंकि जो गरीब अपने परिवार के लोगों को जीवित अवस्था में भोजन नहीं करा सकते हैं, चिकित्सा के अभाव में जो मर जाते हैं। उनके मरने के बाद उनका श्राद्ध बर्बादी नहीं तो और क्या हैं? अतः श्राद्ध का पाखण्ड एक चुनौती है। इस पाखण्ड को समूल नष्ट करने के लिए वैज्ञानिक सोच को अपनाना चाहिए और प्रगतिशील लोगों को अग्रणी भूमिका के लिए तैयार हो जाना चाहिए।

श्राद्ध में मृत्यु के उपलक्ष्य में जो गोतिया विरादरी का भोज होता है इसका घोर विरोध 1938 ई. में ग्वालियर स्टेट के महाराज ने किया था उनका आदेश था कि अगर कोई मृतक भोज करेगा तो उसको एक हजार रूपया जुर्माना और एक वर्ष की कैद होगी।

10 जुलाई 1938 को प्रकाशित सामयिक चर्चा का अंश

भंते बुद्ध प्रकाश
पूर्व अल्पसंख्यक आयोग सदस्य, बिहार
मो.: 9122139922

★★

केस रिपोर्ट

घर में कपड़े कट जाने का रहस्य सुलझा

बलवन्त सिंह लैक्चरार

मनजीत सिंह का परिवार एक सम्पन्न परिवार है। वे दो भाई हैं, मनजीत सिंह का बड़ा भाई आस्ट्रेलिया में स्थापित है। वह विदेश से उन्हें प्रर्याप्त मात्रा में आर्थिक सहायता भेजता रहता है। मनजीत सिंह पास के कस्बे में बिल्डिंग मैटीरियल की दुकान चलाता है। उनकी गांव में 20-25 एकड़ कृषि योग्य जमीन है, जिसकी देखरेख उनका पिता स्वयं करता है। गांव में उन्होंने एक शानदार कोठी बनवाई हुई है तथा वे सम्पूर्ण सुख-सुविधाओं से युक्त जीवन व्यतीत कर रहे थे। अभी कुछ माह पूर्व मनजीत सिंह की शादी जसबीर कौर के साथ हुई थी तथा समस्त परिवार प्रसन्नतापूर्वक अपना जीवन बिता रहा था।

परन्तु एकाएक घर में विचित्र सी रहस्यमयी घटनाएं घटनी प्रारम्भ हो गई। एक दिन उन्होंने देखा कि घर में अलमारी में रखे हुए जसबीर के नये-नये दो-तीन सूट कटे हुए मिले। फिर एक दिन घर में कई जगह पर लाल-लाल खून के छींटे लगे हुए मिले। फिर कुछ दिनों के पश्चात् जसबीर के कुछ और सूट भी कटे हुए मिले। फिर एक दिन जसबीर का पहना हुआ सूट भी कट गया।

उसके पश्चात् जसबीर को दौरे पड़ने शुरू हो गए। जसबीर को अचानक दौरा पड़ जाता और वह कई-2 घंटों तक बेसुध हुई पड़ी रहती। ऐसी हालत में घर वाले उसे पड़ोसी गांव के एक बाबा के पास ले गए। उसने जसबीर का झाड़ा लगा दिया तथा कह दिया कि किसी पड़ोसन ने इसकी कोख बंधवाने के लिए इस पर तन्त्र-मन्त्र करवाया हुआ है। उसने साथ ही यह भी बताया कि इस पर 'चीज' बहुत जबरदस्त छुडवाई हुई है। उसने उसका झाड़ा लगाया, अपनी मोटी दक्षिणा वसूल की तथा अत्यन्त भयभीत कर के उन्हें वापिस अपने घर भेज दिया।

घर आकर जसबीर की तबियत और भी बिगड़ गई। अब उसे सोते समय भंयकर आकार के भूत-प्रेत दिखाई देने लग गए। अब ज्योंहि वह अपने बैड पर सोने के लिए लेटती तो तथाकथित भूत-प्रेत उसके ऊपर आ कर बैठे जाते, उसका गला दबा लेते। काफी प्रयत्न करने पर जब वह हड़बड़ा कर उठती तो डर के बारे चीखने चिल्लाने लग जाती, इस प्रकार से चीखते चिल्लाते हुए वह बेसुध हो कर गिर पड़ती तथा घंटों तक इसी तरह से पड़ी रहती।

इसी तरह किसी के बताने पर वे उसे दो-तीन और बाबाओं के पास ले गए, उन्होंने भी उसे 'ओपरा-पराया' अथवा किया-करवाया तो बता दिया परन्तु मामला हल नहीं कर सके। जसबीर की हालत और भी बिगड़ती चली गई।

अन्त में उनका एक रिश्तेदार, जो तर्कशील सोसायटी द्वारा जनहित में किए जाने वाले कार्यों से परिचित था, उसने उन्हें मेरे

पास भेज दिया। मैं उनके साथ उनके घर गया, उनके परिवार के सभी सदस्यों के साथ अलग-अलग से बातचीत की तथा समस्या का हल ढूंढ लिया। क्योंकि एक बार जसबीर के पहने हुए कपड़े भी कट गए थे, अतः यह तो स्पष्ट था कि यह सभी कुछ जसबीर स्वयं ही करती थी। परन्तु वह ऐसा क्यों करती थी? इस पेचीदा समस्या को सुलझाना ही मेरे लिए चुनौती था। घर वालों से बातचीत में मुझे पता चला कि शुरूआत में जब जसबीर एक दिन अपनी सास के साथ गुरूद्वारें में माथा टेकने के लिए गई थी और जब वह वापिस घर आई थी तो उसे परेशानी सी होने लगी थी और उसके पश्चात् ही उसके अलमारी में रखे हुए कपड़े कट गए थे। इस पर मैंने इस सारे घटनाक्रम का विश्लेषण गुरूद्वारे से जोड़कर करना शुरू कर दिया। शेष सारे परिवार से तो कोई विशेष जानकारी न मिली, परन्तु जब मैंने जसबीर के साथ गहनता से पूछताछ की तो रहस्य की सभी परतें खुलती चली गई।

प्रायः सभी धर्मों के अनुयायी धर्म के वास्तविक मर्म को चाहे समझे अथवा न समझें, परन्तु अपने-अपने धर्म के बाहरी दिखावे में अत्यन्त निपुण होते हैं। वे अपने-अपने पूजा स्थलों में नित्यनेम के अनुसार जाना, वहां माथा टेकना, पूजा अर्चना करना अपना सर्वोपरि कार्य समझते हैं। उनमें यह विश्वास भी कूट-कूट कर भरा रहता है कि परमात्मा उनकी प्रत्येक गतिविधि पर नजर रखे हुए है। इससे अनेकों भोले-भाले लोग अनैतिक कृत्यों से भी बचे रहते हैं। परन्तु यह भावना केवल ईमानदार व भोलेभाले लोगों में ही पाई जाती है। चालाक किस्म के लोग, धर्माधिकारी एवं धूर्त व्यक्ति तो प्रायः धर्म और भगवान को व्यापार का रूप दे देते है और भोली भाली जनता का मानसिक व आर्थिक शोषण करके एय्याशी करते रहते हैं। इसके उदाहरण हमें अपने समाज में प्रतिदिन देखने को मिलते रहते हैं।

जसबीर स्वयं एक अमृतधारी गुरसिख है, उसके माता-पिता व सास-ससुर भी अमृतधारी गुरसिख है। परन्तु जसबीर का पति अमृतधारी नहीं है। यहां तक तो सब ठीक था, परन्तु समस्या तो तब पैदा हुई जब एक दिन उसने अपने पति के कपड़े धोने के लिए उठाए और तलाशी में उसकी जेब से खाने वाले तंबाकू की एक पुड़िया मिली। यह देखकर जसबीर के पैरों के नीचे से जमीन निकल गई। यह उसके लिए भंयकर दुखः दायी बात थी। वह शेष सब कुछ तो बर्दाश्त कर सकती थी परन्तु मानसिक तौर पर इस बात को बर्दाश्त करने के लिए बिल्कुल भी तैयार नहीं थी कि उसका पति सिख धर्म में पूर्णतः निषिद्ध तम्बाकू के किसी भी प्रकार के उत्पाद को हाथ लगाए अथवा उसका सेवन करे। जब रात को उसने इस बाबत अपने पति के साथ बातचीत की तो उसने जसबीर की मनोवेदना समझने के बजाए उल्टा उसे झिड़क दिया। इस बात का उसके अवचेतन मन पर गहरा आघात लगा तथा वह एक तरह से मनोरोगी सी बन गई। सुबह जब उसकी सास उसे अपने साथ गुरुद्धारे में ले गई तो वहां पर जाकर उसका अन्तर्मन अपराध-बोध से ग्रसित हो गया। उसे वहीं पर

थोड़े-थोड़ चक्कर से आने लग गए तथा घर आकर वह एकदम से निढाल सी हो गई। उसी अपराध-बोध के कारण अवचेतन हालत में उसने अलमारी में रखे हुए अपने कपड़ों को चाकू के सथ थोड़ा-थोड़ा काट दिया। कुछ दिनों के पश्चात् उसी अपराध-बोध के कारण अवचेतन अवस्था में अपने सिन्दूर की डिबिया पानी में घोलकर उसे घर मे जहां-तहां फैंक दिया। घर वालों ने इस रंग को खून समझ लिया तथा वे किसी जादू-टोने के भय से भयाक्रान्त हो गए। इसी कारण ही वह थोड़े-थोड़े दिनों के पश्चात् वह अपने कपड़े काट देती अथवा अन्य किसी वारदात को अन्जाम दे देती। अवचेतन हालत में की गई ऐसा वारदात के अपराध बोध के कारण वह बेसुध हो जाती तथा घंटो इसी हालत में पड़ी रहती।

बाबाओं द्वारा झाड़ा लगवाए जाने पर जब उस पर किसी द्वारा छुड़वाई गई किसी 'जबरदस्त चीज' तथा उसकी 'कोख बांधने' के लिए की गई किसी क्रिया के बारे में बाबाओं ने उसे बताया कि उसे सपने में तथाकथित भूत-प्रेत दिखाई देने शुरू हो गए। धीरे-धीरे वह इन तथाकथित भूत-प्रेतों से और भी अधिक तंग होना शुरू हो गई।

अन्त में मैंने उसकी मनोवेदना को समझ कर सर्वप्रथम सम्मोहन क्रिया द्वारा उसके अवचेतन मन में बैठे हुए तथाकथित भूत-प्रेतों के डर को दूर किया तथा लगातार चार-पांच बार उसे मनोरोग परामर्श केन्द्र पर बुलवा कर कांऊसलिंग द्वारा धार्मिक उन्माद द्वारा पैदा किये अपराध बोध को दूर किया। इसके साथ ही साथ उस के पति की भी कांऊसलिंग की तथा उसे उसकी परिवारिक पृष्ठभूमि के अनुसार अपना आचरण करने के लिए प्रेरित किया। उसके पति ने बताया कि बिल्डिंग मैटीरियल का कार्य होने के कारण उसका वास्ता नित्यप्रति मजदूर तबके से पड़ता रहता है। उन मजदूरों के देखा-देखी उसने भी कभी-2 जर्दा लगाना शुरू कर दिया था। इसके साथ उसने यह भी बताया कि तम्बाकू खाने के साथ-2 वह कभी-2 अफीम, भुक्की तथा शराब का सेवन भी करने लग गया था।

मेरी कांऊसलिंग के प्रभाव में उसने वचन दिया कि आईन्दा वह कभी भी किसी प्रकार के नशे अथवा तम्बाकू को हाथ भी नहीं लगाएगा। उस द्वारा वचन देने पर जसबीर को पूर्णतः मानसिक तसल्ली हो गई और तब से अब तक चार महीने बीत चुके है अब उस घर में किसी प्रकार की कोई रहस्यमयी घटना नहीं घटी तथा जसबीर अब बिल्कुल प्रसन्नता के साथ जीवन व्यतीत कर रही है।

नोट : यह एक सत्य घटना है मामले की गंभीरता को देखते हुए पात्रों के नाम बदल दिए गए हैं। ★★

सूक्तियां

निर्दयी शासक के लिए आवश्कता है कि वह ईश्वर के प्रति अपनी श्रद्धा को बढ़ा चढ़ा कर दिखाए। प्रजा उस शासक के अनुचित कार्यो की कम चिन्ता करती है जिसे वह ईश्वर से डरने वाला धार्मिक शासक समझे। दूसरी ओर लोग उसके विरूद्ध कारवाई करने के लिए भी इतनी जल्दी कदम नहीं उठाते, क्योंकि वे विश्वास करते हैं कि ईश्वर अथवा देवता-गण शासक की पीठ पर हैं।''

अरस्तू (384-322 ई.पू.)

तर्कशील हलचल

1. जादू–टोने के संदेह में प्रताड़ना शर्मनाक–

अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति के अध्यक्ष डॉ. निदेश मिश्र ने सरगुजा के पास ग्राम रनपुरकला में ग्रामीण महिला गेंदी बाई की जादू–टोने के संदेह में की गयी। प्रताड़ना की कड़ी निंदा की है। रनपुरकला की इस घटना में अनेक ग्रामीण शामिल हैं जिन पर अभी तक कार्यवाही नहीं हुई है।

डॉ. दिनेश मिश्र ने कहा ग्राम रनपुरकला में पिछले दिनों गेंदी बाई यादव को जादू–टोने पर जानवरों एवं बच्चों को मार डालने के संदेह में मारा पीटा गया उसके मुंह में जूता घुसाकर उसे सरेआम घुमाया गया तथा सामाजिक बहिष्कार भी कर दिया गया तथा उसे गांव से बाहर चले जाने की धमकी दी गई। इस मामले में सबसे दुखद बात यह है कि जब वह महिला पुलिस थाने में रिपोर्ट दर्ज कराने के लिये गई तब उसकी रिपोर्ट तक दर्ज नहीं की गई तथा उसे वापस आना पड़ा। जबकि प्रदेश में टोनही प्रताड़ना अधिनियम लागू है जिसके अंतर्गत ऐसे मामलों में त्वरित कार्यवाही करने के निर्देश है।

डॉ. दिनेश मिश्र ने कहा – ग्रामीणों को यह समझने की आवश्यकता है कि किसी व्यक्ति की बीमारी व मृत्यु विभिन्न संक्रमणों से होती है जिसका सही समय पर उपचार करने पर रोगी की जान बचायी जा सकती है। जादू–टोना एक काल्पनिक मान्यता है जिसका कोई अस्तित्व नहीं है इसलिए किसी निर्दोष व्यक्ति को जादू–टोने के संदेह में प्रताड़ित करना, मारपीट करना अनुचित व गैरकानूनी है। कोई नारी टोनही नहीं होती, ग्रामीणों को ऐसे अंधविश्वासों से बचना चाहिए। ग्रामीणों को किसी भी बैगा की बातों में नहीं आना चाहिए तथा उन्हें यह भी ध्यान रखना चाहिए कि गांव में ऐसी घटना न घटे जिससे मासूसों को प्रताड़ित होना पड़े। समिति का दल ग्राम रनपुरकला जाकर ग्रामीणों को समझाईश देगा।

– डॉ दिनेश मिश्र

(अध्यक्ष, अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति)

2. गांव हरिपुर (यमुनानगर) तर्कशील कार्यक्रम

गांव हरिपुर काम्बोज (यमुनानगर) के वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री सुरेन्द्र कुमार अरोड़ा ने अपने स्कूल में मुझे आमन्त्रित किया ताकि स्कूल स्टाफ व बच्चों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण पैदा किया जा सके। श्री आर.पी.गांधी ने स्कूल में कुछ जादू के आइटम दिखाए जिनसे बच्चों का मनोरंजन तो हुआ ही और साथ में जिज्ञासा पैदा की कि यह कैसे हुआ? श्री गांधी ने अपने वक्तव्य में समझाया कि जादू चमत्कार नहीं होता बल्कि एक कला है जिसको अभ्यास द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। इसमें चार प्रकार की चालकीओं का इस्तेमाल होता हैं। हाथ ही चालाकी, उपकरण की विशेषता, शारीरिक चालाकी, रसायन विज्ञान का प्रयोग। साथ ही बच्चों के प्रश्नों का उत्तर दिया व अध्यापकों की शंकाओं का निवारण किया। दूसरी मीटिंग स्कूल, स्टाफ के साथ ही गई। इसमें ज्योतिष एक धोखा है पर व्याख्यान दिया गया। इस बात पर बल दिया गया कि ज्योतिषों के चक्कर में पड़ कर अपना धन बर्बाद न करें। इस विषय पर अध्यापकों ने जो प्रश्न उठाए, उनका सन्तोषजनक उत्तर दिया। अन्त में

वहां के प्रधानाचार्य श्री सुरेन्द्र कुमार अरोड़ा ने श्री आर.पी.गांधी का धन्यवाद किया।

एक अन्य गतिविधि में राजकीय वरिष्ठ माध्यामिक विद्यालय, बूड़िया (यमुना नगर) में जाने का अवसर प्राप्त हुआ। यह आमन्त्रण स्कूल की रसायन विज्ञान की प्राध्यापिका सुमन शर्मा की ओर से था। प्रोग्राम का आयोजन स्कूल के प्रार्थना स्थान पर किया गया था। जिसमें स्कूल स्टाफ व बच्चे शामिल थे। श्री आर.पी.गांधी ने लगभग दो घंटे अपना प्रोग्राम रखा जिसमें इस विषय पर विशेष बल दिया कि जीवन में हमें वैज्ञानिक सोच अपनानी चाहिए। प्रत्येक घटना के पीछे कारण की तलाश करें। ऐसा करके हम अपने अन्दर वैज्ञानिक दृष्टिकोण पैदा कर सकते हैं। विद्यार्थियों और अध्यापकों ने श्री गांधी की बातों को बड़े ध्यान से सुना और समझने का प्रयास किया। उठाएं गए प्रश्नों का संतोष जनक ढंग से उत्तर दिया गया। कुल मिलाकर आर.पी. गांधी अपने ने बताया कि तर्कशील सोसायटी का मुख्य उद्देश्य लोगों को अन्ध-विश्वास से बाहर निकाल कर उनमें विज्ञान का प्रकाश फैलाना है। तर्कशील सोसायटी मानसिक समस्याओं का समाधान भी परामर्श द्वारा करती है।

3. रेशनलिस्ट सोसायटी हरियाणा की द्विमासिक बैठक एवं सेमिनार

तर्कशील सोसायटी हरियाणा (रजि.) की द्विमासिक मिटिंग एवं जागरूकता सेमिनार गुरू अर्जुन देव हाई स्कूल असन्ध में सम्पन्न हुआ। सेमिनार के प्रारम्भ में मा. बलजीत भारती ने तर्कशील आन्दोलन के प्रारम्भ से लेकर आज तक के संघर्ष का विवरण देते हुए कहा कि आज तर्कशील सोसायटी हरियाणा पंजाब ही नहीं पूरे देश में पाखण्डियों को चुनौति दे पाने में समर्थ है। डा. नरेन्द्र दामोलकर का बलिदान इस चुनौती के कारण ही है। तर्कशील पथ पत्रिका में संपादक प्रा. बलवन्त सिंह ने उपस्थित सदस्यों के वैज्ञानिक चेतना अपनाने पर बल देते हुए कहा कि विज्ञान गेलिलियों के समय से ही समाज हित में बलिदान देने वाली कहानियों से जुड़ा है। अंधविश्वास से मुक्ति का मार्ग केवल वैज्ञानिक चेतना से ही संभव है। जोकि संविधान के अनुसार हमारा मौलिक कर्तव्य भी है। समिति सदस्य सुभाष तीतरम ने कहा कि अंधविश्वास व धार्मिक कट्टरता को बढ़ावा देता है जो समाज के भाईचारा को कमजोर करता है। सांस्कृति एकता के लिए जरूरी है कि समाज अंधविश्वास से मुक्त हो। तर्कशील सोसायटी के प्रदेशाध्यक्ष राजा राम हंडिआया ने कहा कि अंधविश्वासों से मुक्ति का अर्थ केवल विज्ञान से ही संभव है। विज्ञान जात-पात, अधश्रद्धा, रूढ़िवाद, धार्मिक कट्टरता से मुक्ति दिलाता है। समाज की सामाजिक समरसता एवं उन्नति के लिए जरूरी है। कि हम विज्ञान को जीने का जरिया ही नहीं जीने का ढंग भी बनाऐं।

इस सभा में राज्य भर से तर्कशील कार्यकर्ताओं के साथ ही विभिन्न जिज्ञासुओं ने भी भागीदारी की एवं नए सदस्यों ने बहुत सारे प्रश्नों से अपनी जिज्ञासा को शांत किया। इस सेमिनार के आयोजन के वरिष्ठ तर्कशील मेहर सिंह, मुकेश आदि ने अहम् भूमिका निभाई। सभी तर्कशील पदाधिकारियों ने सेमिनार के लिए स्थान उपलब्ध कराने पर स्कूली प्रशासन का धन्यवाद किया, सभा के दौरान मंच संचालन राज्य महासचिव गुरमीत सिंह ने किया।

★★

बाबाओं के काले कारनामे

तांत्रिक के साथ गई पत्नी तो जान दी

हलवारा (लुधियाना) हलवारा निवासी 36 वर्षीय मजदूर लखवीर सिंह ने वीरवार दोपहर जहरीली वस्तु निगल कर आत्महत्या कर ली। उसका शव लुधियाना बठिंडा मार्ग पर हलवारा एयरफोर्स स्टेशन के करीब बने मन्दिर के पास से बरामद किया गया।

मृतक के पास से एक सुसाइट नोट बरामद किया गया है। इसमें उसने अपनी मौत के लिए पत्नी सर्बजीत कौर और एक तांत्रिक को जिम्मेदार ठहराया है। थाना सुधार की पुलिस ने सुसाईट नोट के आधार पर पत्नी और उसके तांत्रिक मित्र के खिलाफ आत्महत्या के लिए मजबूर करने का मामला दर्ज कर लिया है। पुलिस का कहना है कि शीघ्र ही आरोपियों को काबू कर लिया जाएगा। जानकारी के अनुसार लखवीर की सर्बजीत कौर से 17 साल पहले शादी हुई थी। उनके दो बेटे और एक बेटी हैं। कुछ वक्त से सर्बजीत लुधियाना के एक तांत्रिक के प्रभाव में आ गई और अपने बच्चों के साथ पहले हलवारा में ही अलग रहने लगी। करीब एक माह से वह तांत्रिक के साथ ही रह रही थी। इसे लेकर लखवीर काफी परेशान रहने लगा था। उसने तांत्रिक और अपनी पत्नी को काफी समझाने की भी प्रयास किया, लेकिन बात न बनी। इसलिए उसने वीरवार को परेशानी की हालत में आत्महत्या कर ली। मृतक के पिता प्रीतम सिंह का कहना है कि दोपहर को वह परेशानी की हालत में घर से निकला। लेकिन काफी देर तक वापस न आने पर उसकी तालाश शुरू की, तो उसका शव मन्दिर के पास से मिला।

– अमर उजाला (2–5–14)

ज्योतिषी ने 'काले जादू की शिकार' बता की काली करतूत

मेलबर्न। आस्ट्रेलिया में एक भारतीय ज्योतिषी वेंकटेश कोडनडप्पा पर बलात्कार का आरोप लगा है। आरोप है कि उन्होंने एक महिला को काले जादू के शाप से ग्रस्त होने पर दावा करते हुए उसके साथ बलात्कार किया। अब वेंकटश बलात्कार और यौन शोषण के आरोपों का सामना कर रहे हैं। वेंकटेश पर आरोप है कि उन्होंने जनवरी में मेलबर्न के डांडेनीश उपनगरीय इलाके में स्थित अपने कार्यालय में अपनी किस्मत का हाल जानने आई महिला से बलात्कार किया।

– अमर उजाला (8–2–14)

दुराचार के प्रयास के दोषी ग्रंथी को पांच साल कैद

मोगा – जिला सेशन जज कर्मजीत सिंह को अदालत ने शुक्रवार को नाबालिग से दुराचार का प्रयास करने के अरोपी ग्रंथी को दोषो करार देते हुए उसे पांच साल और दस हजार रूपये जुर्माने की सजा सुनाई। जुर्माना न अदा करने पर उसे तीन माह अतिरिक्त सजा कांटनी होगी। थाना सदर पुलिस को 19 दिसंबर 2012 को दी शिकायत में नाबलिन के पिता ने बताया कि उसकी बारह साल की बेटी 19 दिसम्बर को टयूशन पढ़ने गई थी। इस दौरान वह गांव के गुरूद्वारे के पास से गुजर रहा था तो उसने गुरूद्वारे के अन्दर से किसी लड़की के चिल्लाने की आवाज सुनी। जब अंदर जाकर देखा तो ग्रंथी पतविन्द्र सिंह पुत्र मेहर सिंह वासी साफुवाला हाल आबाद दुन्ने के उसकी लड़की से दुराचार का प्रयास कर रहा था। लड़की के पिता पर पुलिस ने ग्रंथी के खिलाफ मामला दर्ज किया था।

–अमर उजाला (14–9–2013)

एमपी में एक और बाबा दुष्कर्म के आरोप में गिरफ्तार

सीहोर - मध्य प्रदेश के सीहोर जिले में एक स्वयंभू साधू द्वारा एक विवाहित महिला को बंधक बनाकर उसके साथ बलात्कार करने का सनसनीखेज मामला सामने आया है। पुलिस ने 65 वर्षीय स्वयंभू साधु महेन्द्र गिरी उर्फ टुन्नु बाबा को एक 24 वर्षीय विवाहित महिला को चार माह से ज्यादा समय तक बंधक बनाकर उसके साथ बलात्कार करने के मामले में गिरफ्तार किया है।

पुलिस की टीम ने मंगलवार को टुन्नु बाबा के नीलखंड गांव स्थित आवास पर छापा मारकर पीड़ित महिला को मुक्त कराया और आरोपी बाबा को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस ने बताया कि महिला का पति और सास भी आश्रम में ही रहते थे और दोनों बलात्कार के मामले में बाबा को सहयोग कर रहे थे।

उन्होंने बताया कि महिला की इसी साल मई में विश्राम बंजारा से शादी हुई थी। शादी के कुछ दिनों बाद से ही आरोपी बाबा महिला का शारीरिक शोषण कर रहा था। उन्होंने बताया कि आरोपी टुन्नु बाबा की गिरफ्तार कर उसके खिलाफ बलात्कार, अवैध तरीके से बंधक बनाने और आपराधिक धमकी देने का मामला दर्ज किया है।

- अमर उजाला (5-9-13)

भाभी के चरित्र पर था संदेह हत्या कर शव गटर में फेंका

जालंधर - होशियारपुर रोड पर गांव बोलिना के पास बने डेरा बाबा भगत राम जी के संचालक ने अपनी विधवा भाभी का कत्ल कर शव को गटर में फेंक दिया। विधवा भाभी अपने घर नहीं पहुंची तो परिवार वालों को शंका हुई। इसके बाद पुलिस ने बाबा से सख्ती से पूछताछ की तो पता चला कि उसने भाभी की हत्या कर शव को गटर में फेंक दिया है। एडीसीपी सिटी-1 नरेश डोगरा, एसीपी नार्थ सतीश मल्होत्रा की अनुवाई में टीम से शव को गटर से बराबद कर लिया। बाबा के खिलाफ हत्या का केस दर्ज कर लिया गया है।

पृथ्वी नगर की रहने वाली रणजीत कौर ने पुलिस की शिकायत की थी कि उसकी बहन 4 अप्रैल को अपने देवर बाबा मोहिन्दर सिंह के बुलावे पर उसके डेरे पर गई थी। बाद में वह घर नहीं आई और उसका मोबाइल फोन एक बस में पड़ा मिला, जिसके बाद उनको संदेह हुआ। एडीसीपी सिटी-2 नरेश डोगरा व एसीपी नार्थ सतीश मल्होत्रा ने इसकी जांच शुरू की। बाबा मोहिन्दर सिंह पहले से पुलिस ने जब सख्ती से पूछाताछ की तो उसने हत्याकांड का राज खोल दिया।

बाबा मोहिन्दर सिंह ने कहा कि उसकी भाभी कमलजीत कौर चरित्रहीन थी। बाबा मोहिन्दर सिंह ने बताया कि उसके भाई गुरमीत सिंह की मौत हो चुकी थी और उसकी शंका थी कि गुरमीत को जहर देकर मार डाला है। गुरमीत सिंह की मौत के बाद कमलजीत कौर कई लोगों के संपर्क में थी और वह उसकी काफी समझाता था। 4 अप्रैल को उसने कमलजीत कौर को प्रापटी के पैसे देने के बहाने बुलाया।

और उससे दोबारा बात की। इस पर दोनों में तकरार हो गई और मोहिन्दर सिंह ने उसका गला दबा दिया। जिसमें उसकी मौत हो गई। उसने बाद में कैंची से कमलजीत कौर के कपड़े काटे गटर में फैंक दिया। हालांकि पुलिस की यह आशंका है कि बाबा मोहिन्दर सिंह ने अपनी भाभी से जबरदस्ती करने की कोशिश की है। एडीसीपी सिटी नरेश डोगरा का कहना है कि पुलिस ने चिकित्सकों को पोस्टमार्टम् के दौरान दुराचार के बारे में भी रिपोर्ट मांगी है। बाबा मोहिन्दर सिंह का तर्क है कि उसने कपड़े इसलिए काट डाले ताकि कमलजीत कौर की पूरी देह गटर में ही गल सड़ जाए।

- अमर उजाला (8-4-14)

अंधविश्वास के चलते

घरेलू कलह शांत कराने आया तांत्रिक जेवर ले उड़ा।

घरेलू कलह का समाधान करने के नाम पर एक तांत्रिक ने धोखाधड़ी से एक परिवार से तीन लाख रुपये का सोना और 21 हजार रुपये की नकदी ठग ली। ठगी के बाद शास्त्री नगर दिल्ली निवासी तांत्रिक सोनू अहमद फरार हो गया। पुलिस ने इस संबंध में मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

जांच पड़ताल में पता चला कि तांत्रिक यहां पर कई वर्षो से रह रहा था और उसने कई अन्य परिवारों के साथ भी ठगी की है।

पुलिस के अनुसार कृपाल नगर निवासी हितेश ने शहर थाना में शिकायत दर्ज कराई कि शास्त्री नगर दिल्ली निवासी सोनू अहमद ने गृह क्लेश से मुक्ति दिलाने के नाम पर उसके घर पर अनुष्ठान किया और धोखधड़ी कर उससे तीन लाख रुपये का सोना व 21 हजार रुपये की नकदी ठगी है। हितेश ने बताया कि तांत्रिक ने उससे कहा था कि वह घर के जेवरात लेकर आए, जिन्हें शुद्ध किया जाएगा। बाद में उसने नकली जेवरात दे दिए। पुलिस ने हिते के बयान पर आरोपी सोनू के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया है। आरोपी तांत्रिक पहले खेखरा कोट में रहता था और इस दौरान उसने अन्य परिवारों से ठगी कर रखी है। पुलिस मामले की जांच पड़ताल कर रही है।

अमर उजाला, 12-12-13

झाड़-फूंक के बहाने छात्रा से दुराचार का प्रयास

सिरसा (ब्यूरो)। गांव झोरड़नाली स्थित डेरे के बाबा ने अपने साथियों के साथ मिलकर झाड़-फूंक के बहाने बीटेक की छात्रा से दुराचार का प्रयास किया। सदर थाना पुलिस ने छात्रा की शिकायत पर बाबा सहित दो को नामजद कर अन्य के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया है। पुलिस के मुताबिक गांव झोरड़नाली स्थित डेरा प्रेमदास के बाबा प्रेमदास झाड़ फूंककर पीलिया रोग से छुटकारा दिलाते हैं।

अमर उजाला (16-09-2013)

पटियाला में तांत्रिक और चेला धरा

पटियाला। एक व्यक्ति से उसकी घरेलू परेशानियां दूर करने का लालच देकर हजारों रूपये ठगने वाले एक ढोंगी तांत्रिक व उसके चेले को सिविल लाइन थाना पुलिस ने धरा है। दोनों आरोपियों को बुधवार को अदालत में पेश करके इनका एक दिन का पुलिस रिमांड हासिल किया गया है। मामले के जांच अधिकारी एएसआई देवी राम ने बताया कि एक प्राइवेट अस्पताल में काम करने वाले विकास कुमार ने सिविल लाइन पुलिस के पास बयान दिया है कि उसे टीवी पर तांत्रिक आसक अली का विज्ञापन देखा कि वह हर तरह की परेशानी दूर कर देता है।

अमर उजाला 26-09-2013

★★

कौन-सा मार्ग ?

इंगरसोल

पिछले अंक का शेष.....

मैं आपको एक कहानी सुनाऊं, जो इस प्रसंग के ठीक अनुकूल है। एक संत की हड्डियों पर बना हुआ एक मठ था और उस पर अधिकार था एक बूढ़े साधु का। इन हड्डियों में रोगी को दूर भगाने की सामर्थ्य बताई जाती थी। वे इस ढंग से रखी थी कि एक बिल में से हाथ डालकर भक्त-गण उनका स्पर्श कर सकते थे। अनेक रोगों के बहुत से रोगियों ने आ-आकर उनका स्पर्श कियाथा। अनेकों ने यह समझकर बहुत-सा धन छोड़ गए थे। एक दिन उस बूढ़े साधु ने अपने शिष्य को इस प्रकार संबोधन किया- ''प्रियपुत्र, अपना व्यापार ठीक नहीं चल रहा है। मैं अकेला ही सभी आगन्तुकों से निपट सकता हूं। तुम्हें अपने लिए कोई दूसरी जगह देखनी होगी। मैं तुम्हें सफेद गधा, कुछ धन और अपना आशीर्वाद देता हूं।''

इस प्रकार वह तरूण उस गधे पर सवार हो, अपने रास्ते चला गया। कुछ दिनों में उसका पैसा समाप्त हो गया और सफेद गधा मर गया। उस तरूण के दिमाग में विचार आया। उसने उस गधे को सड़क के किनारे गाड़ दिया और हर यात्री के सामने हाथ फैलाकर वह बड़ी गम्भीर मुद्रा में कहने लगा- ''मैं आपसे प्रार्थना करता हूं कि आप मुझे इस निष्पाप की हड्डियों पर एक छोटा-सा मंदिर बनाने के लिए कुछ पैसा दें।''

उसे ऐसी सफलता मिली कि वह एक मंदिर बना सका और हजारों लोग उस निष्पाप की हड्डियों का स्पर्श करने के लिए आने लगे। तरूण धनी हो गया। अनेक सहायक नौकर रख लिए और बड़े ठाट-बाट से रहने लगा।

एक दिन उसके मन में आया कि अपने पुराने गुरू से मिल आए। अपने साथ बहुत से नौकर-चाकर ले, वह अपने पुराने मठ की ओर चला। जब वह वहां पहुंचा तो वृद्ध साधु दरवाजे पर बैठा था। बड़े आश्चर्य से उसने उस तरूण और उसके पीछे-पीछे आने वाले लोगों की ओर देखा। तरूण नीचे उतरा और अपना परिचय दिया। वृद्ध साधु बोला-कहां रहे? अपनी सफलता की कहानी तो सुनाओ।

तरूण ने उत्तर दिया- वृद्धावस्था मूर्ख होती है, तरूणाई में सूझ-बूझ रहती है। मैं तुम्हे सब सुनाऊंगा। किन्तु एकांत होने की प्रतीक्षा करो। उस रात तरूण ने अपनी सब कहानी सुनाई - किस प्रकार वह गधा मरा, कैसे उसे गाड़ दिया गया, कैसे उस 'निष्पाप' की हड्डियों पर पैसा मांग-मांगकर मंदिर बनाया और किस प्रकार उन हड्डियों से जो लोग चंगे हुए उन्होंने उसे पैसा दिया।

जब उसने अपनी राम कहानी कह सुनाई, तो उसके चेहरे पर संतोष की हंसी थी। उसने फिर दोहराया- वृद्धावस्था मूर्ख होती है, तरूणाई में सूझ-बूझ रहती है। वृद्ध साधु ने अपना कांपता हुआ हाथ, अपने शिष्य के सिर पर रखा और बोला इतने बे-सबर मत बनो। बेटा, यह मठ जिसमें तुम्हारा बचपन गुजरा, जिसमें तुमने इतने चमत्कार देखे, इतने रोगी चंगे होते देखे, तुम्हारे गधे की मां की ही पवित्र हड्डियों पर बना था।

संसार भर के पवित्र धर्म-ग्रंथों और धर्मो की व्याख्या दो तरह से हो सकती है। एक तो यह कहकर हो सकती है कि हमारे पवित्र धर्म-ग्रंथ पहुंचे हुए आदमियों द्वारा लिखे गए थे

और हमें अपने धर्म का इलहाम परमात्मा द्वारा हुआ। दूसरे यह कहकर हो सकती है कि सभी ग्रंथ आदमियों द्वारा लिखे गए। प्रकृति से बाहर किसी भी शक्ति द्वारा उन्हें कोई सहायता नहीं मिली और सभी धर्म प्राकृतिक ढंग पर उत्पन्न हुए।

हम देखते है कि दूसरे देशों के लोगों और जातियों के पास भी पवित्र धर्म-ग्रंथ हैं, पैगम्बर हैं, पुरोहित हैं, हम यह भी देखते हैं कि उनके पवित्र धर्म-ग्रंथ ऐसे आदमियों द्वारा लिखे गये थे, जिनमें उनकी अपनी जाति के संस्कार तथा अनोखी बातें विद्यमान थी और उन धर्म-ग्रंथो की उत्पन्न करने वाली जातियों की विशेषता है।

ईसाई इस बारे में पूर्णतया संतुष्ट हैं कि उनके पुराने और नए प्रवचन को छोड़कर शेष सभी कथित पवित्र धर्म-ग्रंथ आदमियों की रचना हैं और उनके इलहामी होने की बात सर्वथा बेहूदा है। इसलिए उनका विश्वास हैं कि यहूदी धर्म और ईयाइयत के अतिरिक्त शेष सभी धर्म आदमियों ने बनाए हुए हैं। दूसरे धर्म वालों की मान्यता है कि उनका अपना धर्म परमात्मा द्वारा भेजा गया, इलहामी धर्म है और यहूदी धर्म तथा ईसाइयत सहित शेष सारे धर्म आदमियों के रचे हुए धर्म हैं। सभी का कहना ठीक है और सभी का गलत। जब वे कहते हैं कि दूसरे धर्म आदमियों की रचनाएं हैं तो वे ठीक है और जब वे कहते हैं कि उनके अपने धर्म इलहामी हैं, तो वे गलत हैं।

अब हम जानते हैं कि सभी जातियों का कोई न कोई धर्म रहा है। वे ऐसी आत्माओं के अस्तित्व में विश्वास करते रहे हैं जो भेंट या प्रार्थनाओं में संतुष्ट हो सकती थी। अब हम जानते हैं कि प्रत्येक धर्म के मूल में, प्रत्येक पूजा के मूल में भय का रक्तरहित चेहरा है। अब हम जानते हैं कि सभी धर्म और सभी पवित्र पुस्तकें प्राकृतिक ढंग से उत्पन्न हुई हैं- सभी के मूल में अज्ञान है, भय और वंचना है। अब हम जानते हैं कि भेंट, यज्ञ और प्रार्थनाएं सभी बेकार हैं। न वे कभी किसी परमात्मा के पास पहुंची और न किसी परमात्मा ने उन्हें कभी सुना और न उन्हें पूरा किया।

कुछ वर्ष पहले प्रार्थनाएं युद्धों की हार-जीत का निर्णय करती थी और यह समझा जाता था कि परमात्मा के दरबार में पुरोहितों का विशेष प्रभाव होने के कारण वे किसी को भी विजयी बना सकते हैं। अब कोई बुद्धिमान आदमी किसी प्रार्थना से कुछ भी आशा नहीं लगता। वह जानता है कि प्रकृति बिना आदमी की इच्छा-अनिच्छा की चिंता किए अपने रास्ते चलती हैं। बादल तैरते रहते हैं, हवाएं चलती रहती हैं, वर्षो होती है, सूर्य चमकता है और इन्हें मानव जाति की इच्छा-अनिच्छा से कुछ लेना-देना नहीं, तो भी लाखों करोड़ो आदमी अब भी प्रार्थना करते रहते हैं। वे अब भी किसी परमात्मा से सहायता की आशा लगाए रहते है और सोचते हैं कि कोई न कोई उनके रोगों और दुर्घटनाओं से रक्षा करेगा। प्रति वर्ष पादरी-पुरोहितगण एक ही प्रकार के प्रार्थना पत्र देते रहते हैं, एक ही तरह की चीजों के लिए मांग करते रहते हैं। यद्यपि इसका कभी कुछ परिणाम नहीं निकलता, तो भी उनका यह क्रम जारी रहता है।

जब कभी भले आदमी कोई अच्छी बात करते हैं, तो ये पादरी-पुरोहित उसका श्रेय परमात्मा को देते हैं, किन्तु जब बुरी बातें होती हैं तो वे उन बुरी बातों के करने वालों को दोष देते हैं और उस समय परमात्मा को दोषी ठहराना भूल जाते हैं।

प्रार्थना करना एक कारोबार बन गया है, एक पेशा, एक व्यापार। एक धर्मोपदेशक इतना

प्रसन्न कभी नहीं होता, जितना लोगों के सामने प्रार्थना करने के समय। उनमें से अधिकांश परमात्मा से अत्यधिक परिचित हैं। यह जानते हुए भी कि वह सब कुछ जानता है, वे उसे जाति की आवश्यकताओं और लोगों की इच्छाओं से परिचित कराते हैं और बताते है कि वह क्या करे और कब करे। वे उसके अभिमान को अपील करते हैं और प्रार्थना करते हैं कि वह कुछ बातें अपनी शान की रक्षा के लिए करे। वे कभी-2 असंभव बातों के लिए प्रार्थना करते हैं। मैंने वाशिंगटन के प्रतिनिधि-भवन में एक धर्मोपदेशक को ऐसी बात के लिए प्रार्थना करते सुना, जिसे वह स्वयं भी असंभव मानता होगा। उसने चेहरे पर बिना किसी प्रकार के परिवर्तन के, बिना किसी प्रकार की मुस्कराहट के वैसे ही गांभीर्य के साथ जैसा श्मशान में होता है, कहा-हे परमात्मा, मैं तुमसे प्रार्थना करता हूं कि कांग्रेस को बुद्धिमानी दो। संभव है कि ये धर्मोपदेशक वास्तव में समझते हों कि उनकी प्रार्थनाओं से किसी को कुछ लाभ होता है और यह भी संभव है कि मेढ़क यह समझते हों कि उनके टर्राने से वर्षा ऋतु आती है।

जो विचारवान हैं, वे अब यह जान गए है कि सभी पवित्र पुस्तकें मनुष्यों द्वारा बनाई गई हैं। प्रकृति से उपर किसी शक्ति से कभी इलहाम नहीं उतरा है,जितनी भविष्यवाणियां हैं, वे या तो असत्य हैं यह घटनाओं के बाद में की गई हैं। न तो कभी कोई चमत्कार हुआ, न होगा। किसी परमात्मा को न आदमी की पूजा करनी चाहिए और न सहायता, किसी प्रार्थना ने आज तक आकाश से न पानी की एक बूंद रूकी और न कभी किसी को भोजन दिया। किसी प्रार्थना ने न कभी किसी ज्वालामुखी पर्वत को ठण्डा किया। कोई प्रार्थना कभी किसी निर्दोष की ढाल नहीं बनी। किसी प्रार्थना से कभी किसी पीड़ित को सहायता नहीं मिली। किसी प्रार्थना ने कभी किसी कारागार के दरवाजे नहीं खोले। किसी प्रार्थना ने कभी किसी गुलाम को बंधनमुक्त नहीं किया, भले आदमियों की हथकड़ियों को नहीं खोला और न कभी किसी चिता की आग बुझाई।

अब हम यह जानते हैं कि हम एक प्राकृतिक संसार में रहते हैं। ये देवता, शैतान और परमात्मा के पुत्र सब कपोल-कल्पनाएं हैं। हमारे मजहब और हमारे देवता-गण भी बहुत करके दूसरी जातियों के मजहब और देवता-गण के ही समान हैं; और एक असत्य आदमी का पत्थर का देवता ठीक वैसे ही प्रार्थनाओं को सुनता और रक्षा करता है, जैसे (ईसाइयों का) पिता, पुत्र और पवित्र-आत्मा)

सदाचार के संबंध में भी दो सिद्धान्त हैं। एक सिद्धान्त है कि नैतिक आदमी बिना यह सोचे कि आज्ञा उचित है या नहीं परमात्मा की आज्ञाओं का पालन करता है। वह मानता है कि परमात्मा की इच्छा ही सदाचार का मूल स्त्रोत है। यह सोचता है क्योंकि परमात्मा ने मना किया है। इसलिए यह काम अनीतिपूर्ण है, यह नहीं कि अनीतिपूर्ण होने से परमात्मा ने मना किया है। यह सिद्धान्त आदमी को विचार करने के लिए नहीं कहता; किन्तु आज्ञा-पालन के लिए कहता है। यह तर्क को अपील नहीं करता, किन्तु दण्ड के भय और पुरस्कार की आशा को आगे रखता है। परमात्मा एक राजा है, जिसकी इच्छा ही न्याय है और आदमी उसके दास तथा गुलाम हैं।

अनेक लोग मानते है कि ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास किए बिना सदाचार असंभव है और पृथ्वी पर से नैतिकता का लोप हो जाएगा।

यह समझा गया है कि 'श्री भगवानोवाच' के साथ यह बहूदा सिद्धान्त तर्क से स्वतंत्र और उससे उपर की वस्तु है।

दूसरा सिद्धान्त है कि पुण्य और पाप वस्तुओं के स्वरूप में ही निहित है। कुछ कार्य है जो आदमी के सुख को बनाए रखते हैं अथवा उसे बढ़ाते हैं और दूसरे कार्य चिन्ता तथा दुख को जन्म देने वाले हैं। जितने कार्य करने से सुख पैदा होता है। वे सब पुण्य हैं और शेष सभी कार्य या तो पाप अथवा न पुण्य न पाप। पुण्य और पाप किसी तथाकथित परमात्मा से इल्हाम द्वारा प्राप्त नहीं हुए हैं, किन्तु आदमी ने ही अपनी समझ और तजुर्बो से इनका पता पाया है। सदाचार में न कुछ चमत्कार की बात है और न किसी प्रकार की प्रकृति से परे होने की। सदाचार को परलोक अथवा किसी अनन्त शक्ति से भी कुछ लेना-देना नहीं। यह इसी लोक मे जो हमारा आचरण है, उस पर लागू होता है और उस आचरण का हमारे ऊपर तथा अन्य लोगों पर जो प्रभाव पड़ता है, उसी से इसका स्वरूप निश्चित होता है।

इस संसार में परिश्रम द्वारा ही लोग अपनी इच्छाओं की पूर्ति करने के लिए मजबूर हैं। उद्योग एक आवश्यकता है। इसलिए जो काम करते हैं, उनकी चुराने वालों से स्वाभाविक शत्रुता है।

चोरी को अप्रिय बनाने के लिए किसी परमात्मा के इलहाम की आवश्यकता न थी। स्वभाव से ही मनुष्यों को यह अप्रिय है कि उन्हें किसी तरह की हानि पहुंचे, उनका अंग-भंग हो अथवा उनका प्राण-हरण हो। इसलिए हर समय और हर स्थान पर उन्होंने स्व-रक्षण के प्रयत्न किए हैं।

आदमियों के मन में स्व-रक्षा का भाव उत्पन्न करने के लिए किसी परमात्मा के इलहाम की आवश्यकता न थी। आक्रमण होने पर स्व-रक्षा की भावना उतनी ही स्वाभाविक है, जितनी भूख लगने पर खाने की।

किसी परमात्मा की आज्ञा की अनुकूलता अथवा प्रतिकूलता के हिसाब से किसी कर्म का शुभाशुभ निर्णय करना सीधा-सादा मिथ्या-विश्वास है, परिणामों को किसी भी कर्म की कसौटी पर मानना वैज्ञानिक है और तर्कानुसंगत है।

परा-प्राकृतिक सिद्धान्त के अनुसार कर्मो के स्वाभाविक परिणाम विचारणीय हैं। निषिद्ध होने से कर्म पाप बन जाते हैं और अनुज्ञा होने से पुण्य है। कैथोलिक मान्यताओं के अनुसार शुक्रवार को मांस खाना एक ऐसा पाप कर्म है, जिसका अनन्त-दण्ड मिलना चाहिए। इतना होने पर भी परिणाम की दृष्टि से शुक्रवार को मांस खाने का परिणाम किसी भी दूसरे दिन मांस खाने के परिणाम से भिन्न नहीं हो सकता। इसलिए सभी मजहब शिक्षा देते हैं कि अविश्वास एक अपराध है, वस्तुओं की स्वाभाविक प्रकृति में नहीं, किन्तु परमात्मा की इच्छा में।

यह कहने की आवश्यकता नहीं कि यह बात बेहूदा और गधापन है। यदि कोई अनन्त शक्तिवाला परमात्मा हो भी, तो भी कर्म प्राकृतिक दृष्टि से उचित है, वह उसे अनूचित नहीं ठहरा सकता। वह किसी ऐसे कर्म को जिसके परिणाम अशुभ हों, शुभ नहीं बन सकता। एक अनन्त शक्ति वाला परमात्मा भी किसी यथार्थ घटना को बदल नहीं सकता। उसके बावजूद किसी चक्र की परिधि और व्यास में वही संबंध रहेगा।

एक वस्तु का दूसरी वस्तु से, गति का गति से, क्रिया का क्रिया से तथा कारण का कार्य से, जो भूत कहलाता है। उस क्षेत्र में तथा जो मन कहलाता है, उस राज्य में वैसा ही निश्चित, वैसा ही अपरिवर्तनीय संबंध है, जैसा कि व्यास और परिधि का संबंध है।

एक अनन्त शक्ति वाला परमात्मा इन आधारों को बदल नहीं सकता, कर्मो के स्वाभाविक

परिणामों को घटा-बढ़ा नहीं सकता।

इस संसार में न कुछ अचानक होता है, न कुछ जादू है, न ही चमत्कार। हर घटना, हर विचार और स्वप्न के पीछे उचित, स्वाभाविक और आवश्यक कारण रहता है।

किसी तथाकथित परमात्मा की इच्छा को सदाचार का आधार बनाने के प्रयत्न ने संसार को दुख और पाप से भर दिया है, करोड़ों मस्तिष्कों में प्रज्वलित तर्क के प्रदीप को बुझा दिया है और असंख्य तरीकों से मानवता की प्रगति में बाधा उपस्थित कर दी है।

अब समझदार आदमी यह जान गए है कि यदि कोई अनन्त शक्ति वाला परमात्मा है, तो आदमी किसी भी तरह उसके सुख को घटा-बढ़ा नहीं सकता। वे जानते हैं कि आदमी केवल जीवित प्राणियों के विरुद्ध अपराध कर सकता है। एक परिमित शक्ति वाले प्राणी का अत्यन्त शक्ति वाले परमात्मा के विरुद्ध अपराध कर सकना अत्यन्त असंभव है।

हजारों वर्षो तक आदमी असंभव में विश्वास करता रहा है और उसके पीछे पड़ा रहा है। रसायनशास्त्र में वह किसी ऐसी वस्तु की खोज में व्यस्त रहा है कि जो दूसरी सामान्य धातुओं को सोने में बदल दें। लार्ड बैकन भी इस बेहूदगी में विश्वास करता था। अनेक शताब्दियों तक हजारों आदमी जस्त और लोहे की प्रकृति को बदलने का प्रयत्न करते रहे कि वह अन्त में सोना बन सके। उन्हें चीजों के वास्तविक स्वभाव की कोई कल्पना न थी। वे समझते थे कि चीजें किसी न किसी प्रकार के जादू से पैदा हुई हैं, और उसी प्रकार के जादू से बदलकर कोई दूसरी चीजें बनाई जा सकती हैं। वे सभी परा-प्राकृतिक में विश्वास करने वाले थे। इसी प्रकार मशीन-निर्माण में भी मनुष्य असंभव की खोज में लगे रहे । वे लगातार गति में विश्वास करते थे और वे ऐसी मशीन बनाना चाहते थे, जो स्वयं बिना किसी साधन के लगातार चलती रहे।

हजारों बुद्धिमान आदमियों ने अपना जीवन ऐसी मशीनों के आविष्कार में व्यर्थ नष्ट कर दिया, जो किसी न किसी आश्चर्यजनक तरीके पर गति को जन्म दे सकें। वे यह नहीं जानते थे कि गति निरन्तर विद्यमान रहती है। न यह उत्पन्न ही की जा सकती है और न यह नष्ट ही की जा सकती है। वे यह नहीं जानते थे कि जिस मशीन में लगातार गति रहेगी वह अपने में एक विश्व होगी, अथवा इस विश्व में सर्वथा स्वतन्त्र। उसमें जो घर्षण नामक शक्ति रहेगी, वह बिना किसी भी प्रकार की हानि के धकेलने वाली शक्ति में परिणत हो जाएगी अर्थात् मशीन स्वयं उस मूल-शक्ति की जनक बन जाएगी, जिस शक्ति से वह चलेगी। इन सब बेहूदगियों के बावजूद ऐसे आदमी, जिन्हें उनके साथी पंडित और समझदार समझते रहे शताब्दियों तक लगातार गति के महान सिद्धान्त के आविष्कार में लगे रहे।

हमारे पूर्वजों ने तारागण का अध्ययन किया। वे समझते थे कि उनके अध्ययन से हम जातियों और व्यक्तियों के भाग्य तथा जीवन का पता पा सकेंगे। सूर्य-ग्रहण तथा चन्द्र ग्रहण, पुच्छल तारे, तारागणों के आपसी संबंध, भाग्य अथवा भाग्य के पूर्व-चिन्ह और कारण समझे जाते थे। फलित-ज्योतिष एक विज्ञान माना जाता था, और जो इस शास्त्र के ज्ञाता थे, उनकी पूछताछ सेनापति करते थे, कूटनीतिज्ञ करते थे और बड़े-बड़े महाराजा करते थे। इस तथाकथित विज्ञान के अध्ययन में जो समय का अपव्यय हुआ, जो प्रतिभा का नाश हुआ, उसकी अतिशयोक्ति हो ही नहीं सकती। जो लोग फलित -ज्योतिष में विश्वास करते थे; वे समझते थे कि वह एक परा-प्राकृतिक

संसार में रहते हैं-एक ऐसे संसार में जिसमें कार्य-कारण का आपस में कोई सबंध नहीं, जिसमें सभी घटनाएं जादू के प्रभाव से होती है।

अभी उन्नीसवीं शताब्दी की समाप्ति पर भी लाखों आदमी है, जो गधों की जन्म-पत्रियां देखकर भी अपनी जीविका चलाते हैं।

मशीन-निर्माताओं का निरन्तर गति का सिद्धान्त, रसायन-शास्त्र का पारसमणि की खोज में भटकाना तथा तारागण के संबंध में भविष्यवाणियां करना-ये सभी बातें प्रकृति-संबंधी उसी अज्ञान में से पैदा हुई हैं, जिस अज्ञान ने धर्मोपदेशकों को एक ऐसा कारण(परमात्मा) की कल्पना करने पर मजबूर किया कि जो स्वयं तो सभी कारणों तथा कार्यों का कारण है, किन्तु उसका कोई कारण नहीं।

धर्मोपदेशकों को दुराग्रह रहा है कि प्रकृति से परे कुछ है और वह 'कुछ' ही प्रकृति को उत्पन्न करने वाला तथा पालन करने वाला है।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि जिस प्रकार पारसमणि के अस्तित्व का हमारे पास कोई प्रमाण नहीं, उसी प्रकार हमारे पास उस 'कुछ' के अस्तित्व का भी प्रमाण नहीं है।

यदि कोई मशीन-निर्माता अब निरन्तर-गति में विश्वास करता है, तो वह पागल है, इसी प्रकार यदि कोई रसायनशास्त्रज्ञ एक धातु को दूसरी में बदल देता है, तो वह पागल है; यही हाल ईमानदार ज्योतिषी का है और कुछ वर्षों में यही बात सच्चाई के साथ ईमानदार धर्मोपदेशकों के बारे में कही जा सकेगी।

हमारे अनेक पूर्वज निरन्तर तरुण बने रह सकने के स्त्रोत में विश्वास करते थे और उसकी खोज में लगे रहे। उसका विश्वास था कि एक वृद्ध आदमी झुककर यदि इस स्त्रोत से पानी पी ले, तो उसके सफेद बाल काले हो जाएं, उसके मुंह की झुर्रिया उड़ जाएं, उसकी धुंधली आंखे चमक उठें और उसका दिल तारुण्य की गर्मी से धड़कने लग जाए।

वे परा-प्राकृतिक के विश्वासी थे। उन्हें चमत्कारों में विश्वास था। उन्हें कोई बात इतनी संभव नहीं मालूम देती थी, जितनी कि असंभव बात।

बहुत से आदमी तर्क के स्थान पर नामों का प्रयोग करते है। उन्हें प्रसिद्ध मृत-पुरुषों के शिष्य कहलाने में बड़ा संतोष मिलता है। प्रत्येक दल, प्रत्येक पार्टी के पास महान पुरुषों की एक सूची रहती है और वे जब कभी अपने किसी मत अथवा सिद्धान्त के बारे में विवाद करते हैं, तो वे आपस में इन्हीं महापुरुषों के नाम-एक दूसरे पर फेंकते हैं।

लोग बाइबल को इलहामी और ईसा को परमात्मा का पुत्र सिद्ध करने के लिए सैनिकों, कूटनीतिज्ञों और राजाओं को गवाही में पेश करते हैं। इसी प्रकार वे स्वर्ग और नरक के अस्तित्व की भी स्थापना करते हैं। उनके किसी एक सिद्धान्त का विरोध कीजिए तो आपको तुरन्त बताया जाएगा कि आईजक न्यूटन दूसरे मत का था और तुमसे पूछा जाएगा कि क्या तुम न्यूटन से भी बढ़कर हो? हमारे अपने देश के पादरी-पुरोहित अपने बेहूदा मतों की स्थापना के लिए वेबस्टर तथा दूसरे सफल राजनीतिज्ञों की सम्मितियां उद्धृत करते हैं, मानो उनकी सम्पतियां ही कोई प्रमाण हों।

ये तथाकथित महापुरुष अनेब बातों में बड़ी गलतियां करते रहे हैं। लार्ड बैकन अपने जीवन के अंतिम दिन तक यह मानता रहा कि सूर्य और तारागण इस छोटी पृथ्वी के चारों ओर घूमते हैं। मॅथ्यू हेल का दृढ़ विश्वास था कि जादू कर सकने वाली स्त्रियां होती हैं। जॉन-वेजली का

विश्वास था कि भूंकप पाप का परिणाम है और यदि प्रभु ईसा पर ईमान ले आया तो उससे बचा जा सकता है।

महापुरुषों की मूर्खता और पागलपन पर बड़े-बड़े ग्रंथ लिखे जा सकते हैं।

कुछ ही वर्ष पहले जो सच्चे महापुरुष थे, उन्हें यातनाएं दी गई, कैद किया गया या जला दिया गया। इस प्रकार धर्म महापुरुषों को अपनी ओर रखने में सफल हुआ।

असल में यह बता सकना असंभव है कि महापुरुष वास्तव में क्या सोचते थे। हम केवल यह जानते हैं कि उन्होंने क्या कहा। इन महापुरुषों को अपने परिवारों का पालन-पोषण करना था, कारागार से डर लगता था और वे नहीं चाहते थे कि उन्हें जलाया जाएं। इसलिए यह संभव है कि वे एक तरह से सोचते हों और दूसरी तरह से बात करते हों।

पादरी-पुरोहितों ने इस आदमियों को कहा, ''हमारे मत के साथ एकमत बनो, हमारी ओर से बोलो; अन्यथा हम तुम्हें यातना दे देकर मार डालेंगे।'' तब पादरी-पुरोहितों में लोगों को संबोधान किया और चिल्लाकर कहा-''जरो सुनो, महापुरुष क्या कहते हैं।''

कुछ वर्षो से वाणी की स्वतन्त्रता जैसी चीज ने जन्म लिया है और बहुत से आदमियों ने अपने विचारों को प्रकट किया है। अब धर्मोपदेशक लोग पहले की तरह नामो की दुहाई नहीं देते। जो वास्तव में महान हैं वे उनकी ओर नहीं हैं, आधुनिक विचार के नेता ईसाई नहीं हैं। अब अविश्वासी और नास्तिक भी बड़े-बड़े नामों की दुहाई दे सकते हैं-ऐसे नाम जो मानसिक विजय के द्योतक हैं। हम बोल्ट, हैल्महोल्टाज, हैकल, हक्सले, डारविन, स्पैंसर, टैण्डल तथा अनेक दूसरे महान व्यक्ति विचार के संसार में खोज और आविष्कार का प्रतिनिधित्व करते हैं। ये लोग विचारक थे और हैं तथा इनमें अपने विचारों को प्रकट करने का साहस था और है। वे न तो पादरी-पुरोहितों की गुड्डियां थे, न हैं और न प्रेतों के कांपते हुए पुजारी।

अनेक वर्षों से अमेरिकी कालेजों के अधिकांश सभापति जाति के मानसिक विकास को रोकने के पवित्र कार्य में लगे रहे हैं। वे यहां तक सफल हुए हैं कि उनके शिष्यों से कोई भी न तो बड़ा वैज्ञानिक हुआ है और न है। अपने मत का समर्थन करने के लिए अब पुरान-पंथी लोग जीवितों के नाम नहीं लेते। उनके सभी गवाह कब्रों में हैं। सभी महान ईसाई मर गए हैं।

आज हम तर्क चाहते हैं, नाम नहीं; दलील चाहते हैं, सम्प्रतियां नहीं। किसी व्यक्ति अथवा धर्म का अंधानुकरण पतन का द्योतक हैं। तर्क से शामिल होने से बढ़कर श्रेष्ठतर कुछ नहीं।सत्य द्वारा पराजित होने का मतलब है विजयी होना। अनुकरण करने वाला आदमी गुलाम है। विचार करने वाला स्वतन्त्र है।

हमें याद रखना चाहिए कि अधिकांश मनुष्य अपनी परिस्थिति से शासित रहे हैं। तुर्किस्तान में बहुत से समझदार आदमी मुहम्मद के अनुयायी हैं। वे कुरान के झूले में झूले थे। उन्हें अपनी शक्ल-सूरत की तरह अपनी धार्मिक सम्मतियां भी अपने माता-पिता से मिलीं। धर्म के संबंध में उनके मत का कोई विशेष मूल्य नहीं। अपने देश के ईसाईयों के बारे में भी यही कहा जा सकता है। उनके विश्वास, विचार और खोज के परिणाम न होकर परिस्थिति के परिणाम हैं। सभी मजहब अज्ञान के परिणाम हैं और असभ्यता की अंधेरी रात्रि में उनका बीजारोपण हुआ है।

शेष अगले अंक में जारी......

पिछले अंक का शेष–

ईसाई धर्म और हिंसा

गीतेश शर्मा

आस्ट्रिया के हाप्सबर्ग (Hapsburg) परिवार के शासक पूरे जर्मनी पर अधिकार की आकांक्षा रखते थे। उनकी इस महत्त्वाकांक्षा की पूर्ति में प्रोटेस्टेन्ट सबसे बड़ी बाधा थे।

आस्ट्रिया के शासन के विरूद्ध बोहेमिया के प्रोटेस्टेन्ट ने सन् 1618 में विद्रोह किया। सन् 1620 में यह दबा दिया गया। पराजय के बावजूद बोहेमिया के कुछ प्रोटेस्टेन्ट राजकुमार आस्ट्रिया के विरूद्ध लड़ते रहे। सन् 1625 में डेनमार्क प्रोटेस्टेन्ट सम्प्रदाय के पक्ष में युद्ध में शामिल हो गया। स्वीडेन के गुस्तावुस एडोल्भुस (Gustavus Adolbhus)भी प्रोटेस्टेन्ट की ओर से युद्ध में कूद पड़े और उत्तर जर्मनी पर चढ़ाई कर दी। सन् 1631 में कैथोलिक कमांडर तिल्ली ने मैगडेबर्ग (Magdeburg) पर चढ़ाई कर दी। सन् 1632 में कमांडर तिल्ली को पराजय का सामना करना पड़ा और उसकी मृत्यु हो गई। इसी साल स्वीडेन का गुस्तावुस भी मारा गया। स्वीडेन की पराजय के बाद फ्रांस के प्रधानमन्त्री रिचल्यू (1585–1642) की पहल से फ्रांस भी इस तीस वर्षीय युद्ध में सन् 1635 में शामिल हो गया और आस्ट्रिया समर्थित स्पेन के विरूद्ध युद्ध में उसने हिस्सा लिया एवं कई मोर्चो पर उनको पराजित किया। जर्मन जनरल वालेन्स्तेन की हत्या कर दी गई।

अन्त में सन् 1648 में समझौता हुआ जो वेस्ट फालिया के समझौते (Treaty of West Phalia) के नाम से जाना जाता है। इस समझौते के तहत यह तय हुआ कि हर किसी को अपने सम्प्रदाय, मत को मानने की पूर्ण स्वतन्त्रता है।

तीस वर्षीय युद्ध में फ्रांस और स्वीडेन को लाभ हुआ। फ्रांस ने अलसास तथा स्वीडन ने बाल्टिक राज्यों पर अधिकार कर लिया। जर्मनी घाटे में रहा। इसके जन–बल की हानि तो हुई ही, अर्थ–व्यवस्था भी जर्जर हो गई। मध्य यूरोप के देश तबाह हो गए। लाखों की संख्या में लोग मारे गए और सम्पत्ति का नुक्सान हुआ सो अलग। यहाँ भी हम देखते हैं कि राजााओं ने अपने राज्य विस्तार के लिए युद्ध किया और जामा धर्म का पहनाया गया।

चर्च के आपसी मतभेदों का असर इंग्लैंड पर भी पड़ा और वहाँ भी स्वतन्त्र चिन्तकों, सुधारवादियों का व्यापक स्तर पर उत्पीड़न किया गया। शारीरिक चातनाएँ दी गईं, जिन्दा जलाया गया। पन्द्रहवीं सदी में जॉन विक्लिफ के अनुयायी लोलार्डपन्थियों को अमानवीय यातनाओं का शिकार होना पड़ा। उनका अपराध यह था कि उन्होंने युद्ध और मृत्यु–दंड का विरोध किया और उनकी निन्दा की। उन्होंने कहा कि चर्च द्वारा अर्जित बेशुमार सम्पत्ति का जनकार्यो के लिए उपयोग किया जाए। सन् 1401 में लोलार्डपन्थियों को जिन्दा जलाने का अधिनियम पारित किया गया, फलस्वरूप वर्षो तक लोलार्डपन्थी जिन्दा जलाए जाते रहे। सन् 1414 में लन्दन में लोलार्डपन्थियों ने राज्य और चर्च के विरूद्ध असफल विद्रोह किया, जिसे क्रूरतापूर्वक कुचला गया।

यह जिक्र किया जा चुका है कि हेनरी अष्टम ने अपने विवाह को लेकर निजी स्वार्थ के लिए सन् 1529 में रोमन चर्च को अपदस्थ कर स्वयं को चर्च का मुखिया घोषित किया था। सन् 1534 में उसने रोमन चर्च से अलग चर्च ऑफ इंग्लैंड की स्थापना की। उसके बाद से कैथोलिकों पर अत्याचार किए जाने लगे। सन् 1547 में हेनरी अष्टम के पुत्र एडवर्ड द्वितीय ने प्रोटेस्टेन्ट के सिद्धान्तों को स्वीकार

किया। तब से इंग्लैंड में प्रोटेस्टेन्टों एवं कैथोलिकों के बीच मतभेद चला आ रहा है जिनकी परिणति हिंसात्मक युद्धों में होती रही है। स्कॉट की रानी मैरी (1542-87) ने पोप के आशीर्वाद से इंग्लैड में कैथोलिक चर्च को पुनः स्थापित करने की चेष्टा की। उसे इंग्लैंड की राजगद्दी पर बैठाने के लिए रोमन कैथोलिक चर्च ने कई षड्यन्त्र किए। पर रानी एलिजाबेथ प्रथम (1533-1603) ने उसे बन्दी बनाया और 1587 में उसके आदेश से मैरी को फाँसी दे दी गई। सन् 1559 में रानी एलिजाबेथ ने अध्यादेश जारी कर प्रोटेस्टेन्ट धर्म को राजधर्म घोषित किया। हेनरी अष्टम के बाद से धर्म को लेकर इंग्लैंड में सत्रहवीं सदी तक मार-काट होती रही। इन नरसंहारों में असंख्य लोग मारे गए। प्रतिद्वन्द्वी धर्मावलम्बियों को गुलाम बनाया गया (जिनमें औरतें भी शामिल थीं) और उन्हें वर्जीनिया, पेनसिलवानिया आदि उपनिवेशों में जबर्दस्ती ले जाकर बेचा गया। आयरलैंड के लोगों पर इसलिए जुल्म ढाया गया कि वे कैथोलिक थे।

सन् 1521 में चार्ल्स पंचम ने विधर्मियों के लिए मृत्यु-दंड के साथ-साथ उनकी सम्पत्ति को जब्त करने का आदेश जारी किया। ईसाई ऑर्थोडोक्स में दीक्षित होने से जो मना करता, उन्हें जिन्दा जला देने, फाँसी देने, उनकी जीभ खींचने एवं मोड़ने की सजा का रिवाज बहुत आम था। इंग्लैंड द्वारा प्रोटेस्टेन्ट धर्म अंगीकार किए जाने के बाद सुध ाारवादी जॉन क़ाल्विन (1509-64) के अनुयायियों को गर्म सलाखों से दागा गया, उनके अंग-भंग किए गए। स्कॉटलैंड में अपराधियों की तरह उन्हें धर-पकड़ कर उनके कानों को जड़ से उखाड़ दिया जाता था। उनकी उँगलियों को औजारों से मरोड़कर भीषण पीड़ा दी जाती थी। कैथोलिकों पर तरह-तरह के अत्याचार कर उन्हें फाँसी दे दी जाती थी। अनाबाप्तिस्तों तथा एरियनों को जिन्दा जला दिया जाता था। लेकिन जब गैर ईसाई धर्मावलम्बियों का सवाल आता था तो कैथोलिक, प्रोटेस्टेन्ट, ऑर्थोडोक्स सब एक हो जाते थे। इंग्लैंड में यहूदियों पर घोर अत्याचार किए गए। स्पेन में मुसलमानों को जिन्दा जलाया गया। ईसाईयों एवं यहूदियों अथवा ईसाईयों एवं विधर्मियों के बीच हुए विवाहों को मान्यता नहीं दी जाती थी और विवाहितों पर विद्रोह के आरोप में कड़े जुर्माने की सजा दी जाती थी। ईसाईयत में रंग-भेद भी कम नहीं रहा। कोई नीग्रो ईसाई होने के बावजूद श्वेत ईसाई स्त्री से विवाह करे तो हाल तक उसे जिन्दा जला दिया जाता था।

सन्त पॉल के अनुयायियों ने पॉलिशियन सम्प्रदाय की स्थापना की। ग्रीक चर्च और बाइजैन्ताइन न्यायालय के आदेश से दो सौ वर्षों तक पॉलिशियन सम्प्रदाय के अनुयायियों को दंडित किया जाता रहा। मैनअल की माँ थिओडोरा द्वितीय के आदेश से एक लाख पॉलिशियनों को मौत के घाट उतारा गया। अन्ततः इन्हें अस्तित्व रक्षा के लिए बुल्गारिया में जाकर शरण लेनी पड़ी।

मनी (Mani, 216-76) ने स्वयं को पैगम्बर घोषित करते हुए एक अलग धार्मिक सम्प्रदाय चलाया। उस सम्प्रदाय के लोग ईसाई धर्माधिकारियों के अत्याचारपूर्ण आदेशों के शिकार होते थे।

स्पेन, फ्रांस, इटली आदि देशों में कैथोलिकों ने प्रोटेस्टेन्टों पर जुल्म किए, लेकिन इंग्लैंड में प्रोटेस्टेन्टों ने कैथोलिकों और सुधारवादियों पर अत्याचार किए।

चार्ल्स प्रथम ने (1600-49) अपने आपको ईश्वर का प्रतिनिधि घोषित कर इंग्लैंड पर राज किया और सन् 1629 से 1640 तक पार्लियामेंट ही भंग कर दी। उसने प्यूरिटन और स्कॉट सुधारवादियों को यातनाएँ दीं जिसके फलस्वरूप इंग्लैंड गृहयुद्ध में फँस गया। पार्लियामेंट के प्यूरिटन नेता ओलीवर

क्रॉमवेल के नेतृत्व में राजा के विरूद्ध चले गृहयुद्ध में अन्ततः चार्ल्स प्रथम की हार हुई और सन् 1649 में बतौर सजा उसका शिरोच्छेद किया गया। इसके बाद से राजसत्ता के स्थान पर संसद महत्त्वपूर्ण हो गई और धार्मिक कट्टरता में कमी आई।

इधर स्पेन में राजा फर्डिनेन्ड पंचम (1452–1516) ने सन् 1481 में विधर्मियों का विनाश करने के लिए धार्मिक न्यायालयों की स्थापना (The Inquisition) की। उसके शासनकाल में मुसलमानों, यहूदियों, नास्तिकों और ईसाई धर्म सुधारकों (प्रोटेस्टेन्ट आदि) के विरूद्ध क्रूसेड छेड़ा गया। उनकी सम्पत्ति जब्त की गई, लूटी गई। उन्हें यातनाएँ दी गईं और देशनिकाला दिया गया।

उत्तर अफ्रीका में मूर जाति के लोगों ने, जो मुसलमान हो गए थे, आठवीं सदी में स्पेन पर कब्जा कर लिया था। उन्होंने स्पेन में पहली खिलाफत और इस्लामी राज्य की स्थापना की। फर्डिनेन्ड ने मूरों की सफाई का अभियान चलाया और सन् 1492 में मूरों के अंतिम गढ़ ग्रानाडा पर अधिकार कर लिया। इस प्रकार एक पूरी–की–पूरी जाति धर्म के नाम पर स्पेन से निष्कासित कर दी गई। स्पेन में विधर्मियों के विरूद्ध सदियों अभियान चला। सन् 1600 से 1670 के बीच वहाँ 31,912 लोगों को विधर्मी होने के आरोप में जिन्दा जलाया गया। स्पेन के अलावा स्पेन के उपनिवेशों में भी विधर्मियों के विरूद्ध उत्पीड़न, हत्याओं का सिलसिला चलता रहा।

सन् 1816 में पैपल बुल (Papal Bul) अर्थात पोप द्वारा धार्मिक अदालतों पर रोक लगा विधर्मियों को जिन्दा जलाने और उन पर हो रहे अत्याचार को समाप्त किया गया। तब तक स्पेन और उसके उपनिवेशों में रह रहे लाखों गैर कैथोलिक अमानुषिक अत्याचारों का शिकार हुए और मारे गए।

'हुस' सम्प्रदाय के प्रवर्तक जॉन हुस के मृत्यु–दंड के बावजूद उसके अनुयायियों की संख्या बढ़ती गई। जर्मनी के बोहेमिया और मोरविया क्षेत्र में ये एक बड़ी शक्ति के रूप में उभर गए थे। ये धार्मिक स्वतन्त्रता, सामाजिक समानता के पक्षधर थे और पादरियों को मिली सुख-सुविधाओं और उनकी निरंकुश सत्ता के जबर्दस्त विरोधी थे। चर्च के अधिन अपार सम्पदा को ईसा के अनुयायियों में बाँटने की माँग करते थे। खेती की जमीन से वंचित गरीब किसान बड़ी संख्या में इनसे प्रभावित हो रहे थे। इनके आह्वान पर किसानों ने चर्चां को तोड़ा, जलाया, पादरियों की हत्या की और चर्च की सम्पत्ति पर जबरन अधिकार कर लिया। बोहेमिया की राजगद्दी के उत्तराधिकार को लेकर हुए युद्ध में हुसपन्थियों ने चर्च से टक्कर ली। युद्ध में प्राग शहर का आधा भाग विनष्ट हो गया।

जर्मनी के ही मार्टिन लूथर (1483–1546), जो पादरी बने और बाद में एक भूतपूर्व नन से विवाह किया था, ने इसी के आसपास पोप, पादरियों के विरूद्ध बिगुल छेड़ा हुआ था। उनके अनुसार ईश्वर और उनके अनुयायियों के बीच केवल बाइबिल है और लोग केवल ईश्वर के प्रति उत्तरदायी हैं। चर्च में फैले अनाचार, भ्रष्टाचार का विरोध करते हुए वह कहता था कि चर्च–पादरियों की कोई आवश्यकता नहीं। दक्षिण और मध्य जर्मनी में चर्च और सामन्तों के विरूद्ध हुए किसानी विद्रोह के पीछे उसकी भी प्रेरणा थी। इस विद्रोह के दौरान हुई हिंसा की उसने निन्दा की और अन्तिम दिनों में वह लगभग निष्क्रिय, सम्भवतः हताश हो गया था। उसके द्वारा बोए गए बीज फूलने–फलने लगे जिसके परिणामस्वरूप प्रोटेस्टेन्ट सम्प्रदाय का उदय हुआ।

रोमन कैथोलिक चर्च एवं अन्य दूसरे चर्चों की निरंकुशता, उनके सामन्तों से जुड़कर आम जनता का शोषण और उत्पीड़न करने के विरूद्ध

धर्म सुधारकों और नास्तिकों ने अपनी जान जोखिम में डालकर एक से बढ़कर एक अमानुषिक अत्याचार और उत्पीड़न को बर्दाश्त किया, मृत्यु-दंड को स्वीकार किया। उनका यह बलिदान व्यर्थ नहीं गया। धर्मशासित मध्ययुग के अन्धकार में इनके विचार और बलिदान रोशनी का काम करते रहे। धर्म द्वारा फैलाई गई अन्धास्था और अज्ञान के विरूद्ध विवेकशील चिन्तन के विकास में ये निरन्तर संलग्न रहे जिसकी परिणति नवजागरण में हुई। इटली से आरम्भ हुए नवजागरण से यूरोप में मध्ययुग का अन्त होता है और आधुनिक काल के स्वर्णिम इतिहास की नींव पड़ती है। पन्द्रहवीं सदी से उद्‌भट विद्वान, बुद्धिजीवी, कलाकार, चिन्तक, लेखक, साहित्यकार, दार्शनिक, अर्थशास्त्री एवं वैज्ञानिकों ने धार्मिक रूढ़ियों, अन्धास्थाओं के विरूद्ध चोट करनी शुरू की। रेनेसाँ अर्थात नवजागरण की यह प्रक्रिया सत्रहवीं सदी तक चली। यहीं से विवेकशील वैज्ञानिक, मानवीय मूल्य-परक चिन्तन जोर पकड़ने लगा। सन् 1455 में मुद्रण के आविष्कार ने नवजागरण के विचारों के प्रचार-प्रसार में अहम भूमिका निभाई। नवजागरण के प्रर्वतक केवल धार्मिक क्षेत्र में ही क्रान्तिकारी परिवर्तन तक सीमित नहीं रहे थे, बल्कि उनकी एक बड़ी संख्या ईश्वर और धर्म के अस्तित्व को नकार मानवतावाद के विकास पर जोर देती थी। वैज्ञानिक आविष्कारों का आरम्भ इसी दौर से होता है। इसके पहले तक विश्वविद्यालयों, शिक्षण संस्थाओं पर पोप-पादरियों का कब्जा होता था, जहाँ ज्ञान के नाम पर अज्ञान फैलाया जाता था, जिससे संकीर्ण मनोवृत्ति और धार्मिक कट्टरता को प्रश्रय मिलता था।

नवजागरण के संस्थापकों में सुप्रसिद्ध चित्रकार, इंजीनियर और चिन्तक लिओ नार्दो दा विन्सी, कलाकार माइकल एन्जेलो (1475-1564), कलाकार ड्यूरर (1471-1528), इरास्मुस (1466-1536) आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। नवजागरण के विवेकपूर्ण विज्ञानपरक चिन्तन को ठोस रूप देने, उसे जनता के बीच पहुँचा जनचेतना जाग्रत करने में इटली के दार्शनिक ग्यारदानों (1528-1600) का नाम अग्रिम पंक्ति में आता है जिसे स्वतन्त्र विचारों के लिए सन् 1593 में वेनिस की जेल में डाल दिया गया और अन्ततः सन् 1600 में जिन्दा जला दिया गया। वह कॉपरनिकस (1473-1543) के खगोल विज्ञान के सिद्धान्तों और नास्तिक विचारों का समर्थक था। पोलैंड के खगोलशात्री कॉपरनिकस ने तब तक प्रचलित धारणा का खंडन करते हुए कहा था कि पृथ्वी नहीं, सूर्य ब्रह्माण्ड के बीच में है। इटली के गणितज्ञ खगोलशात्री और चिकित्सा विज्ञानी गैलीलियो (1564-1642) ने जब कहा कि पृथ्वी सूर्य के चारों ओर घूमती है तो पोप के आदेश से उसे इस धर्म-विरोधी विचार के लिए नजरबन्द कर दिया गया और उसे बार-बार यह उच्चारित करते रहने के लिए कहा गया-'पृथ्वी नहीं, सूर्य घूमता है।' गैलीलियो, हर बार जोर से पोप के आदेश का उच्चारण कर साथ ही धीरे से यह कहा करता था-'घूमती तो पृथ्वी है।' गैलीलियो की मृत्यु के चार सौ वर्षों बाद सन् 1992 में पोप पाल ने अपने पूर्वज द्वारा की गई गलती का प्रायश्चित्त करते हुए गैलीलियो को दोषमुक्त किया।

यह सही है कि आधुनिक काल में ईसाई धर्म का स्वरूप लचीला है और पहले की तरह सख्त और कट्टर नहीं है। लेकिन इसका श्रेय ईसाईयत को नहीं है, बल्कि विवेकशील स्वतन्त्र चिन्तकों को है जो नवजागरण काल से लेकर आज तक ईसाई धर्म के जड़ परम्परागत विश्वासों का खंडन-मंडन करते हुए उसके क्रूर, अमानवीय, अवैज्ञानिक स्वरूप को उजागर करते रहे हैं। ईसाई धर्म को बुद्धिसंगत और उदार कहने वाले आधुनिक ईसाई अक्सर इस

बात को नजरअन्दाज कर देते हैं कि वे लोग, जिन्होंने ईसाईयत को आधुनिक और उदार बनाया है, अपने समय में ऑर्थोडोक्स ईसाईयों के द्वारा घोर यातनाओं एवं उत्पीड़न का शिकार हुए थे। उन्हें जिन्दा जलाया गया, समाज से बहिष्कृत किया गया, जेलों में बन्द कर तरह-तरह की यातनाएँ दी गईं। डेढ़ सौ वर्ष पहले तक धर्म और ईश्वर के प्रति अविश्वास एवं प्रश्न करना अर्थात संशयवादी होना एक घृणित एवं जघन्य अपराध था। मजे की बात यह है कि धार्मिक अन्धविश्वासों, कुरीतियों एवं धार्मिक कट्टरता के विरूद्ध आवाज उठाने के अपराध में जिन स्वतन्त्र चिन्तकों को मौत की सजाएँ एवं यातनाएँ दी गईं और जिनके विचारों एवं सुधारों का कड़ा प्रतिरोध किया गया, कालान्तर में उन्हीं के विचारों-सुधारों के प्रभाव से ईसाई धर्म के कट्टर स्वरूप में परिवर्तन आया। तर्कसम्मत विवेकपूर्ण उदार विचारों को बहुत हद तक उसने स्वीकार किया। अब तो स्थिति यह है कि आज डेनमार्क में जनमत के दबाव में चर्च को समलैंगिक विवाहों तक की अनुमति देनी पड़ी। हालाँकि कैथोलिक चर्च का रूख आज भी अनुदार है, लेकिन उसके पहले के और आज के स्वरूप में भारी अन्तर स्पष्ट दिखाई देता है।

अनगिनत विचारकों, दार्शनिकों, लेखकों, कवियों, कलाकारों और वैज्ञानिकों के अनवरत प्रयासों एवं बलिदानों का फल है कि आज दुनिया का बड़ा हिस्सा धर्म द्वारा थोपे गए शारीरिक-मानसिक यन्त्रणा और धार्मिक युद्धों से मुक्त हो पाया है।

★★ धर्म के नाम पर पुस्तक से साभार

सहरानीय कदम

साथी श्री कृष्ण गर्ग चीका (कुरूक्षेत्र) द्वारा अपने पिता जी की स्मृति में 50 पत्रिकाऐं निःशुल्क बांटकर एक सहरानीय कदम उठाया है। जिसकी सोसायटी प्रशंसा करती है एवं अन्य साथियों से अपील करती हैं कि वे भी ऐसे कदमों का अनुसरण करें ।

आस्तिक नास्तिक संवाद

डॉ. रणजीत , मो. 9019303518

''किस अभागे को अरे इस धूप मे दफ़ना रहे हो
और इसकी मौत पर क्यों खुशी से चिल्ला रहे हो
कौन है ऐसा बिचारा, दो बता ?''
''मर गया ईश्वर, नहीं तुमको पता ?''
''मर गया ईश्वर ?
ईश्वर की जिसने स्वयं अपने हाथ से धरती बसायी
चांद औ' सूरज बनाये
पर्वत के, झीलों के, सागर औ' द्वीपों के नक्श उभारे
ऊँचे-ऊँचे गिरि-शिखरों पर बर्फ जमायी
औ' उनकी लंबी छाँहों में
नदियों के डोरों से सी कर
वन, उपवन, ऊसर, परती की भूरी-हरी थिगलियों वाले
कंथे से मैदान बिछाये-
ईश्वर कि जिसने आदमी पैदा किया
क्या वही अब मर गया ?
''हां मर गया ईश्वर कि उसके त्रास सारे मर गये
सृष्टि के आरम्भ से चलते हुए
आदमी के खून पर पर पलते हुए
अन्याय के इतिहास सारे मर गये!
''मर गया ईश्वर कि उसके धर्म सारे मर गये
स्वर्ग-नरक के, पाप-पुण्य के
पुनर्जनम औ' कर्मवाद के मर्म सारे मर गये!
''मर गया ईश्वर, विषमता का सहायक मर गया
आदमी के हाथ में ही आदमी का भाग्य देकर
विश्व का दैवी विधायक मर गया
मर गया ईश्वर!''
''यह हुआ कैसे मगर ?''
''साइंस की किरणों ने मारा, मर गया
वहम का पर्दा उघाड़ा, मर गया
आदमी ने जब तलक पूजा अंधेरे में उसे, जिन्दा रहा
रोशनी के सामने ज्यों ही पुकारा मर गया!''
''खैर, अच्छा था बिचारा, मर गया!''

★★

प्रो. सी.एन.आर. राव

—— शशांक द्विवेदी

विलक्षण प्रतिभा के धनी

भारत सरकार के प्रख्यात वैज्ञानिक और प्रधान मंत्री की वैज्ञानिक सलाहाकार परिषद् के प्रमुख प्रोफेसर सी.एन.आर.राव को देश का सर्वोच्य नागरिक सम्मान भारत रत्न दिया गया है। .एन.आर.राव सोलिड स्टेट ओर मेटीरियल केमिस्ट्री के क्षेत्र में अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त वैज्ञानिक हैं। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उनके 1400 शोध-पत्र और 45 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी है। दुनिया भर के तमाम प्रमुख वैज्ञानिक शोध संस्थानों में राव के योगदानों को महत्वपूर्ण बताते हुए उन्हें-2 अपने संस्थान की सदस्यता के साथ ही फैलोशिप भी प्रदान की है। उन्हें कई राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार भी मिल चुके हैं।

ग्लैमर और रोमांच को सनसनी खेज तरीके से प्रस्तुत करने वाले मीडिया ने जहां सचिन तेदुलकर को भारत रतन मिलने पर जबरदस्त उछाला गया, वहीं मानवता हित में समर्पित वैज्ञानिक सी.एन.आर. राव मात्र खबर बनकर रह गए, जबकि उसका योगदान आने वाली पीढ़ियों में मील का पत्थर है। प्रोफेसर चिंतामणि नागेश रामचंद्र राव (79) यानी सी.एन. आर.राव ने शोध क्षेत्र में बेहद उंचाई हासिल की है। राव पहले भारतीय हैं जो शोध कार्य के क्षेत्र में सौ एच.इंडेक्स में पहुंचे हैं। राव ने इस साल अप्रैल में 100 के एच-एंडेक्स (शोधकर्ता की वैज्ञानिक उत्पादकता एवं प्रभाव का वर्णन करने का जरिया) तक पहुंचने वाले पहले भारतीय होने का गौरव हासिल किया। राव की इस उपलब्धि से पता चलता है कि उनके प्रकाशित शोध कार्यों का दायरा कितना व्यापक है। राव एच-इंडेक्स किसी वैज्ञानिक के प्रकाशित शोध पत्रों की सर्वाधिक संख्या है जिनमें से कम से कम प्रत्येक का कई बार संदर्भ के रूप में उल्लेख किया गया हो। राव की इस उपलब्धि का मतलब समझाते हुए कुछ वैज्ञानिक कहते हैं कि उन्होंने जो मुकाम हासिल किया दरअसल वह सचिन के 100 शतकों की उपलब्धि से भी उंचा है।

परमाणु शक्ति संपन्न होने ओर अंतरिक्ष में उपस्थिति दर्ज करा चुकने के बावजूद विज्ञान के क्षेत्र में हम अन्य देशों की तुलना में काफी पीछे हैं।

वैज्ञानिकों-इंजिनियरों की संख्या के अनुसार भारत का विश्व में तीसरा स्थान है, लेकिन वैज्ञानिक साहित्य में पश्चिमी वैज्ञानिकों का बोलबाला है। ऐसे समय में प्रोफेसर राव ने पश्चिम के एकाधिकार को तोड़ते हुए शोध पत्रों के प्रकाशन के साथ-साथ शोध और अनुसंधान के क्षेत्र में भारत का नाम रोशन किया। उनकी सफलता असाधारण है।

प्रोफेसर राव का जन्म 30 जून 1934 को बेंगलूरू में हुआ था। 1951 में मैसूर विश्वविद्यालय से स्नातक करने के बाद उन्हें बीएचयू से मास्टर डिग्री हासिल की। अमरीकी पोडरू यूनिवर्सिटी से पीएचडी की डिग्री हासिल

की। 1963 में आई.आई.टी. कानपुर के रसायन विभाग से फैकल्टी के रूप में जुड़कर कैरियर की शुरूआत की। 1984-1994 के बीच इंडियन इंस्टीट्यमट ऑफ साइंस के निर्देशक रहे। ऑक्सफोर्ड, कैब्रिज समेत अनेक विश्वविद्यालयों में विजिटिंग प्रोफेसर रहे है। डा. राव इंटरनेशनल सेंटर ऑफ मैटिरियल साइंस के निदेशक भी रहे। रसायन शास्त्र की गहरी जानकारी रखने वाले राव फिलहाल बेंग्लूरू स्थित जवाहरलाल नेहरू सेंटर फॉर एडवास्ट साइंटिफिक रिसर्च में कार्यरत है। डॉ. राव न सिर्फ बेहतरीन रसायनशात्री है बल्कि उन्होंने देश की वैज्ञानिक नीतियों को बनाने में भी अहम् भूमिका निभाई है।

राव के एक वैज्ञानिक के रूप में पांच दशकों के कैरियर में 1400 से अधिक शोध पत्र प्रकाशित हो चुके हैं। दुनिया भर की प्रमुख वैज्ञानिक संस्थाएं, रसायन शास्त्र के क्षेत्र में उनकी मेधा का लोहा मानती हैं। वे उन चुनिंदा वैज्ञानिकों में एक हैं जो दुनिया के सभी प्रमुख वैज्ञानिक अकादमी के सदस्य हैं। सीवी रमन, पूर्व राष्ट्रपति एपीजे अब्दूल कलाम के बाद राव इस सर्वोच्च सम्मान पाने वाले तीसरे भारतीय वैज्ञानिक हैं। राव को दुनिया के 60 विश्वविद्यालयों से डॉक्रेट की मानद उपाधि मिल चुकी है और भारतीय वैज्ञानिक समुदाय में वह एक आइकॉन की तरह देखे जाते हैं। किसी वैज्ञानिक के मूल्यांकन के लिए सिर्फ उसका एच-इंडेक्स की काफी नही है बल्कि उसके कितने शोध पत्रों को दृष्टांत के रूप में उल्लेख किया गया है वह भी बहुत मायने रखता है। इस मामले में भी प्रोफेसर राव दुनिया के कुछ चुनिंदा वैज्ञानिकों में ऐसे एक मात्र भारतीय हैं जिनके शोध पत्र का दृष्टांत के तौर पर वैज्ञानिकों ने लगभग 50 हजार बार उल्लेख किया है।

प्रोफेसर राव ठोस अवस्था, संरचनात्मक और मैटीरियल रसायन के क्षेत्र में दुनिया के जाने-माने रसायन शास्त्री हैं। भारत सरकार ने उन्हें 1974 में पद्मश्री और 1985 में पद्मविभूषण से सम्मानित किया था। वर्ष 2000 में रॉयल सोसायटी ने उन्हें ह्युज़ेज पुरस्कार से सम्मानित किया और वर्ष 2004 में भारतीय विज्ञान पुरस्कार पाने वाले पहले भारतीय बने। भारत-चीन विज्ञान सहयोग को बढ़ावा देने में अहम् भूमिका निभाने के लिए उन्हें जनवरी 2013 में चीन के सर्वश्रेष्ठ विज्ञान पुरस्कार से सम्मानित किया गया। प्रोफेसर राव ने ट्रांजीशन मेटल ऑक्साइड सीएमआर मैटीरियल, सुपरकंडक्टिविटी, हाइब्रिड मैटीरियल, नैनोट्यूब और ग्रीफीन समेत नैनोमैटीरियल और हाइब्रिड मेटीरियल के क्षेत्र में काफी शोध और अनुसंधान कार्य किये। प्रोफेसर राव सॉलिड स्टेट और मैटीरियल केमिस्ट्री में अपनी विशेषता की वजह से जाने जाते हैं। उन्होंने पदार्थ के गुणों ओर उनकी आणविक संरचना के बीच बुनियादी समझ विकसित करने में अहम् भूमिका निभाई है।

भारत को अंतरिक्ष विज्ञान में आकाश की अनंत बुलंदी पर पहुंचाने वाले मंगल अभियान में भी उन्होंने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। विज्ञान के क्षेत्र में भारत की नीतियों को गढ़ने में अहम् भूमिका निभाने वाले राव, प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की वैज्ञानिक सलाहाकर परिषद् के सदस्य भी थे। इसके बाद वे प्रधानमंत्री राजीव गांधी, एचडी देवेगोडा, और आई के गुजराल के कार्यकाल में भी परिषद् से दुडे

रहे। राव की मेधा और लगन का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि उनके साथ काम करने वाले अधिकतर वैज्ञानिक सेवानिवृत हो चुके है। लेकिन वे 79 साल की उम्र में भी सक्रिय हैं और प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह की वैज्ञानिक सलाहकार परिषद् में अध्यक्ष के तौर पर अपनी सेवाएं देते रहे हैं।

दुनिया में अब वैज्ञानिक और तकनीकी ज्ञान आर्थिक स्त्रोत के उपकरण बन गए हैं। किसी भी देश के वैज्ञानिक और तकनीकी क्षमता उसकी आर्थिक प्रगति का पैमाना बन चुकी है। दुनिया के ज्यादातर विकसित देश वैज्ञानिक शोध को बढ़ावा देने के लिए अपने रिसर्च फंड का 30 प्रतिशत तक विश्वविद्यालयों को देते हैं, मगर अपने देश मे यह प्रतिशत सिर्फ छह हैं। उस पर ज्यादातर विश्वविद्यालयों के अंदरूनी हालत ऐसे हो गए हैं कि यहां शोध के लिए स्पेस काफी कम रह गया है। वैज्ञानिक शोध पत्रों के प्रकाशन में भी भारत की स्थिति बहुत अच्छी नहीं हैं इसको सुधारने के लिए सरकार को तुरन्त ध्यान देना होगा। देश में प्रोफेसर सीएनआर राव जैसे कई वैज्ञानिक पैदा करने लिए शोध के लिए नया माहौल और समुचित फंड देने की जरूरत हैं।

कुल मिलाकर विज्ञान के क्षेत्र में प्रोफेसर सी.एन.आर.राव का योगदान अभूतपूर्व है और उनको देश का सर्वोच्च सम्मान भारत रत्न देने के फैसले से देश में वैज्ञानिक शोध और अनुसंधान को प्रोत्साहन भी मिलेगा। इससे देश में वैज्ञानिक चेतना का माहौल बनाने में भी मदद मिलेगी।

★★- साभार : विज्ञान चेतना प्रसार पत्रिका

तेज चलें, वजन घटेगा

तेज कदमों से चलना बढ़ते वजन को नियंत्रित रखने का एक जरिया हो सकता है। अधिक मोटे या साठ की उम्र पार कर चुके लोगों को अक्सर व्यायाम करने में दिक्कत होती है। ऐसे लोगों को रोजाना 30 से 45 मिनट तेज कदमों से चलना चाहिए। ऐसा करने से शरीर में जमा अतिरिक्त फैट और कैलोरी बर्न होकर ऊर्जा में तब्दील हो जाती है। इसके अलावा व्यक्ति पूरा दिन एक्टिव महसूस करता है। दिल की सेहत के लिए भी पैदल चलना बेहतर है। पैदल चलने से कॉरनेरी हार्ट डिजीज, ऑस्टियोपोरोसिस, ब्रेस्ट कैंसर, डायबिटीज टाइप 2 होने की सम्भावना भी कम हो जाती है। इसके अलावा शूगर नियंत्रित रखने के लिए नियमित वॉक अवश्य करनी चाहिए। रोजाना पैदल चलने से व्यक्ति मैंटली एक्टिव रहता है। जो लोग व्यायाम नहीं कर सकते, उन्हे अपने हार्मोन, ब्लड प्रेशर आदि को नियंत्रित रखने के लिए पैदल वॉक करनी चाहिए। ★★

सूक्ति

''मैं मृत्यु से क्यों डरूं? जब मैं हूं तो मृत्यु नहीं, जब मृत्यु है तो मैं नहीं। मैं उस चीज से क्यों डरूं जिसका उस समय अस्तित्व ही नहीं जब मेरा अस्तित्व है।''

एपिक्यूरियस (341-270 ई.पू.)

बलजीत भारती

अच्छे दिन आने वाले हैं!

बहुत दिनों से सुन रहे हैं कि अच्छे दिन आने वाले हैं। हमें भी उन अच्छे दिनों का इंतजार है। हम भी चाहते हैं कि वाकई में अच्छे दिन आएं और ये दुनिया आदमी के रहने लायक स्थान हा जाए। लेकिन क्या वास्तव में ही अच्छे दिन आने वाले हैं या फिर देश के लोग किसी भ्रमजाल का शिकार हैं। सभ्यता के शुरूआत से ही लोग अपने-2 तरीके से मानव जीवन को खुशहाल बनाने में लगे हुए हैं। बहुत से लोगों ने इसी सपने की खातिर अपने जीवन का बलिदान भी किया है। लेकिन भ्रष्टाचार से लबालब इस राजनैतिक व्यवस्था से अच्छे दिनों की उम्मीद रखना बिल्कुल बेमानी है। अभी हाल ही में सत्ता में बैठे चेहरे बदले हैं। इन नए हाकिमों ने सत्ता पाने के लिए जो सपने लोगों को दिखाए, उनका पूरा होना किसी कल्पना के साकार होने जैसा है। क्या वे लोग वास्तव में ही अच्छे दिन लाना चाहते हैं? कहीं उनका 'अच्छे दिन' लाने का अर्थ कुछ और तो नहीं है। चुनावों के दौरान वर्तमान सत्ताधारी पार्टी से जुड़े नेताओं की बयानबाजी सुनकर तो मुझे संदेह होता है कि बुरे दिन आने वाले हैं। मैं दो प्रमुख नेताओं के बयानों को यहां उल्लिखित करना चाहता हूं। बिहार बी.जे.पी के प्रमुख नेता गिरिराज किशोर का बयान-''जो मोदी का समर्थन नहीं करेंगे, वे पाकिस्तान परस्त हैं।'' विश्व हिन्दू परिषद् के प्रमुख नेता प्रवीण तोगड़िया का बयान-''मुस्लिम जब घरों में निकले,, उनके ऊपर थूको, टमाटर फेंकों, उन्हें घेर लो। ऐसे में वे परेशान होकर घर छोड़कर भाग जाएंगे। फिर उनके घरों पर कब्जा कर लो।'' ये बयान सत्ता में आने से पहले के हैं। अब ये लोग सत्ता में आ गए हैं, तो क्या-2 करेंगे, इसकी कल्पना की जा सकती है। इन बयानों को पढ़कर तो लगता है कि इनका एजेन्डा कुछ और है। इस पार्टी की सरकार पहले भी सत्ता में रह चुकी है। उन 'अच्छे दिनों को हम भूले नहीं है। जब पड़ोसी देशों के साथ हमारे सम्बन्ध सबसे निम्न स्तर पर थे। मंहगाई तब भी चरम पर थी। बड़े-2 सरकारी विभागों को धड़ाधड बेचा जा रहा था। इन विभागों को बेचने के लिए एक 'विनिवेश मंत्रालय' विशेष तौर से बनाया गया है। कर्मचारियों की पेंशन का निजीकरण करने की पहल उसी सरकार में हुई थी। इससे भी बढ़कर जो बात इनके शासनकाल में हुई थी, और जिसकी पूर्ति करना असंभव है, वह था राम-मन्दिर और हिन्दुत्व के नाम पर उन्माद फैलाकर दंगे फैलाना और एक धर्म विशेष के लोगों के प्रति नफरत का जहर फैलाकर अपनी राजनैतिक रोटियां सेकना। अब अच्छे दिन लाने के नाम पर एक बार फिर वे आपके सामने आए हैं। धीरे-2 इनके ऊपर से भेड़ ही खाल उतरती जाएगी और अन्दर से भेड़िया निकलेगा। ऐसे में प्रत्येक जागरूक देशवासी का फर्ज बन जाता है कि वह सावधान रहते हुए लोगों का उचित मार्गदर्शन करे। रही बात अच्छे दिनों की तो -

हमको मालूम है जन्नत को हकीकत लेकिन
दिल के बहलाने को गालिब ये ख्याल अच्छा है।

★★

लेखकों/पाठकों के लिए

1. रचना की मूल प्रति ही भेजें, फोटो प्रति स्वीकार्य नहीं होगी।
2. अस्वीकृत रचना की वापसी हेतू पांच रूपये का डाक टिकट लगाकर लिफाफा संलग्न करें।
3. रचना बायीं तरफ हाशिया छोड़कर अशुद्धियों रहित साफ-साफ लिखी या टाईप होनी चाहिए।
4. रचना सोसायटी के उद्देश्यों के अनुरूप होनी चाहिए।
5. पत्रिका में छपी रचनाओं पर प्रतिक्रिया साधारण पोस्ट कार्ड से भी भेजी जा सकती है।
6. लेख, कहानी, कविता, अपनी राय e-mail:tarksheeleditor@gmail.com आदि पर भेजी जा सकती हैं। mail भेजते समय SG-4 Hindi Fonts का ही उपयोग करें।
7. पत्र व्यवहार करते समय लिफाफे पर पूरे पैसों के टिकट लगाकर ही प्रेषित करें। बैरंग पत्र हो जाने की स्थिति में स्वीकार नहीं किया जाएगा।
8. अनुवादित रचना के साथ मूल लेखक का अनापत्ति पत्र भी संलग्न करें।
9. पत्रिका में छपी किसी भी रचना पर लेखक को मानदेय का प्रावधान नहीं है क्योंकि यह पत्रिका पूर्णतः अव्यवसायिक/अवैतनिक संपादक एवं संपादक मंडल द्वारा अन्धविश्वासों, पाखण्डों, रूढ़ियों के विरूद्ध जागृति लाने हेतु जनहित में प्रकाशित की जाती है।

तर्कशील केन्द्र हरियाणा को सहयोग:

1. आत्मा सिंह, अम्बाला द्वारा अपनी सुपुत्री गुरविन्द्र कौर के 12वीं कक्षा में 93: अंक लेने पर तर्कशील केन्द्र हरियाणा के निर्माण हेतु 15000/– रूपये का सहयोग भेजा।
2. रूपिन्द्र कौर पत्नी आत्मा सिंह द्वारा हरियाणा शिक्षा विभाग में लैक्चरार लगने पर तर्कशील केन्द्र हरियाणा को 5000/– रूपये का सहयोग भेजा।
3. अनुपम सिंह, अम्बाला द्वारा अपने दिवंगत पुत्र रोबिन सिंह के जन्मदिवस 27 जून, 2014 की स्मृति में तर्कशील केन्द्र हरियाणा के लिए 10,000/– रूपये का सहयोग भेजा।

रैशनलिस्ट सोसायटी हरियाणा सहयोग भेजने वाले सभी साथियों का धन्यवाद करती है एवं अन्य साथियों से भी अपील करती है कि वह भी तर्कशील केन्द्र निर्माण हेतु बढ़चढ़ कर सहयोग दें।

हरियाणवी रागिनी

अंध विश्वास मिटाणे होंगे

सरपंच बणते ही बाहण मेरी, न्यू बतलावण लागी।
के–के करणे काम गाम के, सब काम गिणावण लागी।

बीर हीणी मर्द ठाडा, बदलैं ये गलत रिवाज भाई,
बदहाली के कारण के सैं, समझांगे हम आज भाई,
दारू बाज–नसेड़ी बढ़गे, ईब करणा पड़ै ईलाज भाई,
बहणां भी करैं तरक्की, तब हो पंचायती राज भाई,
अंधविश्वास मिटाणे होंगे, फेर न्यू समझावण लागी।

अपणे गाम म्हां रहण ना देणा, घूंघट का अभिशाप मनै,
हर फैसला हो सरे–आम, दिखाणा सबको इंसाफ मनै,
दारू पी कोई गालां म्हां डोल्या, नहीं करणा माफमनै,
हर घर म्हां शौचालय होगा, या बात बता द्यूं खास तनै,
अनपढ़ कोई रहण ना देणा, वा दिल तै चाहवण लागी।

पक्की नाली और खडंजे, सब के सब बणवाऊँगी,
सरकार गेल्यां लड़–झगड़ कै, बड़ा स्कूल कराऊँगी,
दूध–घणा हो सोहणे डांगर, घर–घर म्हां बंधवाऊँगी,
सब मर्द मेरी करैं बड़ाई, इसे कार कै काम दिखाऊँगी,
बीर–मर्द सब नै प्यार तै, वा गेल मिलावण लागी।

भ्रष्टाचार रहण नी देणा, एक मकसद नया ठ्याग्या,
ईब उठैंगी बाहणां सारी, आज बख्त हाथ म्हां आग्या,
आवै सूत पंचायती राज, तरक्की का पैगाम ल्याया,
'रामेश्वर' भी खुशी मनावै, ईक गीत नया बणाग्या,
होग्या गात सुखाला हम, होश म्हां आवण लागी।

रामेश्वर दास 'गुप्त', 94162-20513

Reg. No. HARHIN05683/07/1/2013-TC

जुलाई 2014

तर्कशील साहित्य वाहन का सफर

रोपड़ में तर्कशील साहित्य वाहन के आगमन पर उपस्थित तर्कशील मित्रगण

मुक्तसर (पंजाब) के रैड क्रास भवन से तर्कशील साहित्य वाहन को ग्रामीण क्षेत्रों के लिए रवाना करते साहित्यकार, कलाकार एवं तर्कशील कार्यकर्ता

स्कूली बच्चों के बीच विज्ञान की रोशनी बिखेरता तर्कशील साहित्य वाहन

If undelivered please return to :

Tarksheel

**Tarksheel Bhawan, Tarksheel Chowk,
Sanghera Bye Pass, BARNALA-148101
Post Box No. 55**

Ph. 01679-241466, Cell. 98769 53561
Web : www.tarksheel.org
e-mail : tarkshiloffice@gmail.com

BOOK POST
(Printed Matter)

To ....

....

....

आर. पी. गांधी प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी, संपादक मकान न. 50, लक्ष्मी नगर, जिला यमुना नगर - 135001 (हरियाणा) द्वारा रमणीक प्रिंटर्ज, नजदीक लक्ष्मी सिनेमा, जिला यमुनानगर -135001 (हरियाणा) से मुद्रित करके तर्कशील सोसायटी पंजाब व हरियाणा के माध्यम से वितरण हेतु जारी किया।